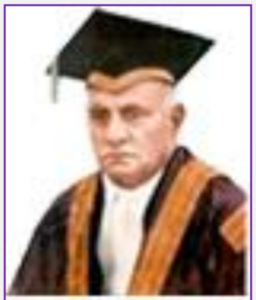
Dr. Harisingh Gour

न्यूज़लेटर

फरवरी 2024

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (मध्यप्रदेश)

(केंद्रीय विश्वविद्यालय)

संरक्षक

प्रो. नीलिमा गुप्ता

कुलपति

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय,

सागर (म.प्र.)

सहयोग एवं परामर्श

डॉ. सत्यप्रकाश उपाध्याय

कुलसचिव (प्र.)

संपादक

डॉ. विवेक जायसवाल

जनसंपर्क अधिकारी (प्र.)

संपादक सदस्य

डॉ. हेमंत पाटीदार

डॉ. आशुतोष

डॉ. शालिनी चोइथरानी

डॉ. संजय शर्मा

माधव चंद्रा

मध्य क्षेत्र अंतर विश्वविद्यालय युवा उत्सव में डॉ हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय ने जीते 9 पुरस्कार

स्वामी विवेकानंद सुभारति विश्वविद्यालय मेरठ में दिनांक 30 जनवरी से 3 फरवरी तक आयोजित हुए युवा उत्सव पुरस्कार... रंगमंच की विधा प्रहसंन में प्रथम, फॉक आर्केस्ट्रा में प्रथम, रंगोली में प्रथम, शोभा यात्रा में प्रथम,

लोकनृत्य में द्वतीय, सुगम गायन द्वतीय, वाद्य वादन में तीसरा, इंस्टालेशन में तीसरा, शास्त्रीय गायन में चतुर्थ, पेंटिंग में चतुर्थ पुरस्कार प्राप्त किया. इसके अतिरिक्त ओवर आल ट्राफी भी प्रदान की गई. विजयी दल के सभी प्रतिभागी राष्ट्रीय युवा उत्सव पंजाब एग्रीकल्चर लुधियाना में सहभागिता करेंगे. जो कि 28 मार्च से होगा. इस अवसर पर विश्वविद्यालय कि कुलपति प्रो नीलिमा गुप्ता ने सभी को बधाई दी.साथ ही डीएसडब्लू के प्रो. ए. डी. शर्मा ने बधाई दी. सांस्कृतिक परिषद के समन्वयक डॉ राकेश सोनी ने बताया कि उक्त दल में संजय कोरी, यश गोपाल, गगन राज, स्तुति, खम्परिया, अर्पित दुबे, अनँया साहू, अमिता, प्रांजलि, ललित नागर, पंकज खरारे, अनुज यादव, अनुराग, अपर्णा, ओम बट्ट, छात्र के अतिरिक्त अन्य छात्र भी सम्मिलित थे. दल प्रबंधक के रूप में डॉ अवधेश तोमर, स्तुति खम्परिया रहे.

सेंट्रल जोन के सभी विश्वविद्यालय कर सकेंगे शोध इंफ्रास्ट्रक्चर का उपयोग- प्रो. नीलिमा गुप्ता

विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता के प्रस्ताव पर यूजीसी अध्यक्ष ने की सेंट्रल जोन शोध संसाधन पोर्टल शुरू किए जाने की घोषणा

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग तथा विक्रम विश्वविद्यालय उज्जैन द्वारा एनईपी 2020 के क्रियान्वयन पर एकदिवसीय कार्यशाला आयोजित की गई जिसका उद्घाटन मध्यप्रदेश के माननीय राज्यपाल श्री मंगूभाई पटेल ने किया. इस अवसर पर

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के अध्यक्ष प्रो. एम. जगदीश कुमार की भी विशिष्ट उपस्थिति रही। कार्यशाला में सेन्ट्रल जोन (मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, उत्तर प्रदेश तथा उत्तराखंड) से लगभग 400 कुलपतियों तथा एनईपी समन्वयकों ने सहभागिता की.

कुल दस सत्रों में आयोजित इस कार्यशाला में बहुआनुशासनिक एवं समग्र शिक्षा, डिजिटल सशक्तीकरण एवं ऑनलाइन शिक्षा, कौशल विकास एवं रोजगार, शोध, नवाचार एवं उद्यमिता, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए शिक्षकों का क्षमता निर्माण, गवर्नेंस एवं स्वायत्तता, प्रत्यायन एवं उत्कृष्टता, न्याय संगत एवं सर्वसमावेशी शिक्षा, भारतीय ज्ञान पद्धति एवं भारतीय भाषाएं, शिक्षा का अंतर्राष्ट्रीयकरण जैसे विषयों पर मंथन हुआ और इनको दृष्टिगत रखते हुए एनईपी 2020 के क्रियान्वयन पर बल दिया गया.

इस कार्यशाला में डॉ. हरीसिंह गौर केन्द्रीय विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता के साथ प्रो. ए. डी. शर्मा, प्रो. नवीन कानगो तथा प्रो. अनिल जैन ने विश्वविद्यालय का प्रतिनिधित्व किया। कार्यशाला के चौथे सत्र शोध, नवाचार एवं उद्यमिता की अध्यक्षता विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने की जिसमें में सभी चार प्रदेशों के कुलपतियों ने सहभागिता करते हुए एनईपी 2020 में प्रदत्त प्रावधानों के आधार पर विश्वविद्यालयों में बेहतर शोध की दशा-दिशा पर गहन चिन्तन किया. प्रो. नीलिमा गुप्ता ने यह रेखांकित किया कि प्रायः सभी विश्वविद्यालयों में शोध हेतु मूलभूत सविधायें तथा उपकरणों का अभाव होता है. उन्होंने यह प्रस्ताव दिया कि प्रत्येक विश्वविद्यालय अपने पास उपलब्ध सुविधाओं को यदि एक-दूसरे विश्वविद्यालयों से साझा करें तो सभी विश्वविद्यालयों को इसका लाभ मिलेगा और सभी के लिए सुविधाजनक होगा. उनके इस प्रस्ताव पर विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के अध्यक्ष प्रो. जगदीश कुमार ने तुरन्त इस प्रस्ताव की प्रशंसा करते हुए एक सेंट्रल जोन केन्द्रीय शोध मूलभूत सुविधा केन्द्र स्थापना करने की घोषणा की जिसमें चारों प्रदेशों के शोधकर्ताओं के लिए एक ही पोर्टल पर सभी विश्वविद्यालय अपनी मूलभूत सविधाओं का विवरण देते हुए सम्पर्क व्यक्ति तथा सम्पर्क विवरण की सम्पूर्ण जानकारी उपलब्ध कराएंगे. इस माध्यम से चारों प्रदेशों के विश्वविद्यालय लाभान्वित हो सकेंगे. डॉ. हरीसिंह गौर विश्वद्यिालय द्वारा की गई इस पहल तथा विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के अध्यक्ष प्रो. जगदीश कुमार द्वारा सेन्ट्रल जोन शोध

पोर्टल की स्थापना करने की घोषणा पर सभी कुलपतियों ने हर्ष व्यक्त करते हुए आशा व्यक्त की कि इस नई पहल से सभी विश्वविद्यालय गुणवत्तापूर्ण शोध करके भारत में शोध को एक नई दिशा देने में सफल होंगे.

उन्होंने कहा कि बहुविषयी शोध को बढ़ावा देना चाहिए तथा उद्योगों तथा अन्य विश्वविद्यालयों के साथ सहयोग स्थापित करके शोध को एक नई दिशा देनी चाहिए. सरकार द्वारा बनायी गई योजनाओं की भी सफलतापूर्वक क्रियान्वयन करना चाहिए तथा अपने विश्वविद्यालय में शोध के लिए संसाधन सृजन पर भी जोर देना चाहिए. उन्होंने आगे यह भी कहा कि कौशल विकास पर शोध करके हम आत्मनिर्भर भारत की ओर अग्रसर होंगे. हर स्तर पर शोध को पुरस्कृत करने से शोध का बढ़ावा मिलेगा तथा प्रत्येक विश्वविद्यालय द्वारा किये गये उत्कृष्ट शोध को बेस्ट प्रैक्टिस के रूप में प्रदर्शित किया जाना चाहिए ताकि अन्य विश्वविद्यालय भी उसका लाभ ले सकें.

उन्होंने कहा कि शोध को बढ़ावा देने के लिए प्रत्येक विश्वविद्यालय को शोध प्रकोष्ठ की स्थापना करनी चाहिए जो विश्वविद्यालय के सभी शोध क्रिया-कलापों को एक नयी राह दिखा सकें। साथ ही उन्होंने शिक्षकों को शोध हेतु उचित प्रशिक्षण देने पर भी जोर दिया. इस वर्ष शिक्षा हेतु भारत सरकार द्वारा की गई शिक्षा निधि में वृद्धि पर सभी ने प्रसन्नता जाहिर की और इस बात पर भी जोर दिया गया कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में चिन्हित नेशनल रिसर्च फाउंडेशन शीघ्र ही पूर्ण रूप से स्थापित होकर देश में शोध को बढ़ावा देगा जिससे सभी विश्वविद्यालय इससे लाभान्वित होंगें.

उक्त सत्र संचालन पर सभी कुलपतियों ने सराहना करते हुए आशा व्यक्त की कि इस सत्र में लिए गये निर्णयों के आलोक में भारतीय शोध विश्व स्तर पर ख्याति अर्जित करेंगे और नया कीर्तिमान बनाएंगे। समापन सत्र में प्रो. नीलिमा गुप्ता ने विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के अध्यक्ष, प्रो. जगदीश कुमार तथा विक्रम विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. ए. के. पाण्डेय को कार्यशाला के सफल आयोजन हेतु बधाई दी.

प्रो. ए. के. कपूर का मानव विज्ञान के क्षेत्र में अतुलनीय योगदान: प्रो.शर्मा

प्रो. कपूर के निधन पर मानव विज्ञान विभाग में श्रद्धांजलि सभा का हुआ आयोजन

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय , सागर के मानव विज्ञान विभागसे जुड़े शिक्षाविद् प्रसिद्ध मानव वैज्ञानी प्रो. अनूप कुमार कपूर जो दिनांक 4 जनवरी 2024 दिल्ली में असमायिक दु:खद निधन हो गया है. विभाग में श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया. विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. के. के. एन. शर्मा, वि.वि. फेकल्टी अफेयर्स के निदशक प्रो. अजीत जायसवाल ने प्रो कपूर के चित्र पर माल्यर्पण करके प्रारंभ की. प्रो. के. के. एन. शर्मा ने सभा को संबोधित करते हुए बताया कि प्रो. कपूर 20 जनवरी 1954 में दिल्ली के प्रतिष्ठित कपूर परिवार में जन्में जिनकी प्राथमिक, माध्यमिक, इंटर एवं उच्च शिक्षा दिल्ली से हुई. वर्ष 1973 में बी.एस.सी., वर्ष 1975 में एम.एस.सी. मानव विज्ञान विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय से गोल्ड मेडलिस्ट उत्तीर्ण हुए.

वर्ष 1981 में पीएच.डी. की उपाधि से विभूषित हुए. प्रो. कपूर का पीएच.डी. जेनेटिक वेरीविलटी एमंग जौहरी एवं रंग बोटिया समुदाय पिथोरागढ़(उ. प्र.) विषय पर शोध कार्य किया वह वर्ष 1983 में दिल्ली विश्वविद्यालय में सहायक प्राध्यापक

पद पर नियुक्ति हुई. वर्ष 1981 में रीडर प्रवाचक (रीडर) डायरेक्ट रिक्रूमेंट में नियुक्त हुए वर्ष 1997 में प्रोफेसर भी डायरेक्ट नियुक्त हुए. वर्ष 2007 से 2009 तक मध्यप्रदेश शासन द्वारा जीवाजी राव विश्वविद्यालय के कुलपति बनाऐ गए. वह मानव विज्ञान विभाग दिल्ली विश्वविद्यालय के विभागाध्यक्ष रहे. वर्ष 20 जनवरी 2019 में वह सेवा से निवृत हुए. प्रो. कपूर ने अपने शैक्षणिक कार्यो के साथ-साथ शोध के क्षेत्र में राष्ट्रीय अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर कीर्तिमान किए. इन्होंने 12 पुस्तक, 238 से अधिक शोध पत्र, 25 पीएच.डी. शोधार्थियों का मार्गदर्शन करते अवार्ड करायी है. वह इंडियन साइंस कांग्रेस के अध्यक्ष भी रहे. प्रो. कपूर के शैक्षणिक शोध कार्य तथा अकादमिक कार्यो में दृष्टिगत उन्हें विभिन्न अवार्डो से सम्मानित किया गया है. जिनमें प्रमुख है लाइफ टाइम अचीवमेंट, एजुकेशन अचीवमेंट अवार्ड, मैन ऑफ द ईयर अवार्ड, विद्यारत्न अवार्ड, डा. पंचानन मेमोरियल अवार्ड है. वह अनेक संस्थाओं एवं विभिन्न विश्वविद्यालयों में गर्वनिंग वाडी ऑन सिलेक्शन एक्सपर्ट में रहकर मार्गदर्शन, यूजीसी आई.सी.एस.ए.आर. आदि प्रोजेक्ट शामिल है. फेकल्टी अफेयर्स निदेशक प्रो. अजीत जायसवाल ने कहा कि मैं उनका ही विद्यार्थी हूं उन्होंने शैक्षणिक एवं शोध कार्यो में सैकड़ो शिक्षाविद् में प्रोफेसर, आई.ए.एस., आई.पी.एस. डायरेक्टर है जो कि गौरव की बात है. उनके द्वारा भारत का सबसे बड़ा शैक्षणिक प्रोजेक्ट सक्सेसफुली कंपलीट किया जो पहले कई एंथ्रोप्लाजिस्ट नही करपाऐ थे. (पीजी ई पाठशाला मिनिस्ट्री ऑफ एजुकेशन) है.

प्रो. कपूर अपने पीछे भरा पूरा परिवार छोड़कर गऐ. उनकी एक पुत्री आई.आई.टी. मुम्बई में पुत्र भी असिसटेंट प्रोफेसर है. यह गर्व की बात है इनके विद्यार्थी अनेक विश्वविद्यालय में प्रोफेसर, आई.ए.एस., आई.पी.एस. डायरेक्टर है जो कि गौरव की बात है. प्रो.कपूर जी के न रहने से हमारा विभागीय परिवार बहुत दुखी है. शिक्षा जगत में बेहद बड़ी क्षति हुई है. जिसकी भारपाई किया जाना बमुश्किल है. डॉ. अरिबम विजयासुंदरी देवी (असिस्टेंट प्रोफेसर) ने शोक संवेदना व्यक्त करते हुए कहा कि प्रो. कपूर ने अंतिम समय तक बेड पर रहते हुए भी शैक्षणिक ऑनलाइन कार्य संपादित किए वह एक समर्पित कर्मठी शिक्षक थे. उनकी यादे हम भुला नहीं पाऐगें हमारे

विभाग के विद्यार्थी उनके द्वारा प्रकाशित शोध कार्य का अध्ययन करके नई दिशा देंगे. विभाग के उपस्थित शिक्षको, शोधार्थियो, विद्यार्थियों एवं कर्मचारियों ने पुष्प अर्पित करके श्रद्धांजलि व्यक्त की. अंत में विभागाध्यक्ष प्रो. के.के.एन.शर्मा ने शोक सन्देश का वाचन किया. दो मिनिट का मौन धारण करके परम पिता परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को अपने श्री चरणों में स्थान देवे. शोक संतप्त परिवार को गहन दुख सहन करने की शक्ति देवे. दो मिनिट का मौन धारण करके प्रार्थना कर इस अवसर प्रमुख रूप से श्रद्धांजलि व्यक्त की. प्रमुख रूप से शोक संवेदना प्रकट करने वालो में प्रो. ए. एन. शर्मा, प्रो. कल्पना सैनी, प्रो. देवाशीष बोस, प्रो. संतोष शुक्ला, प्रो. आर. पी. मिश्रा, प्रो. राजेश कुमार गौतम, डॉ सर्वेन्द्र यादव, डॉ. सोनिया कौशल, शोधार्थी निकिता दास, काव्या पॉल, योगेश गौतम, सुनंदा साहू, सुमन साहू, बसंत सेन, तनुश्री, अभिषेक पटेल, भगवानदास रजक, दिव्यांश चौहान, संतोष रैकवार सहित अनेक विद्यार्थी उपस्थित थे.

राष्ट्रीय युवा उत्सव में सहभागिता करेंगे संगीत विभाग के युवा संगीतज्ञ

कुलपति ने विद्यार्थियों को दी बधाई एवं शुभकामनाएं

राष्ट्रीय युवा उत्सव पंजाब एग्रीकल्चर लुधियाना में प्रतिभागिता करने के लिए मध्य क्षेत्र अन्तर विश्वविद्यालय युवा उत्सव में चयनित डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों को कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने शुभकामनाएं एवं आशीर्वाद प्रदान

किया. विश्वविद्यालय को विवेकानंद सुभारती यूनिवर्सिटी मेरठ मे दिनांक 30 जन से 03 फर तक आयोजित युवा उत्सव में 09 पुरस्कार प्राप्त हुये, जिसमें प्रमुखता से संगीत विभाग एवं ललित एवं प्रदर्शनकारी कला विभाग के छात्र छात्राओं ने विभिन्न विधाओं में पदक प्राप्त किए. जिसके अंतर्गत फोक ऑर्केस्ट्रा मे प्रथम, सुगम गायन में द्वितीय स्थान स्तुति खंपरिया ने प्राप्त हुआ. एकल वाद्य वादन नॉन परक्यूशन बांसुरी में पंकज खरारे तृतीय स्थान पर रहे. शास्त्रीय गायन में चतुर्थ स्थान रहा.

डॉ अवधेश प्रताप सिंह तोमर एवं डॉ. राहुल स्वर्णकार के मार्गदर्शन से शोध छात्र यश गोपाल श्रीवास्तव एवं गगन राज ने संगीत की विभिन्न विद्याओं का समन्वय किया. दल प्रभारी सांस्कृतिक एवं अकादमिक गतिविधि प्रकोष्ठ के समन्वयक डॉ. तोमर ने बताया कि सांगीतिक विधाओं में वि. वि. को द्वितीय पुरस्कार प्राप्त हुआ. इसी के साथ उन्होंने बताया की विजयी दल के सभी प्रतिभागी राष्ट्रीय युवा उत्सव पंजाब एग्रीकल्चर लुधियाना मे सहभागिता करेंगे. इस अवसर पर कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने सभी को मिष्ठान के साथ बधाई दी एवं आगामी राष्ट्रीय प्रतियोगिता के लिए शुभकामनाएं दीं. छात्र कल्याण अधिष्ठाता प्रो. ए. डी. शर्मा ने बधाई दी. सांस्कृतिक समन्वयक डॉ. राकेश सोनी जी ने बताया कि संगीत विभाग के विद्यार्थियों में संजय कोरी, अतुल पथरोल, मैकलिन सिंह, रिद्धि जैन, यश पाठक ,विधान चौबे, गोलू कुशवाह, हिमांश खरारे,

अनुराग यादव, नीतेश यादव, ओम भट्ट रहे. संगीत विभाग अध्यक्ष प्रो. अशोक अहिरवार ने विद्यार्थियों को बधाई देते हुए आगामी राष्ट्रीय युवा उत्सव में सम्मिलित होने हेतु प्रोत्साहित किया.

विश्वविद्यालय: रसायनशास्त्र के शोधार्थी दीपक को मिली पी.एच.डी (Ph.D.) की उपाधि

बम्हौरी मानगढ़, तहसील जबेरा, जिला दमोह, निवासी श्री दीपक पिता श्री दशरथ पाटकर एवं माता श्रीमति रजनी पाटकर ने रसायन विभाग, डॉ. हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय, (केंद्रीय विश्वविद्यालय), सागर, (म.प्र.) से पी.एच.डी की डिग्री (उपाधि) प्राप्त

की. श्री दीपक ने "मिश्रित आणविक समूहों पर क्वांटम रासायनिक अध्ययन: हाइड्रोजन बंध और सहकार्यिता का मात्रात्मक मूल्यांकन" विषय पर शोध (रिसर्च) कार्य, पर्यवेक्षक डॉ. मिलिंद एम. देशमुख (सहायक प्राध्यापक) के मार्गदर्शन में पूर्ण किया. श्री दीपक ने इस विश्वविद्यालय से 2017 में स्नातक, 2019 में स्नातकोत्तर, और 2024 में Ph.D. डिग्री (उपाधि) प्राप्त की. इन्होंने अपने शोध कार्य को अंतरराष्ट्रीय जर्नल्स जैसे कि अमेरिकन केमिकल सोसायटी (ACS), रॉयल सोसायटी ऑफ केमिस्ट्री (RSC), केमिस्ट्री-यूरोप (वाइली), कुल:7 में प्रकाशित किया. इस अवसर पर विभागाध्यक्ष, पर्यवेक्षक, शिक्षकगण, परिजन, सहपाठियों एवं मित्रों ने बधाइयाँ दी.

विवि: संगीत विभाग में मनाई गई वसंत पंचमी

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के संगीत विभाग में आज वसंत पंचमी के अवसर पर सरस्वती पूजन एवं सांगीतिक कार्यक्रम का आयोजन विद्यार्थियों ने किया. डॉ. अवधेश प्रताप सिंह तोमर एवं डॉ राहुल स्वर्णकार के मार्गदर्शन से शोध छात्र आकाश जैन, गगन राज, स्तुति खंपरिया एवं तेजस पटेल ने सरस्वती पूजन एवं गायन-वाद्य वादन का कार्यक्रम आयोजित किया.

सरस्वती राग में सरस्वती वंदना के साथ राग हिंडोल का गायन डॉ. तोमर ने कराया. कु. स्तुति ने राग हंसध्वनि का गायन किया संगति श्री शैलेंद्र राजपूत ने की. बी. ए. एवं एम. ए. के छात्र छात्राओं ने अपनी अपनी प्रस्तुति दी एवं नियमित अभ्यास भी सामूहिक रूप से किया. बसंत के आगमन पर राग बसंत एवं बहार जैसे रागों के गायन का विशेष महत्व है.

हरित पारंपरिक उद्योगों की प्रगति सतत आर्थिक विकास द्वारा ही संभव है - प्रो. नविता नथानी

वाणिज्य विभाग, डॉक्टर हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर में चल रही त्रिदिवसीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन के द्वितीय दिवस में मुख्य अतिथि के रूप में प्रो. जसराज बोहरा, पूर्व अध्यक्ष, आई. ए. ए. तथा प्रो. प्रदिप्त बनर्जी, पश्चिम बंगाल को आमंत्रित किया गया तथा मुख्य अतिथि के रूप में प्रो. नविता नथानी का स्वागत किया गया जिन्होंने सतत विकास में सतत वित्त पर अपने विचार प्रस्तुत किया तथा बताया कि इसके माध्यम से ही देश में छोटे उद्योगों की प्रगति संभव है साथ ही सतत वित्त के विभिन्न स्रोतों पर प्रकाश डाला.

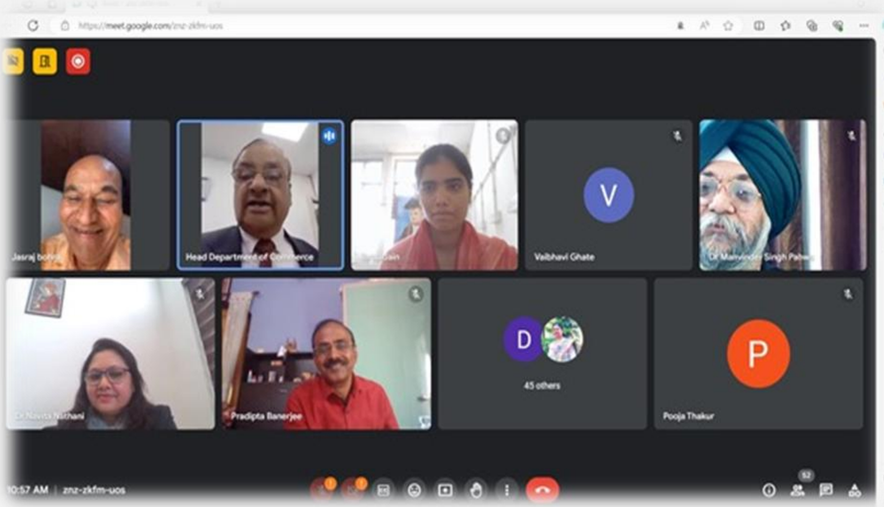

इसके पश्चात तकनीकी सत्र का संचालन किया गया जिसमें तृतीय सत्र की अध्यक्षता प्रो. जसराज बोहरा तथा सह अध्यक्षता प्रो. प्रदिप्त बनर्जी द्वारा किया गया तथा चौथे सत्र की अध्यक्षता प्रो. अरिंदम गुप्ता, पूर्व कोषाध्यक्ष, आई. ए. ए. द्वारा किया गया। आज के सत्र में देश के विभिन्न राज्यों के शिक्षाविद, शोधार्थी एवं विद्यार्थियों द्वारा 40 से अधिक शोध पत्र पढ़े गए. प्रो. जे. के. जैन द्वारा बताया गया कि सतत विकास के लिए हरित क्रांति और सतत् वित्त पोषण की आवश्यकता है तथा प्रोफेसर पाहवा ने सत्र के दौरान कहां की छात्रों का सुखद भविष्य उनके वित्तीय ज्ञान एवं आधुनिक विनियोग नीति द्वारा ही संभव है.

वित्तीय घोटालों पर गहन शोध की आवश्यकता: प्रो कनीज़ फातिमा

वाणिज्य विभाग, डॉक्टर हरि सिंह गौर विश्वविद्यालय सागर तथा भारतीय लेखांकन परिषद, सागर शाखा के संयुक्त तत्वाधान में आयोजित त्रिदिवसीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन का आज शुभारंभ हुआ. कार्यक्रम के उद्घाटन सत्र में माननीय कुलपति प्रो.

नीलिमा गुप्ता द्वारा नामित विश्वविद्यालय के वरिष्ठ प्राध्यापक पी. के. कटहल द्वारा अध्यक्षता की गई. कार्यक्रम के मुख्य अतिथि आई. ए. ए. के पूर्व अध्यक्ष एवं देश के प्रख्यात लेखांकन शिक्षाविद प्रो. जी. सोरल तथा विशिष्ट अतिथि वर्तमान अध्यक्ष वी. अप्पाराव रहे. अपने वाणिज्य विभाग द्वारा आयोजित इस अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन की सराहना करते

हुए कहा कि विभाग हमेशा से ही छात्रों को नवीन गतिविधियों से शिक्षित करता रहा है.

कार्यक्रम के उद्घाटन सत्र में मुख्य वक्ता के रूप में निजवा विश्वविद्यालय ओमान की सह प्राध्यापक डॉ. कनीज फातिमा को आमंत्रित किया गया जिन्होंने वित्तीय घोटालो से होने वाली हानियां तथा बचाव के उपाय उपाय पर अपना विशिष्ट शोध पत्र प्रस्तुत किया. कार्यक्रम के निर्देशक प्रो. जे. के. जैन द्वारा सभी मुख्य अतिथियों एवं सहभागियों का स्वागत किया गया तथा उद्घाटन सत्र का समापन प्रो. मनविंदर सिंह पाहवा द्वारा धन्यवाद ज्ञापित करके किया गया.

सम्मेलन में आज दो तकनीकी सत्रों का आयोजन किया गया जिसमें देश भर के विभिन्न शिक्षाविदों, शोधार्थियों तथा विद्यार्थियों द्वारा भिन्न-भिन्न विषयों पर करीब 40 शोध पत्र पढ़े गए जिसमें प्रथम तकनीकी सत्र की अध्यक्षता प्रो. आशीष माथुर, केंद्रीय विश्वविद्यालय हरियाणा द्वारा किया गया तथा दूसरे सत्र की अध्यक्षता प्रो. के. एस. ठाकुर, माननीय कुलपति, गोविंद गुरु जनजाति विश्वविद्यालय बांसवाड़ा, राजस्थान द्वारा किया गया.

सम्मेलन की कार्यकारिणी द्वारा श्रेष्ठ शोधार्थियों के प्रोत्साहन के लिए विभाग के पूर्व शिक्षकों के नाम से निम्न पुरूस्कार देने की घोषणा की गयी :- प्रोफेसर अमर नारायण अग्रवाल विभाग संस्थापक श्रेष्ट शोध पत्र पुरूस्कार, प्रोफेसर हरिशचंद्र सैनी (वित्त में) श्रेष्ट शोध पत्र पुरूस्कार, प्रोफेसर रमेश कुमार भारती (लेखांकन में) श्रेष्ट शोध पत्र पुरूस्कार, प्रोफेसर प्रफुल कुमार सेठ (कराधान में) श्रेष्ट शोध पत्र पुरूस्कार, प्रोफेसर बिमल कुमार जैन स्मृति (मानव संसाधन तथा विपणन में) श्रेष्ट शोध पत्र पुरूस्कार.

कार्यक्रम का संचालन विभाग के शोधार्थी हर्षित जैन, भव्यता जैन, एवं पूजा साहू द्वारा डॉक्टर रूपाली सैनी, सहायक प्राध्यापक, वाणिज्य विभाग के मार्गदर्शन में किया गया.

संसदीय लोकतंत्र के प्रतिमानों को भारत में स्थापित मूल्यों को आधार बनाया जाए : प्रो. सर्वेश्वर उपाध्याय

यह विचार डॉ. हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर के राजनीति विज्ञान के विभागाध्यक्ष प्रो. सर्वेश्वर उपाध्याय ने डॉ. हरसिंह गौर विश्वविद्यालय के राजनीति विज्ञान एवं लोक प्रशासन विभाग द्वारा आयोजित 'एलुमिनी (पूर्व-छात्र) व्याख्यानमाला' में

व्यक्त किये. उन्होंने इस अवसर पर कहा कि संसदीय व्यवस्था में प्रश्नकाल सबसे महत्वपूर्ण होता है. यह सरकार को उत्तरदायित्व का बोध कराता है. जिन प्रतिमानों को संसदीय लोकतंत्र में अपनाने का संविधान निर्माताओं ने संकल्प लिया था, उन्हें पूर्ण करने के लिए भारतीय लोकतंत्र को मूल्यों पर आधारित परम्पराओं को विकसित करना होगा. प्रो. उपाध्याय ने भारत में संसदीय लोकतंत्र विषय पर अपने इस कार्यक्रम में अपने विचार व्यक्त किये.

कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि एलुमनी (पूर्व-छात्र) के सचिव प्रो. जी. एल. पुणताम्बेकर ने कहा कि राजनीति विज्ञान विषय वर्तमान में सर्वाधिक महत्वपूर्ण विषय है. यह लोक जागरण का विषय है. उन्होंने कहा कि लोक और सरकार प्रबंधन में नेतृत्व

की महत्वपूर्ण भूमिका होती है. यदि आपको पता हो कि आपके पीछे कौन खड़ा है तो आप युद्ध जीत सकते है, और यदि आपको पता हो कि आपके आगे कौन खड़ा है तो आप दुनिया जीत सकते है. भारत में वर्तमान संसदीय लोकतंत्र एक श्रेष्ठ नेतृत्व दे रहा है.

कार्यक्रम की संयोजिका एवं विभागाध्यक्ष प्रो. अनुपमा कौशिक ने इस अवसर पर कहा कि छात्र–छात्राओं विभाग के पूर्व छात्र-छात्राओं से जिन्होंने जीवन में विभिन्न क्षेत्रों में सफलता पायी है इस कार्यक्रम के माध्यम से उनसे विभाग में अध्ययनरत छात्र-छात्राएं प्रेरित हो सके. इस उद्द्येश्य से विभाग में एलुमिनी (पूर्व-छात्र) व्याख्यानमाला आयोजित की जाती है. उसी श्रृंखला के अंतर्गत आज का आयोजन किया गया है. उन्होंने लोकतंत्र पर अपने विचार प्रकट करते हुए संसदीय प्रजातंत्र को उत्तरदायित्व बोध का सर्वश्रेष्ट प्रणाली कहा.

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए प्रो. दिवाकर सिंह राजपूत ने कहा कि आज पूरा विश्व भारत की तरफ विश्वास से देख रहा है. भारत में ज्ञान ही सबसे महवपूर्ण है. यह छात्र-छात्राओं में समझ व संसदीय परंपरा की जीवन शैली विकसित करता है. उन्होंने छात्र-छात्राओं को प्रेरित करते हुए कहा कि छात्र-छात्राओं को पाठ्यक्रम के साथ साथ विश्वविद्यालय कि अन्य अकादमिक व सांस्कृतिक गातिविधियों में शामिल होने चाहिए.

इस कार्यक्रम का संचालन निधि सिंह एवं आभार प्रदर्शन डॉ. रणवीर सिंह ने किया. मुख्य वक्ता का परिचय डॉ. दीपक मोदी ने दिया. इस अवसर पर प्रो. अनुपम शर्मा, प्रो. नागेश दुबे, डॉ. नेहा निरंजन, डॉ. अफरीन खान, डॉ. सत्यनारायण देवलिया, डॉ. शिवकुमार परोचे, समीर पांडे, विवेक प्रसाद, दामिनी सिंह, प्रियंका यादव, विनायक मिश्रा, हिमांशु त्रिपाठी और विशाल तिवारी और स्नातकोत्तर एवं स्नातक के छात्र-छात्राएं सम्मिलित हुए. कार्यक्रम के शुभारंभ माँ सरस्वती एवं डॉ. गौर के चित्र पर मालार्पण व अतिथियों के स्वागत के साथ प्रारंभ हुआ.

सरकार ने GST के माध्यम से शासकीय आय को बढ़ाया है तथा व्यक्तीगत भार को घटाया है : प्रो. धर (वाणिज्य विभाग द्वारा आयोजित त्रिदिवसीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन के दो अकादमिक सत्र)

वाणिज्य विभाग, डॉक्टर हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय तथा भारतीय लेखांकन परिषद, सागर शाखा के तत्वाधान में आयोजित त्रिदिवसीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन के तीसरे दिन में पांचवें एवं छठवें तकनीकी सत्र का आयोजन किया गया जिसमें जीएसटी में नए आयाम से संबंधित 30 से अधिक शोध पत्र पढ़े गए. पाँचवें तकनीकी सत्र के अध्यक्ष प्रो. संजय भयानी, मुख्य सचिव, आई.ए .ए. (राजकोट) तथा मुख्य वक्ता के रूप में CA प्रो. सत्यजीत धर (कोलकाता) का स्वागत किया गया. प्रो. धर ने अपना वक्तव्य जीएसटी के नए आयाम तथा इससे संबंधित अवसरों एवं चुनौतियों पर दिया जिसमें आपने बताया कि सरकार द्वारा लागू "एक भारत, एक कर" की पहल विकास के नए अवसर उपलब्ध करा रही है तथा लोगों से कर संबंधित व्यग्रता दूर करने का कार्य कर रही है. उन्होंने आगे कहा कि सरकार ने GST के माध्यम से शासकीय आय को बढ़ाया है तथा व्यक्तीगत भार को घटाया है. छठवें तकनीकी सत्र की अध्यक्षता प्रो. अनिल कुमार, दिल्ली विश्वविद्यालय, द्वारा किया गया. सत्र के दौरान प्रो. अनिल कुमार ने कहा कि कराधान पर शोध के लिए व्यवहारिक समस्याओं पर विषयों के चयन से यह सत्र अत्यधिक महत्वपूर्ण हो गया है.

आज तकनीकी सत्र के पश्चात "लेखांकन पर शोध" विषय पर पैनल चर्चा का आयोजन किया गया जिसमें देश के प्रसिद्ध शिक्षाविदों प्रो. के. आर. शर्मा (उदयपुर) ने कहा की लेखांकन के क्षेत्र मे शोध अभिकल्प को नीव के पत्थर के रूप मे जाना जाता है। प्रो. एन. एम. खंडेलवाल (गुजरात), ने बताया कि लेखांकन शोध के क्षेत्र में प्रकाशन की नीतियों पर गठित समिति के दिशा निर्देशों का पालन आवश्कता हैं. प्रो. के. ए गोयल (जोधपुर) ने अपनी बात को आगे बढ़ाते हुए कहा कि आधुनिक तकनीकी युग में शोध की महत्ता तकनीकी के उपयोग के साथ ही बढ़ रही है। यह चर्चा लेखांकन शोधार्थियों के लिए मील का पत्थर साबित हुई तथा नए-नए आयाम से अवगत कराई.

त्रिदिवसीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन के समापन कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में प्रो. जी. सोरल को आमंत्रित किया गया जिनका स्वागत प्रो. मनविंदर सिंह पाहवा द्वारा किया गया. प्रो. सोरल ने सम्मेलन की अभूतपूर्व सफलता पर अपनी शुभकामनाएं व्यक्त किया तथा विभाग और प्रतिभागियों के उज्जवल भविष्य के लिए अपना शुभाशीष दिया. समापन कार्यक्रम में डॉ. रूपाली सैनि ने सभी अतिथि विद्वान का स्वागत किया. डॉ सुषमा यादव ने सम्पूर्ण कार्यक्रम का प्रतिवेदन प्रस्तुत किया. प्रोफेसर जे.के जैन द्वारा सभी सत्रों में पढ़े गए शोध पत्रों में से पाँच उत्कृष्ट शोध पत्र अवार्ड घोषित किए गये। कार्यक्रम के समापन पर विभागाध्यक्ष एवं सम्मेलन निदेशक एवं सह निदेशक प्रोफेसर मनवींदर सिंह द्वारा माँ सरस्वती के चरणों में नमन करते हुए तथा पवित्र महामना डॉ. हरि सिंह गौर का स्मरण करते हुए देश विदेश से जुड़े सभी प्रतिभागी एवं विद्वानों को धन्यवाद दे कर सम्मेलन को सतत जारी रखने की घोषणा की. उन्होंने कहा कि वाणिज्य विभाग हमेशा छात्रों, शोधार्थियों एवं शिक्षाविदों के ज्ञानवर्धन के लिए इसी प्रकार के कार्यक्रम आयोजित करता रहेगा जिससे सभी लाभांवित होते रहेंगे. संपूर्ण कार्यक्रम का आयोजन माननीय कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता जी के संरक्षण में संपन्न हुआ. कार्यक्रम के तकनीकी प्रबंध में विभाग के शोधार्थी सारांश श्रीवास्तव का महत्व पूर्ण योगदान रहा.

एकेडमिक बैंक ऑफ क्रेडिट क्रियान्वयन में डॉ. गौर विश्वविद्यालय 96.2 प्रतिशत डाटा अपलोडिंग के साथ देश भर में अग्रणी

केन्द्रीय शिक्षा मंत्री डॉ. धर्मेन्द्र प्रधान ने किया कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता को सम्मानित

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर विद्यार्थियों के अकादमिक रिकॉर्ड को डिजिटली उपलब्ध कराने में देश का अग्रणी संस्थान बन गया है. इसके लिए नई दिल्ली के होटल चाणक्य में आयोजित एक राष्ट्रीय कार्यक्रम में केन्द्रीय शिक्षा मंत्री डॉ. धर्मेन्द्र प्रधान ने विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता को सम्मानित किया। गौरतलब है कि शिक्षा मंत्रालय द्वारा 'वन

स्टूडेंट-वन आईडी'-अपार आईडी लांच किया गया है जिसके तहत 25 करोड़ विद्यार्थियों के अकादमिक रिकॉर्ड डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म पर उपलब्ध हैं. इस उपलब्धि के अवसर पर केन्द्रीय शिक्षा मंत्रालय द्वारा एक राष्ट्रीय कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में एकेडमिक बैंक ऑफ क्रेडिट क्रियान्वयन में अग्रणी शीर्ष चार संस्थानों के कुलपतियों को केन्द्रीय शिक्षा मंत्री डॉ. धर्मेन्द्र प्रधान ने सम्मानित किया.

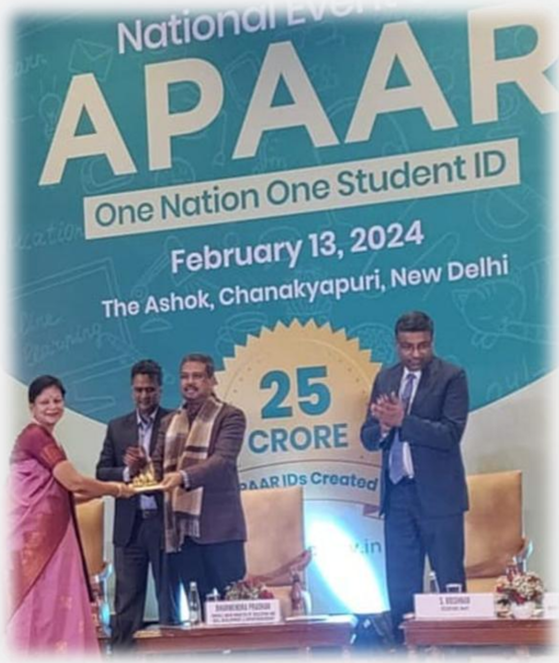

इस अवसर पर केन्द्रीय शिक्षा मंत्री डॉ. धर्मेन्द्र प्रधान ने संबोधित करते हुए कहा कि आने वाले समय में प्रत्येक भारतीय के पास अपार-आई डी उपलब्ध होगी जो उसे वैयक्तिक पहचान दिलाएगी. एबीसी और डीजीलॉकर के माध्यम से ही नई शिक्षा नीति 2020 के महत्त्वपूर्ण उद्देश्य मल्टीपल एंट्री-मल्टीपल एक्जिट की अवधारणा को पूर्ण करने में सहायता मिलेगी. भविष्य में ए बीसी और डीजीलॉकर पर उपलब्ध सूचनाओं को एकेडमिक क्रेडिट और जॉब प्रोफ़ाइल से लिंक कर रोजगार संबंधी क्षेत्र में उपयोग में लाया जाएगा. पूरी दुनिया ने 53 डिजिटल पॉवर इंफ्रास्ट्रक्चर 16 देशों ने मिलकर किया है जिसमें से 19 को भारत ने अकेले विकसित किया है. उन्होंने अपार-आईडी लांच करते हुए दीक्षा, स्वयं, समर्थ जैसे डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म पर भी प्रकाश डाला. उन्होंने कहा कि नई शिक्षा नीति के माध्यम से स्किल, नॉलेज और स्पोर्ट्स तीनों में बराबर समन्वय स्थापित किया जा रहा है.

कार्यक्रम में विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने विश्वविद्यालय में एकेडमिक बैंक ऑफ क्रेडिट के क्रियान्वयन की रणनीतियों और इसके सफल क्रियान्वयन पर वक्तव्य देते हुए कहा कि इस काम को एक मिशन के तहत किया गया है. एबीसी, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का एक महत्त्वपूर्ण चरण है. विश्वविद्यालय ने इसके लिए एक नैड (NAD) प्रकोष्ठ स्थापित किया. एकेडमिक बैंक ऑफ क्रेडिट के बारे में और इसके लाभ प्रति विद्यार्थियों में जागरूकता पैदा करने के लिए कई उन्मुखीकरण कार्यक्रम आयोजित किए गए. एकेडमिक बैंक ऑफ क्रेडिट के प्रति जागरूकता हेतु विश्वविद्यालय की ईएमआरसी द्वारा बनाई गई दो फिल्मों को राष्ट्रीय स्तर पर सराहा गया है देश भर के अकादमिक संस्थानों में विद्यार्थी जागरूकता हेतु इन फिल्मों को भेजा गया. विश्वविद्यालय की वेबसाइट पर इंटरऐक्टिव लिंक

उपलब्ध कराया गया है जो डिजीलॉकर से सीधे संबंधित है. इसके माध्यम से लगातार विद्यार्थियों का पंजीकरण जारी है. इसमें वर्ष 2009 से 2023 तक की सभी विद्यार्थियों की डिग्री ऑनलाइन उपलब्ध कराया गया है। 2023-24 से हम एकीकृत समर्थ पोर्टल से भी जुड़ गए हैं. यह कार्य लगातार जारी है. अभी तक लगभग 1.5 लाख डिग्रियाँ ऑनलाइन उपलब्ध कराई जा

चुकी हैं। उन्होंने कहा कि डीजीलॉकर के माध्यम से डिग्री देने वाले संस्थानों में हम देश में अग्रणी विश्वविद्यालय हैं. उन्होंने इसके लिए विश्वविद्यालय के प्रशासनिक अधिकारियों, शिक्षकों, तकनीकी स्टाफ की सराहना की। उन्होंने यूजीसी, डीजीलॉकर और नैड के सभी टीम और सदस्यों का भी आभार जताया.

कार्यक्रम में यूजीसी अध्यक्ष प्रो. एम जगदीश कुमार, एनईटीएफ के चेयरमैन प्रो. अनिल सहस्रबुधे, एनसीवीईटी के चेयरमैन डॉ. निर्मलजीत सिंह, उच्च शिक्षा सचिव संजय के मूर्ति कौशल विकास एवं उद्यमिता मंत्रालय, स्कूली शिक्षा सचिव सहित कई गणमान्य अतिथि मौजूद थे. विश्वविद्यालय प्रतिनिधि के रूप में प्रभारी परीक्षा नियंत्रक डॉ. एस. पी. गादेवार तथा वि.वि. नैड (NAD) के नोडल अधिकारी डॉ. अरविन्द मिश्रा भी मौजूद रहे.

इन कारणों से विश्वविद्यालय हुआ अग्रणी

- विवि ने समय से एबीसी में अपना रजिस्ट्रेशन कराया.
- विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों द्वारा समय पर रजिस्ट्रेशन और एबीसी एकाउंट खोला गया.
- विश्वविद्यालय द्वारा विद्यार्थियों के एबीसी एकाउंट से संबंधित एकेडमिक क्रेडिट जमा की गई. विश्वविद्यालय में इसका प्रतिशत 96.20 है.

स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता आवश्यक- कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता

विश्वविद्यालय में कैंसर परीक्षण शिविर का आयोजन

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर की कुलगुरु प्रोफेसर नीलिमा गुप्ता की अध्यक्षता में क्षेत्रीय संचालक स्वस्थ सेवाएं एवं जिला अस्पताल के संयुक्त तत्वाधान मे कैंसर परीक्षण शिविर का केंद्रीय विश्वविद्यालय के स्वास्थ्य केंद्र मे आयोजित किया गया. शिविर में लगभग 55 लोगों के मुंह के कैंसर सर्वाइकल कैंसर आदि से संबंधित परीक्षण विशेषज्ञ चिकित्सकों द्वारा किए गए. शिविर के समन्वयक मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉक्टर अभिषेक जैन ने शिविर की उपयोगिता के बारे में बताया और लोगों को कैंसर के प्रति जागरूक किया. उन्होंने कहा कि समय पर जांच और जागरूकता ही कैंसर से बचाव की महत्वपूर्ण भूमिका है. डॉक्टर जैन ने बताया की भारत सरकार शीघ्र ही सर्वाइकल कैंसर आदि के बचाव हेतु एक नया एचपीवी, टीका राष्ट्रीय टीकाकरण कार्यक्रम में शामिल करने जा रही है.

शिविर में एक मरीज के कैंसर होने की संभावना के पहचान चिन्ह मिले, जिसे तुरंत ही स्वास्थ्य केंद्र में थर्मल एविलेशन के जरिए उपचारित किया गया. कुलपति द्वारा ऐसे उपयोगी शिविर आयोजित किए जाने हेतु निर्देश दिए गए. आयोजन में मिलेट्स यानी मोटे अनाजों की उपयोगिता संबंधित पोस्टर्स का प्रदर्शन किया गया.

शिविर में मुख्य रूप से क्षेत्रीय संचालक डॉ. ज्योति चौहान, संयुक्त संचालक डॉ. सुशीला यादव, मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. ममता तिमोरी, सिविल सर्जन डॉ. जयंत, गाइनेकोलॉजिस्ट डॉ. ललिता पाटील, डॉ. किरण सिंह, डॉ. किरण माहेश्वरी, डॉक्टर भूपेंद्र पटेल डेंटल सर्जन डॉ. धर्मेंद्र कानोरिया, डॉ. संदीप गौतम, स्टाफ नर्स ननकी मोनिका, जयप्रकाश, ममता पटेल भगत और स्वास्थ्य केंद्र के सभी कर्मचारी और विश्वविद्यालय महिला क्लब के सदस्य उपस्थित रहे. डॉक्टर जैन ने बताया कि दिनांक 20 तारीख को उक्त कैंसर जांच शिविर पथरिया जाट के ग्राम पंचायत भवन में भी आयोजित किया जा रहा है. उन्होंने सभी से परीक्षण करवाने हेतु आग्रह किया है.

भारत विकसित होने के संकल्प के साथ आगे बढ़ रहा है- प्रधानमंत्री मोदी

देश की तरक्की में हम कदम से कदम मिलाकर चलने को संकल्पित हैं- प्रो. नीलिमा गुप्ता

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने किया विश्वविद्यालय के नवनिर्मित भवनों का लोकार्पण

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर के नवीन भवनों का लोकार्पण कार्यक्रम विश्वविद्यालय के अभिमंच सभागार में आयोजित किया गया. कार्यक्रम में विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने डॉ. गौर और माँ सरस्वती पर माल्यार्पण किया. ऑनलाइन माध्यम से रिमोट के जरिये प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शिक्षा मंत्रालय, कौशल विकास मंत्रालय सहित कई अन्य योजनाओं के तहत देश भर के नवनिर्मित भवनों का लोकार्पण किया. इसी क्रम में डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के तीन नवीन भवनों का लोकार्पण किया गया. जम्मू से ऑनलाइन माध्यम से कार्यक्रम का सजीव प्रसारण किया गया जिसमें जम्मू कश्मीर के उपराज्यपाल मनोज सिन्हा, केन्द्रीय मंत्री जीतेन्द्र सिंह एवं जम्मू के स्थानीय सांसद मौजूद थे.

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने कहा कि भारत विकसित होने के संकल्प के साथ आगे बढ़ रहा है. शिक्षा के संस्थान अपने नवीनतम एवं आधुनिक इंफ्रास्ट्रक्चर के साथ हम तरक्की और विकास के रास्ते पर हैं. देश के युवाओं के बेहतर भविष्य के लिए हम संकल्पित हैं. उन्होंने देश के कई आईआईटी,

आईआईएम, केन्द्रीय विश्वविद्यालयों के साथ ही कई शैक्षणिक संस्थानों के भवनों का लोकार्पण किया. इसी क्रम में

विश्वविद्यालय के अपराध विज्ञान और फोरेंसिक विज्ञान विभाग, ललित और प्रदर्शन कला विभाग, पुस्तकालय और सूचना विज्ञान विभाग के लिए एकीकृत भवन, केंद्रीय पुस्तकालय भवन का विस्तार और व्यवसाय प्रबंधन भवन विभाग के विस्तारित भवन का भी लोकार्पण हुआ.

इस अवसर पर विश्वविद्यालय की कुलगुरु प्रो. नीलिमा गुप्ता ने प्रधानमंत्री का आभार ज्ञापित किया. उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय में ये तीन भवन नई संरचनाओं एवं आधुनिक सुविधाओं के साथ तैयार हुए हैं. कई भवनों के प्रोजेक्ट चल रहे हैं. जल्द ही ऐसे कई नवीन अकादमिक भवन और प्रयोगशालाएं विश्वविद्यालय में विद्यार्थियों के उपयोग के लिए तैयार हो जायेंगी. उन्होंने कहा कि अभी हाल ही में विश्वविद्यालय को लगभग 250 करोड़ की नवीन परियोजनाओं की स्वीकृति मिली है जिसका निर्माण कार्य शीघ्र ही शुरू होगा. इसमें सिंथेटिक ट्रेक, स्वीमिंग पूल, कन्वेंशन सेंटर, फ़ूड प्लाजा, पैरामेडिकल एवं इंजीनियरिंग विभागों के नवीन भवन, खेल सुविधाएं एवं अन्य कई आवश्यक परियोजनाएं शामिल हैं. उन्होंने कहा कि डॉ. गौर द्वारा जिन महान उद्देश्यों एवं संकल्पों के साथ इस विश्वविद्यालय की स्थापना की गई थी उन संकल्पों के प्रति हमारा दायित्व है कि आने वाली युवा पीढ़ी को हम नए एवं आधुनिक सुविधाओं के साथ शिक्षा व्यवस्था उपलब्ध कराएं ताकि यहाँ अध्ययन करने वाले विद्यार्थी देश की तरक्की में अपना महती योगदान दे सकें और देश के शीर्ष संस्थान के रूप में हमारी पहचान बन सके. हम अच्छी भावना के साथ कार्य करें, विद्यार्थियों के लिए सुसज्जित और सुविधायुक्त वातावरण बनाएं और लगन एवं परिश्रम से डॉ. गौर के सपनों को साकार करें.

कार्यक्रम का संचालन डॉ. आशुतोष ने किया. प्रभारी कुलसचिव डॉ एस.पी.उपाध्याय द्वारा आभार व्यक्त किया गया. कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के समस्त शिक्षक, अधिकारीगण, कर्मचारी एवं शोध छात्र सहित विद्यार्थी उपस्थित रहे.

शिक्षा का अंतर्राष्ट्रीयकरण वैश्विक मूल्यबोधपरक पाठ्यचर्याओं से ही संभव - कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता

भारत-नेपाल उच्च शिक्षा शिखर सम्मेलन-2024 में कुलपति ने दिया उद्बोधन

भारतीय विश्वविद्यालय संघ, नई दिल्ली के तत्त्वावधान में दिनांक 15 से 17 फरवरी 2024 तक 'उच्च शिक्षा का वैश्वीकरण और अंतर्राष्ट्रीयकरण' विषय पर काठमांडू विश्वविद्यालय, काठमांडू (नेपाल) में भारत के सभी भारतीय विश्वविद्यालयों की

एक बैठक आयोजित की गई जिसमें 117 भारतीय विश्वविद्यालयों ने सहभागिता की. डॉ. हरीसिंह गौर विवि, सागर की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता के नेतृत्व में एनईपी 2020-शिक्षा प्रणाली के अंतर्राष्ट्रीयकरण थीम के साथ सम्मिलित हुईं. विश्वविद्यालय की प्रो. श्वेता यादव और डॉ. सुनीत वालिया ने भी कार्यक्रम में भाग लिया. शिखर सम्मेलन का उद्घाटन नेपाल के प्रधानमंत्री पुष्प कमल दहल 'प्रचंड' ने किया और उदघाटन भाषण भी दिया. विभिन्न विश्वविद्यालयों के प्रख्यात कुलपतियों ने कई तकनीकी सत्रों को संबोधित किया.

विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने 'इंटरनेश्नल कोलैबोरेशंस एंड पार्टनरशिप: बिल्डिंग ब्रिजेज फॉर हायर एजुकेशन' विषय पर व्याख्यान देते हुए उन्होंने शिक्षा प्रणाली के अंतर्राष्ट्रीयकरण और वैश्वीकरण पर प्रकाश डाला. उन्होंने छात्र विनिमय कार्यक्रमों के माध्यम से अंतरराष्ट्रीय छात्रों की भागीदारी के बारे में चर्चा की. उन्होंने करीकुलम के वैश्विक मूल्यों पर जोर देते हुए कहा कि हमें इस पर अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है तभी हम वैश्विक स्तर पर अपने ज्ञान संसाधनों एवं उसकी महत्ता को बतला सकने में सक्षम होंगे. उन्होंने भारतीय छात्रों के बढ़ते पलायन एवं ब्रेन-ड्रेन जैसे तथ्यों की तरफ भी ध्यान आकृष्ट करते हुए कहा कि पढ़ाई के लिए जब छात्र बाहर जाते हैं तो इससे भारतीय मेधा के साथ भारतीय आर्थिकी का भी इससे

नुकसान होता है. उन्होंने इसके उपचारात्मक समाधान पर जोर देते हुए कहा कि यूजीसी विदेशी छात्रों को आकर्षित करने और भारतीय छात्रों को वापस बनाए रखने के लिए संस्कृति विविधता जैसे कार्यक्रमों के माध्यम से सुविधा प्रदान कर रहा है. उन्होंने अंतर्राष्ट्रीय छात्रों को आकर्षित करने और आमंत्रित करने के लिए आउट-रीच कार्यक्रम, वेबसाइट लाइन, मजबूत डिजिटल उपस्थिति और लचीली और त्वरित प्रवेश प्रक्रिया और छात्रों के इमीग्रेशन और प्रवास की प्रक्रिया को आसान

बनाने का सुझाव दिया. प्रो. गुप्ता ने अकादमिक विद्वानों के अंतर्राष्ट्रीयकरण को बढ़ाने पर जोर देते हुए कहा कि इससे घरेलू और वैश्विक शिक्षा प्रणाली की समझ बढ़ेगी और व्यापक सांस्कृतिक आदान-प्रदान और विश्व शांति विकसित होगी.

विश्वविद्यालय की अकादमिक उपलब्धियों एवं विशिष्टताओं का किया प्रदर्शन

यह आयोजन एक ऐसा बड़ा मंच था जिसमें सभी प्रतिभागी विश्वविद्यालयों ने अपने पाठ्यक्रमों, प्रवेश, प्रक्रियाओं, अनुसंधान क्षेत्रों और सहयोग आदि के संदर्भ में अपनी सक्षम उपस्थिति दर्ज की. इसी क्रम में डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय ने भी स्टाल के माध्यम से विश्वविद्यालय की अकादमिक उपलब्धियों, छात्र सुविधाओं, अध्ययन-अध्यापन के वातावरण, पाठ्यक्रमों, शोध-अनुसंधान आदि में अपनी सभी प्रमुख उपलब्धियों को प्रदर्शित किया. काठमांडू के सात से अधिक स्कूलों ने अपने प्रधानाचार्यों और शिक्षकों, उपकुलपतियों, संकाय सदस्यों और विश्वविद्यालय के छात्रों के साथ विश्वविद्यालय के स्टाल का अवलोकन किया और जानकारी प्राप्त की. वहां के कई सरकारी और निजी विश्वविद्यालयों के कुलपतियों और शिक्षकों ने विज्ञान, प्रबंधन, कला, इंजीनियरिंग आदि जैसे विषयों में परियोजनाओं, छात्र विनिमय कार्यक्रमों, एमओयू के संदर्भ में सहयोग की संभावनाओं पर भी चर्चा की. सम्मलेन में ऑस्ट्रेलियाई उच्चायोग, हांगकांग, थाईलैंड और यूनाइटेड किंगडम के प्रतिनिधियों ने चुनौतियों, नई नीतियों के निर्माण और इसके एलाइनमेंट पर भी चर्चा की.

डॉ. सर हरीसिंह गौर को 'भारत रत्न' दिये जाने संबंधी पत्र का प्रारूप तैयार, भारत सरकार को भेजा जायेगा

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के कुलपति सम्मेलन कक्ष में दिनांक 20 फरवरी को पितृपुरूष, मनीषी, महान दानवीर डॉ. सर हरीसिंह गौर को भारत के सर्वोच्च नागरिक सम्मान "भारत रत्न" प्रदान किये जाने हेतु समीक्षा बैठक का आयोजन कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता की अध्यक्षता में संपन्न हुई. बैठक में देश के समाजवादी चिंतक रघु ठाकुर विशेष आमंत्रित सदस्य के रूप में उपस्थित रहे. साथ ही समिति के अध्यक्ष प्रो. संजय जैन, प्रो. दिवाकर सिंह राजपूत, प्रो. चंदा बेन, सेवानिवृत्त आचार्य प्रो. आर.के. त्रिवेद्वी, प्रो. पी.पी. सिंह, श्री एस.आर. आठिया, डॉ. संदीप रावत, प्रभारी कुलसचिव डॉ. एस.पी. उपाध्याय, उपकुलसचिव सतीश कुमार उपस्थित थे.

कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने कहा कि डॉ. गौर ने अपनी बहन की पीड़ा को नजदीक से देखा है, उस पीड़ा को जिया है. चिर काल तक वह पीड़ा उनके मन मानस में अंकित रही थी, जिसके प्रतिबिम्ब के रूप में स्त्री शिक्षा से लेकर, स्त्री विवाह, स्त्री समानता, स्त्री को संपत्ति में अधिकार, स्त्री को कार्य की आजादी, स्त्री समाज को मुख्य धारा में लाने के लिए उनके द्वारा किये गये कार्य अतुलनीय एवं अनुकरणीय हैं. इन सभी तथ्यों को रेखांकित करते हुये एक सारगर्भित प्रस्ताव अविलम्ब तैयार करने पर उन्होंने जोर दिया. चर्चा करते हुये वरिष्ठ चिन्तक रघु ठाकुर ने डॉ. गौर के मानवीय पहलुओं को रेखांकित करते हुये कहा कि डॉ. गौर ने अपने जीवन काल में काफी संघर्ष किये. उन्होंने अपनी मां और बहन को भी जीवन-

संघर्ष करते हुए देखा था. इसलिए ऐसे महान स्वप्नद्रष्टा और मनीषी को सर्वोच्च नागरिक सम्मान मिले इसके लिए हम सबको प्रयास करना चाहिए. प्रो. संजय जैन ने समिति को अवगत कराया कि माननीय प्रधानमंत्री जी एवं माननीय मुख्यमंत्री एवं अन्य गणमान्य जनों को प्रेषित किये जाने वाले पत्र का प्रारूप तैयार कर लिया गया है, जिसे समिति के अनुमोदन उपरांत कुलपति महोदया द्वारा प्रेषित किया जायेगा. इस पर निर्णय लिया गया कि इस पत्र में आंशिक संशोधन कर पत्र को अंतिम रूप दिया जाये, जिससे इसे अविलम्ब भेजा जा सके.

बैठक में इस बात पर सहमति बनी कि डॉ. सर हरीसिंह गौर को "भारत रत्न" हेतु सार्थक पहल करते हुये यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी को डॉ. गौर के अवदानों और कार्यों से अवगत कराया जाए. नगर के जनमानस की इस बहुप्रतीक्षित मांग को भी उनके समक्ष रखा जाए और इसके लिए एक प्रतिनिधि मंडल भेंट हेतु भेजा जाए. इस हेतु आवश्यक पत्राचार भी किया जाए. समिति ने सर्वसम्मत से यह विचार व्यक्त किया कि डॉ. सर हरीसिंह गौर साहब ने स्त्री की सामाजिक दशा को सुधारना एवं उच्च शिक्षा उस गरीब से गरीब व्यक्ति तक को हासिल हो, जिसकी वह जीवन में कल्पना भी न कर सका हो, को इस विश्वविद्यालय को दिये अपने दान से तथा अपनी विधि की शिक्षा से भारतीय संविधान में ऐसे प्रावधानों को बनाने में विशेष योगदान दिया है. समाज सुधार के साथ-साथ समाज में स्त्री को समानता एवं शिक्षा के अधिकार के पक्षधर, सामाजिक सरोकर के धनी महामना डॉ. सर हरीसिंह गौर को भारत रत्न मिले इस प्रस्ताव को यथाशीघ्र गृह मंत्रालय, भारत सरकार को भेजा जाएगा.

विश्वविद्यालय में मातृभाषा में हस्ताक्षर अभियान चलाया गया

डॉ. हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय एवं शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास नई दिल्ली के संयुक्त तत्वावधान में मातृभाषा में जीवन और व्यवहार विषय पर 21 से 28 फरवरी 2024 तक साप्ताहिक आयोजन किया जा रहा है. इस क्रम में विश्वविद्यालय स्टेट बैंक

ऑफ़ इंडिया शाखा परिसर एवं विवि पोस्ट ऑफिस में मातृभाषा में हस्ताक्षर अभियान चलाया गया. अभियान के तहत उपस्थित नागरिकों से संकल्प पत्र पर हस्ताक्षर करवाए गये. बैंक एवं पोस्ट ऑफिस के अधिकारियों, कर्मचारियों एवं विद्यार्थियों ने भी मातृभाषा में हस्ताक्षर करने का संकल्प लिया. इस अवसर पर कार्यक्रम के नोडल अधिकारी प्रोफेसर अजीत जायसवाल, प्रो. के. एन. झा, डॉ. शशि कुमार सिंह, डॉ. विवेक जायसवाल, डॉ. रमाकांत, डॉ. रविदास अहिरवार, डॉ. देवेन्द्र, डॉ. नेत्रपाल सिंह, डॉ. आयुष गुप्ता, बैंक प्रबंधक मनीष चौधरी, उपसंभागीय निरक्षक डाक जयप्रकाश आदि उपस्थित थे.

विश्वविद्यालय का 32वां दीक्षांत समारोह 13 मार्च को
कुलपति ने की तैयारियों को लेकर बैठक

डॉक्टर हरीसिंह गौर केंद्रीय विश्वविद्यालय, सागर का 32वां दीक्षांत समारोह 13 मार्च 2024 को आयोजित किया जा रहा है. इस संबंध में आवश्यक तैयारियों को लेकर कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता की अध्यक्षता में एक बैठक कुलपति सम्मेलन कक्ष में सम्पन्न हुई. बैठक में कुलपति ने आयोजन की तैयारियों के संबंध में विभिन्न समितियों के समन्वयक एवं उपसमन्वयकों से चर्चा कर तैयारियों की जानकारी ली और सफल आयोजन हेतु आवश्यक दिशा-निर्देश दिए.

आयोजन के मुख्य समन्वयक प्रो. नवीन कानगो ने बताया कि लगभग 1100 विद्यार्थियों ने अभी तक पंजीकरण कराया है जिसमें से लगभग 850 विद्यार्थियों ने उपस्थित होकर डिग्री लेने की सहमति दी है. पंजीकरण की तिथि में वृद्धि करते हुए अंतिम तिथि 29 फरवरी 2024 कर दी गई है ताकि ज्यादा से ज्यादा विद्यार्थी दीक्षांत समारोह में सहभागिता कर सकें. विद्यार्थियों की सहभागिता सुनिश्चित करने हेतु विश्वविद्यालय द्वारा एक गूगल फॉर्म भी शीघ्र अपलोड कर दिया जाएगा. उन्होंने बताया कि विश्वविद्यालय द्वारा निर्धारित पोशाक (सफेद कुर्ता पायजामा/सफेद सलवार-कुर्ता) में विद्यार्थी दीक्षांत समारोह में भाग ले सकेंगे. बुंदेली सतरंगी पगड़ी और स्टोल विश्वविद्यालय द्वारा प्रदान किया जाएगा. प्रभारी परीक्षा नियंत्रक डॉ. सुरेंद्र गादेवार ने बताया कि आयोजन के पहले विद्यार्थियों को निर्धारित काउंटर पर डिग्री फाइल भी प्रदान की जाएगी. विद्यार्थी अद्यतन जानकारी के लिए विश्वविद्यालय की वेबसाइट का अवलोकन करते रहें. बैठक में प्रभारी कुलसचिव डॉ. एस.पी. उपाध्याय, प्रो. पी.के. कठल, प्रो. संजय जैन, प्रो. ए.डी. शर्मा, प्रो. चंदा बेन सहित विभिन्न समितियों के संयोजक एवं सह-संयोजक उपस्थित थे.

विश्वविद्यालय: कुलपति ने किया नववर्ष कैलेंडर का विमोचन

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर के नव वर्ष 2024 के टेबल कैलेंडर का विमोचन कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने सम्मेलन कक्ष में किया. इस वर्ष कैलेंडर की थीम विश्वविद्यालय के विभिन्न भवनों पर रखी गई है। इस अवसर पर कुलपति प्रो. नीलिमा ने कहा कि विश्वविद्यालय के तीन भवनों का लोकापर्ण अभी हाल ही में माननीय प्रधानमंत्री जी द्वारा किया गया है। कई भवन निर्माण प्रगति पर हैं और इसी वर्ष कई नए प्रोजेक्ट की आधारशिला भी रखी जानी है. साथ ही परिसर का विस्तार भी हो रहा है. यह कैलेंडर इसी श्रृंखला को जारी रखने का एक दस्तावेज है जिससे विश्वविद्यालय में स्थापत्य अधोसंरचना के लिए यह वर्ष स्मृति में रहेगा.

इस अवसर पर प्रभारी कुलसचिव डॉ. एस.पी. उपाध्याय, प्रो. पी.के. कठल, प्रो. नवीन कानगो, प्रो. संजय जैन, प्रो. चंदा बेन, प्रो. यू.के. पाटिल, डॉ. विवेक जायसवाल सहित कई शिक्षक मौजूद थे.

मातृभाषा हमारी अस्मिता, सामाजिकता और सांस्कृतिक उन्नयन का प्रतीक है

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर एवं शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, नई दिल्ली के संयुक्त तत्वाधान में दिनांक 21 फरवरी से 28 फरवरी, 2024 तक मनाए जाने वाले अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस सप्ताह के द्वितीय दिवस में दिनांक 22

फरवरी 2024 को मातृ भाषा विषयक व्याख्यान जिसका शीर्षक: 'मातृ भाषा में जीवन व्यवहार एवं शिक्षा' का आयोजन विश्वविद्यालय के मालवीय मिशन प्रशिक्षण केंद्र, सागर (पूर्ववर्ती मानव संसाधन केंद्र) में माननीय कुलपति प्रो.नीलिमा गुप्ता जी के मार्गदर्शन एवं संरक्षण में प्रातः 11 बजे से आयोजित किया गया है. कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के रूप में प्रो. अनिल कुमार जैन विभागाध्यक्ष, शिक्षाशास्त्र विभाग ने मातृ भाषा के आवश्यकता एवं उपादेयता पर बात करते हुए कहा कि मातृभाषा सिर्फ सम्प्रेषण या अभिव्यक्ति का माध्यम ही नही है बल्कि भारत जैसे बहुभाषी देश में या जीवन व्यवहार एवं शिक्षा का मूलभूत आधार भी है, विश्व के सभी देशों में विकासात्मक मॉडल में अपनी मातृभाषा के समावेशन का प्रतिविम्ब समाहित है. कार्यक्रम नोडल अधिकारी प्रो. अजीत जायसवाल, निदेशक, संकाय मामले ने मातृभाषा सप्ताह के अंतर्गत आयोजित किये जा रहे विभिन्न गतिविधियों का उल्लेख करते हुए कहा कि हमे यह निश्चित रूप से सोचना चाहिए कि आज हमें मातृभाषा को लेकर दिवस मनाने की परम्परा क्यों

आरम्भ करनी पड़ी. सार्वभौमिकीकरण के इस युग में भाषा हमारी सामाजिकता, सांस्कृतिक उन्नयन एवं अस्मिता का महत्वपूर्ण प्रतीक है, हमें अपने जीवन व्यवहार एवं शिक्षा में मातृभाषा के प्रयोग को बढ़ाना ही होगा.

कार्यक्रम की रूपरेखा डॉ. रजनीश, मंच संचालन डॉ. पुष्पिता एवं डॉ. सावन एवं धन्यवाद ज्ञापन डॉ. नवीन सिंह ने किया. इस अवसर पर डॉ. रानी दुबे, डॉ. रश्मि जैन, डॉ. धर्मेंद्र सर्राफ़, डॉ. अभिषेक, डॉ. मेघा दास, डॉ. चिंतन, अपर्णा श्रीवास्तव, डॉ.शिवशंकर, डॉ.योगेश, डॉ. शकीला सहित शिक्षक, शोधार्थी, एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे.

विश्वविद्यालय पर केन्द्रित फिल्म का दूरदर्शन पर होगा राष्ट्रीय प्रसारण

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर पर केन्द्रित फिल्म दिनांक 24 फरवरी को प्रातः 9.30 बजे प्रसारित की जायेगी. यूजीसी की नीति के तहत देश के चुनिन्दा विश्वविद्यालयों की विशेषताओं को देश-भर में प्रसारित करने हेतु 'एवेन्यूज ऑफ़ एक्सीलेंस' सीरीज के तहत विभिन्न विश्वविद्यालयों पर केन्द्रित लघु फिल्मो का निर्माण किया गया है जिसका लगातार राष्ट्रीय प्रसारण किया जा रहा है. इसी क्रम में डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर के पाठ्यक्रमों, अकादमिक उपलब्धियों, अकादमिक वातावरण, छात्र सुविधाओं इत्यादि पर केन्द्रित फिल्म का राष्ट्रीय प्रसारण किया जाएगा. फिल्म का निर्माण विश्वविद्यालय के ईएमआरसी द्वारा किया गया है.

शिक्षाशास्त्र विभाग, डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर, मध्यप्रदेश द्वारा आयोजित 5 दिवसीय कार्यशाला का उद्घाटन

शिक्षाशास्त्र विभाग, डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर, मध्यप्रदेश द्वारा आयोजित 5 दिवसीय (22 फरवरी से 26 फरवरी) कार्यशाला का उद्घाटन किया. जिसका विषय "Effective teaching learning methods for under/post graduate science teacher" था. कार्यशाला की मुख्य अतिथि प्रो. सीमा सिंह, कुलपति उत्तर प्रदेश राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज व प्रो. नीलिमा गुप्ता कुलपति डाक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर, मध्यप्रदेश उपस्थित थे. जिसके तहत प्रो. सीमा सिंह ने कहा कि अपने विद्यार्थियों को जाने और उसके अनुरूप अपनी शिक्षण विधियों का कक्षा कक्ष में उपयोग करें क्योंकि प्रत्येक बच्चा खास है. अध्यक्षीय उद्बोधन हेतु माननीया कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता जी को आमंत्रित किया गया जिन्होंने शिक्षकों में नवाचार के साथ सामंजस्य स्थापित करने की बात कही. तत्पश्चात प्रो. अनिल कुमार जैन (विभागाध्यक्ष) जी को

स्वागत उद्बोधन हेतु मंच पर आमंत्रित किया गया. कार्यशाला की संयोजक डॉ. मेघा दास जी ने वैचारिक उद्बोधन प्रस्तुत किया. डॉ. धर्मेन्द्र कुमार सर्राफ जी ने मुख्य अतिथि का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत किया एवं उनको मंच पर आमंत्रित किया. उन्होंने शिक्षण विधियों व शिक्षक के गुणों पर अपने विचार प्रस्तुत किए. अंत में अध्यक्षीय उद्बोधन हेतु माननीया कुलपति नीलिमा गुप्ता को आमंत्रित किया गया. जिन्होंने विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास पर अपने विचार प्रस्तुत किए. इस कार्यशाला के उद्घाटन सत्र में शिक्षाशास्त्र विभाग के सभी शिक्षकगण और शोधार्थी, विद्यार्थीगण उपस्थित थे.

डॉक्टर हरीसिंह गौर वि. वि. सागर, म.प्र. एवं श्री विनय कुमार रजिस्ट्रार उत्तरप्रदेश राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय प्रयागराज ने एमओयू की औपचारिक प्रक्रिया

दूरस्थ और नियमित शिक्षा मिलकर बनाएंगे नया आयामः- प्रो. नीलिमा गुप्ता

डॉक्टर हरीसिंह गौर वि. वि. सागर, म.प्र. के रजिस्ट्रार डॉ. सत्यप्रकाश उपाध्याय एवं श्री विनय कुमार रजिस्ट्रार उत्तर प्रदेश राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय प्रयागराज ने दोनों विश्वविद्यालय के कुलगुरूओं की गरिमामयी उपस्थिति में एमओयू की औपचारिक प्रक्रिया सम्पन्न कर अपने हस्ताक्षर किए. इसके संदर्भ में डॉ. हरीसिंह गौर वि.वि. सागर, म.प्र. की माननीया कुलगुरू प्रो. नीलिमा गुप्ता ने कहा कि इस एमओयू का दूरदर्शी परिणाम यह होगा कि दूरस्थ और नियमित शिक्षा मिलकर नये आयाम स्थापित करेंगे.

शिक्षाशास्त्र विभाग का सर्वश्रेष्ठ प्रशिक्षु शिक्षक पुरूस्कार की घोषणा

कार्यक्रम में सर्वश्रेष्ठ प्रशिक्षु शिक्षक को पुरूस्कृत किया गया. जिसमें माननीया कुलपति महोदया ने सर्वश्रेष्ठ शिक्षक प्रशिक्षु कला, विज्ञान तथा शिक्षण सहायक सामग्री बनाने वाले शिक्षक प्रशिक्षुओं हेतु 1000 रूपये के पुरूस्कार राशि की घोषणा की. इस वर्ष सर्वश्रेष्ठ शिक्षक प्रशिक्षु कला हेतु अमन जैन तथा शिक्षक प्रशिक्षु विज्ञान हेतु तान्या यादव एवं सर्वश्रेष्ठ शिक्षण सहायक सामग्री हेतु सबा हसन को चुना गया.

शिक्षाशास्त्र विभाग में बुक बैंक कार्नर और बी.ए./बी.एस.सी.बी.एड. प्रशिक्षुओं द्वारा हस्तनिर्मित शिक्षण अधिगम सामग्री की प्रदर्शनी

शिक्षाशास्त्र विभाग में बुक बैंक कार्नर का उद्घाटन किया साथ ही बी.ए./बी.एस.सी.बी.एड. प्रशिक्षुओं द्वारा हस्तनिर्मित शिक्षण अधिगम सामग्री की प्रदर्शनी की गई. आज की मुख्य अतिथि प्रो. सीमा सिंह, कुलपति उत्तरप्रदेश राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज व प्रो. नीलिमा गुप्ता कुलपति डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर, मध्यप्रदेश उपस्थित थे. यह कार्यक्रम प्रो. अनिल कुमार जैन (विभागाध्यक्ष) की अध्यक्षता एवं कार्यक्रम संयोजक सहा. अध्यापक डॉ. अभिषेक कुमार प्रजापति व धर्मेन्द्र कुमार सर्राफ के सहयोग से सम्पन्न हुआ.

विश्वविद्यालय परिसर में मातृभाषा में हस्ताक्षर अभियान चलाया गया

डॉ. हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय एवं शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास नई दिल्ली के संयुक्त तत्वावधान में मातृभाषा में जीवन और व्यवहार विषय पर 21 से 28 फरवरी 2024 तक साप्ताहिक आयोजन किया जा रहा है. इस क्रम में विश्वविद्यालय के अभिमंच

सभागार परिसर में मातृभाषा में हस्ताक्षर अभियान चलाया गया. अभियान श्रृंखला में कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने हस्ताक्षर पटल पर अपनी मातृभाषा में हस्ताक्षर किए. शिक्षा विभाग में आयोजित किये जा रहे कार्यशाला में मुख्य अतिथि के रूप में पधारी उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज की कुलपति प्रो. सीमा सिंह ने भी मातृभाषा में हस्ताक्षर किए। उपस्थित विद्यार्थियों, शिक्षकों एवं अधिकारियों ने भी मातृभाषा में हस्ताक्षर किए. इस अवसर पर कार्यक्रम के नोडल अधिकारी प्रोफेसर अजीत जायसवाल, डॉ. आशुतोष, डॉ. सुनीत वालिया, डॉ. देवेंद्र विश्वकर्मा सहित कई विद्यार्थी एवं शिक्षक उपस्थित थे.

विश्वविद्यालय: फार्मेसी विभाग के सन्नी राठी को मिला युवा वैज्ञानिक पुरस्कार

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर के फार्मेसी विभाग के शोधार्थी सन्नी राठी को माधव इंस्टिट्यूट ऑफ़ टेक्नोलॉजी

एंड साइंस, ग्वालियर में 21 से 23 फरवरी, 2024 तक आयोजित 39वे एम पी यंग साइंटिस्ट सम्मलेन में यंग साइंटिस्ट अवार्ड से सम्मानित किया गया. सन्नी राठी को उनकी रिसर्च "इन सीटू हाइड्रोजल सिस्टम फॉर द मैनेजमेंट ऑफ़ रूमेटाइड अर्थराइटिस" विषय पर रिसर्च के लिए मध्य प्रदेश विज्ञान एवं तकनीकी काउंसिल के डायरेक्टर जनरल, डॉ अनिल कोठारी द्वारा उक्त पुरुस्कार से

सम्मानित किया गया. इस तीन दिवसीय सम्मलेन में राज्य के विभिन्न संस्थानों के 205 शोधकर्ताओं द्वारा अलग अलग स्ट्रीम में शोधपत्र प्रस्तुत किये गये. इस सम्मेलन में फार्मास्यूटिकल विषय के 27 शोधार्थियों को चयनित कर शोध प्रस्तुत करने अवसर दिया गया था. डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर के जन्तु विज्ञान, भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान, वनस्पति विज्ञान एवं अन्य विभागों के शोधार्थियों ने भी अपने शोध पत्र प्रस्तुत किये. सन्नी राठी ने यह शोध अध्ययन डॉ. हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय के फार्मेसी विभाग में पीएचडी के दौरान प्रोफेसर संजय के. जैन और प्रोफेसर उमेश के. पाटिल के निर्देशन में किया। उन्होंने इस उपलब्धि का श्रेय कुलगुरु प्रो. नीलिमा गुप्ता, विभागाध्यक्ष एवं विभाग के समस्त शिक्षकों व अपनी माता श्रीमती सरोज बाला और पिता श्री जय नारायण सिंह राठी को दिया.

उपलब्धि-

डॉ. गौर विश्वविद्यालय की वैज्ञानिक ने लैब में तैयार किया डायटम नैनो-फिंगरप्रिंट पाउडर, जर्मनी से मिला अंतर्राष्ट्रीय पेटेंट

फॉरेंसिक मामलों की जांच में पाउडर की होगी महत्त्वपूर्ण भूमिका

डॉक्टर हरिसिंह गौर केंद्रीय विश्वविद्यालय, सागर के अपराध शास्त्र और न्यायिक विज्ञान विभाग में डायटम रिसर्च यूनिट को उनके इंडो-फ्रेंच प्रोजेक्ट (सेफिप्रा) पर काम करते हुए जर्मनी से एक अंतर्राष्ट्रीय पेटेंट प्रदान किया गया है. यह पेटेंट फ्लोरोसेंस

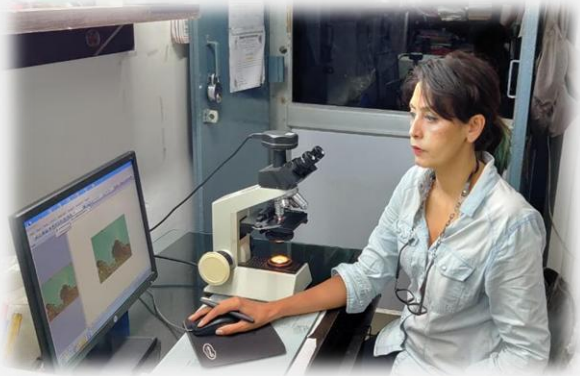

डाई युक्त डायटम नैनो-फिंगरप्रिंट पाउडर के संश्लेषण पर है जो काफी सस्ता, कम हानिकारक, पर्यावरण के अनुकूल और अत्यधिक प्रभावी है. प्रोजेक्ट की प्रमुख अन्वेषक और सहायक प्राध्यापक डॉ. वंदना विनायक, डॉक्टर हरीसिंह गौर केंद्रीय विश्वविद्यालय सागर के अपराध शास्त्र और न्यायिक विज्ञान विभाग में पिछले एक दशक से अधिक समय से शैवाल डायटम के क्षेत्र में अनुसंधान कर रही हैं. उन्होंने बताया कि फोरेंसिक मामलों की जांच में फिंगरप्रिंट महत्वपूर्ण भौतिक साक्ष्य होते हैं लेकिन मौजूदा फ़िंगरप्रिंट पाउडर ऐसे रासायनिक यौगिकों से मिलकर बने होते हैं जो मानव स्वास्थ और पर्यावरण के लिए हानिकारक होते हैं. डायटोमाइट पाउडर गैर-विषाक्त, अपेक्षाकृत किफायती है और विभिन्न सतहों पर फ़िंगरप्रिंट को बिना उनकी विशेषताओं को नुकसान पहुंचाए हुए विकसित करता है.

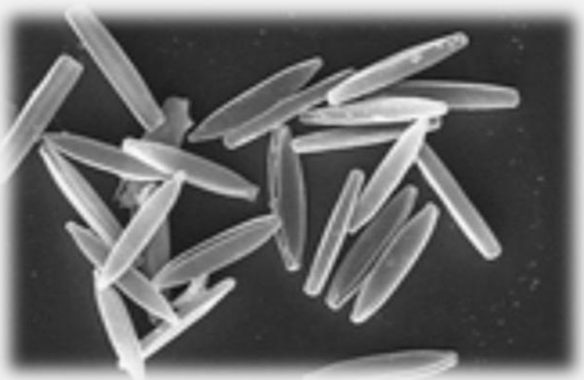

उन्होंने बताया कि इस पाउडर के विकास में उनके साथ शोध छात्रों अंकेश अहिरवार, वंदना सिरोटिया, प्रियंका खंडेलवाल और गुरप्रीत सिंह और छात्रा उर्वशी सोनी ने महत्ववपूर्ण भूमिका निभाई है. इसके अलावा साहित्य समीक्षा पर भी कई विद्यार्थियों ने काम किया है. फ्लोरेसेसेंट डायटम पाउडर की कार्यप्रणाली के बारे में विस्तार से बताते हुए उन्होंने बताया कि इसमें एक पॉली लिंकर के साथ एक फ्लोरोसेंट डाई और डायटम फ्रस्ट्यूल्स (डायटोमाइट) को क्रिया करके विभाग की डायटम लैब में बनाया गया है. पाउडर भौतिक रूप से सतह पर पसीने में मौजूद पदार्थों के साथ

रासायनिक क्रिया करके चिपक जाता है और फिर प्रतिदीप्ति फोटोग्राफी की मदद से विकसित उंगलियों के निशान की उच्च गुणवत्ता के साथ फोटो खींची जा सकती है. पाउडर में उच्च कंट्रास्ट, प्रकृति के लिए गैर-विनाशकारी, अत्यधिक संवेदनशीलता, नवीनता और कई अन्य उन्नत विशेषताएं होने के कारण न्यायिक विज्ञान के क्षेत्र में यह अग्रणी योगदान देने वाला उत्पाद साबित होगा. इस उपलब्धि पर विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने डॉ. वंदना, उनकी टीम एवं विभाग को बधाई एवं शुभकामनाएं दी हैं. विभाग के शिक्षकों ने इस उपलब्धि पर हर्ष व्यक्त किया है.

विश्वविद्यालय: स्वभाषा के प्रयोग हेतु कार्यालयों में संपर्क अभियान चलाया

डा. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर एवं शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, नई दिल्ली के संयुक्त तत्वावधान में अंतर्राष्ट्रीय

मातृभाषा सप्ताह के अन्तर्गत चतुर्थ कार्यक्रम के रूप में स्वभाषा में नाम पट्टिका एवं कार्यालयों में हिन्दी एवं मातृभाषा का अधिकाधिक प्रयोग करने हेतु जन जागरूकता अभियान चलाया गया. इस अभियान की संरक्षिका विश्वविद्यालय की कुलगुरू प्रो. नीलिमा गुप्ता जी एवं कार्यक्रम के नोडल अधिकारी प्रो. अजीत जायसवाल उपस्थित रहे. कुलपति कार्यालय, कुलसचिव कार्यालय, संकाय मामले कार्यालय एवं अन्य कार्यालयों में संपर्क किया गया. कार्यालयों में विश्वविद्यालय के कर्मचारियों द्वारा हिन्दी एवं मातृभाषा के अधिकाधिक प्रयोग हेतु सकारात्मक प्रतिक्रिया दी.

कार्यशाला का आयोजन

डॉ. हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय के रसायनशास्त्र विभाग में आज तीन दिवसीय (दिनांक 26,27,28 फरवरी) कार्यशाला का उद्घाटन माननीया कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता जी द्वारा किया गया. इस अवसर पर प्रोफेसर हरेल थामस डायरेक्टर रिसर्च एंड

डेवलपमेंट एवं प्रो. ए. पी. मिश्रा विभागाध्यक्ष एवं संकायाध्यक्ष रसायनशास्त्र ने भी संबोधित किया. कार्यशाला की समन्वयक डॉ. ऋतु यादव थी. इस अवसर पर स्वागत भाषण प्रो. ए. पी. मिश्रा ने दिया, उन्होंने कार्यशाला की पद्धति और आवश्यकता पर प्रकाश डाला. प्रो. हरेल थामस ने डॉ. हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय में अति विशिष्ट उपकरणों की उपयोगिता एवं सेंट्रल फार एडवांस रिसर्च के व्यापक और विस्तार का संदर्भ दिया. डॉ. ऋतु यादव जो कि इस कार्यशाला की कन्वेनर है, ने कार्यशाला की रूपरेखा, कार्यशाला में सम्मिलित विभिन्न प्रतिभागी और उपयोगिता पर

प्रकाश डाला, उन्होने बताया कि स्किल वेस्ड कार्यक्रम युवाओ और रिसर्च के लिये बहुत उपयोगी है. कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता जी ने, एडवांस रिसर्च उपकरणों की फेसिलिटी को हम कैसे उपयोगी बना सकते है यह हमारे प्रयासो पर निर्भर करता है. शोधकार्य की व तकनीको की विकास हेतु महती आवश्यकता है.

इस कार्यशाला के प्रथम भाग में चार व्याख्यान हुए-

1. प्रो. र. दास - इलेक्ट्रोकेमिकल एनालिसिस
2. डॉ. अ. दुर्गबंशी - यूवी-विस स्पेक्ट्रोस्कोपी (प्रिंसिपल एण्ड इंस्ट्रूमेन्टेशन)
3. डॉ. एन. उपाध्याय - एफटी-आइआर स्पेक्ट्रोस्कोपी
4. डॉ. पी. घोष - फ्लोरेसेन्स स्पेक्ट्रोस्कोपी

वर्कशॉप में 145 के रजिस्ट्रेशन करवाया था जिसमें से 30 आवेदकों का मेरिट आधार पर चयन हुआ.

इस कार्यशाला के दूसरे भाग में विभिन्न उपकरणों पर व्याख्यान व उनकी क्रियाविधि का प्रयोगशालाओं में प्रदर्शन किया गया. प्रतिभागियों ने स्वयं भी उपकरणो पर कार्य का प्रयास किया.

1. प्रो. ए. पी. मिश्रा-इलेक्ट्रो केमिकल वर्क स्टेशन (हेड एण्ड डीन).
2. डॉ. पी. घोष - यूवी-विस/ स्पेक्ट्रोफ्लोरोमीटर
3. डॉ. के. दास - एफटी-आइआर स्पेक्ट्रोस्कोपी

इस कार्यशाला में मुख्य रूप से जिनमें कि डोफा, प्रो. अजीत जयसवाल जी, प्रो. पी. के. कठल, पूर्व विभागाध्यक्ष रसायन विभाग, प्रो. के. एस. पित्रे, विभागाध्यक्ष अपराध शास्त्र विभाग, प्रो. देवाशीष घोष, प्रो. श्वेता यादव, प्राणी शास्त्र विज्ञान, प्रो. रणवीर सिंग विभागाध्यक्ष भौतिक विभाग, प्रो. विजय वर्मा, प्रो. रत्नेश दास, प्रो. एन. पी. सिंग, डॉ. ऋतु यादव, डॉ. के.के. राज, डॉ. के. बी. जोशी, डॉ. कल्पतरू दास, डॉ. सरिता राय, डॉ. अ. दुर्गाबंशी, डॉ. पुष्पाल घोष, डॉ. नीरज उपाध्याय, डॉ. एम. एम. देशमुख, डॉ. विवेक तिवारी, डॉ. अमूल कुमार केशरवानी, डॉ. संदीप कुमार शुक्ला, डॉ. विजयश्री सूर्यवंशी, डॉ. अनिल कुमार बाहे करीब करीब 250 श्रोतागण उपस्थित हुए.

चाँपा अधिवेशन में दर्शनशास्त्र विभाग के शिक्षकगण रहे मुख्य वक्ता

दर्शन परिषद् (म.प्र. एवं छ.ग.) का 19 वाँ वार्षिक राष्ट्रीय अधिवेशन एवं राष्ट्रीय शोध संगोष्ठी का आयोजन दर्शन परिषद् (म.प्र. एवं छ.ग.) एवं भारतीय दार्शनिक अनुसन्धान परिषद् नई दिल्ली के संयुक्त तत्वाधान में नवीन शासकीय महाविद्यालय नवागढ़, जिला जाँजगीर चाँपा (छ.ग.) द्वारा चाँपा (छ.ग.) में दिनांक 24-25 फरवरी 2024 को आयोजित किया गया. कार्यक्रम के मुख्य अतिथि आचार्य डॉ. अरूण दिवाकरनाथ वाजपेयी कुलपति अटल बिहारी वाजपेयी विश्वविद्यालय बिलासपुर रहे. इस अधिवेशन के केन्द्रीय विषय ‘एकात्म मानव दर्शन की प्रासंगिकता के बीज वक्ता दर्शनशास्त्र विभाग डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर

के विभागाध्यक्ष प्रो. अम्बिकादत्त शर्मा रहे. प्रो. शर्मा ने अपने बीज वक्तव्य में पं. दीनदयाल उपाध्याय के एकात्म मानववादी दर्शन की वर्तमान परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिकता एवं विनियोग पर नई दृष्टि से प्रकाश डाला. इसके अतिरिक्त दर्शन परिषद् के इस आयोजन में प्रो. अशोक कुमार चटर्जी बौद्ध व्याख्यानमाला के मुख्य वक्ता के रूप में भी प्रो. शर्मा ने अपना प्रभावपूर्ण व्याख्यान दिया.

प्रो. अम्बिकादत्त शर्मा के नेतृत्व में ही दर्शनशास्त्र विभाग के शिक्षक डॉ. सत्यनारायण देवलिया एवं डॉ. नरेन्द्र कुमार बौद्ध भी परिषद् के आमंत्रण पर दो अन्य व्याख्यानमालाओं के मुख्य वक्ता के रूप में चाँपा अधिवेशन में सहभागी रहे. डॉ.

सत्यनारायण देवलिया ने प्रो. सुरेन्द्र सिंह नेगी व्याख्यानमाला में ''पं. दीनदयाल उपाध्याय की एकात्म मानवादी पुरुषार्थ की अवधारणा शीर्षक पर मुख्यवक्ता के रूप में अपना शोध आलेख प्रस्तुत किया वहीं डॉ. नरेन्द्र कुमार बौद्ध ने श्री कीर्तियोग व्याख्यानमाला के अन्तर्गत ''योग: संयमित जीवन पद्धति का मूलाधार शीर्षक पर मुख्य वक्ता के रूप में अपना शोध आलेख प्रस्तुत किया. दर्शनशास्त्र विभाग के इन सभी वक्ताओं के व्याख्यानों की सभी प्रतिभागियों ने प्रशंसा की. दर्शन परिषद् के अध्यक्ष प्रो. भरत कुमार तिवारी महासचिव प्रो. श्रीकान्त मिश्र स्थानीय सचिव नीवन शासकीय महाविद्यालय, नवागढ़ के प्राचार्य प्रो. बी.के. पटेल एवं सत्राध्यक्षों ने वक्ताओं को सम्माननिधि व प्रमाण-पत्र प्रदान कर मंच से सम्मानित किया. दर्शनशास्त्र विभाग, डॉ. हरीसिंह गौर केन्द्रीय विश्वविद्यालय की दर्शन परिषद् के अधिवेशन में गौरवपूर्ण सहभागिता रही. चाँपा के अधिवेशन के स्थानीय सचिव प्रो. बी.के. पटेल के उत्तम आतिथ्य सत्कार व व्यवस्थाओं के लिए सभी ने धन्यवाद व आभार प्रकट किया.

विश्वविद्यालय: हिंदी विभाग के डॉ. आशुतोष को मिला राष्ट्रीय वनमाली कथा सम्मान

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के डॉ. आशुतोष को 'वनमाली सृजन पीठ' द्वारा राष्ट्रीय वनमाली कथा

सम्मान-2024 के अंतर्गत 'युवा कथा सम्मान' दिया गया है। दिनांक 26 से 28 फरवरी तक भोपाल के रवींद्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय में आयोजित किये जा रहे तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी-समारोह में उन्हें यह पुरस्कार प्रदान किया गया. हिंदी साहित्य में यह एक बहुचर्चित और प्रतिष्ठित राष्ट्रीय सम्मान है. सम्मानस्वरूप उन्हें प्रशस्ति-पत्र और इक्यावन हजार रुपये की राशि प्रदान की गई. समारोह में भारतीय सांस्कृतिक चिंतन के लिए भारत सरकार द्वारा पद्मश्री से सम्मानित प्रसिद्ध जापानी चिंतक टोमियो मीजो कामी, रवींद्रनाथ टैगोर विवि के कुलाधिपति संतोष

चौबे, कुलपति प्रो रजनीकांत, प्रख्यात लेखिका और साहित्यकार ममता कालिया, प्रसिद्ध लेखक मुकेश वर्मा, प्रख्यात हिंदी कथाकार शिवमूर्ति की गरिमामयी उपस्थिति में डॉ. आशुतोष को यह सम्मान प्रदान किया गया.

वर्ष 2010 से हिन्दी विभाग में कार्यरत डॉ. आशुतोष देश के समकालीन कथा जगत के सुप्रसिद्ध हस्ताक्षर हैं. उनकी पहली कहानी 'राम बहोरन की अनात्मकथा' 2011 में तद्भव पत्रिका में प्रकाशित हुई थी. कहानियों की पहली पुस्तक 'मरें तो उम्र भर के लिए' भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली से और दूसरी पुस्तक 'उम्र पैंतालीस बतलाई गयी थी' आधार प्रकाशन, चण्डीगढ़ से प्रकाशित हुई है. इसी वर्ष राष्ट्रीय पुस्तक मेला दिल्ली में वाणी प्रकाशन से 'मरें तो उम्र के लिए' पुस्तक का चौथा संस्करण प्रकाशित कर जारी किया गया है. आशुतोष द्वारा लिखित, संपादित और सहलेखन में लगभग दस पुस्तकें प्रकाशित हैं. आशुतोष की लिखित पुस्तक 'प्रेमचन्दोत्तर हिन्दी कहानी : मूल्य और मूल्यांकन' को राष्ट्रीय शिक्षा नीति की पाठ्यचर्या के अंतर्गत यूजीसी द्वारा बारह भारतीय भाषाओं में प्रकाशित किया जा रहा है. अपने विशिष्ट कथा लेखन के लिए राष्ट्रीय स्तर पर भारतीय ज्ञानपीठ नवलेखन अनुशंसा पुरस्कार-2012, भारतीय भाषा परिषद कोलकाता का युवा पुरस्कार-2016 उन्हें प्राप्त हो चुके हैं. डॉ. आशुतोष को मिलने वाले इस राष्ट्रीय सम्मान से हिन्दी विभाग और विश्वविद्यालय का अखिल भारतीय स्तर पर अकादमिक एवं साहित्यिक गरिमा में अभूतपूर्व श्रीवृद्धि हुई है. कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता एवं समस्त विश्वविद्यालय परिवार ने उन्हें बधाई एवं शुभकामनाएं प्रेषित की हैं.

'यदि देश को हो आगे बढ़ाने की आशा तो अपनाओं मातृभाषा' डॉ. हरीसिंह गौर केन्द्रीय विश्वविद्यालय में मातृभाषा में सृजनात्मक लेखन प्रतियोगिता का आयोजन

आज दिनांक 27 फरवरी को रानी लक्ष्मीबाई कन्या छात्रावास में मातृभाषा में सृजनात्मक लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया. डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय एवं शिक्षा संस्कृति न्यास द्वारा मातृ भाषा दिवस का आयोजन 21 फरवरी से 28 फरवरी किया जा रहा है. जिसके अंतर्गत दिनांक 27 फरवरी 2024 को विश्वविद्यालय के रानी लक्ष्मीबाई कन्या छात्रावास में सृजनात्मक लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. एम.एस. कर्णा, डॉ. अनुपमा चंदा एवं मुख्य प्रतिपालिका डॉ. रश्मि सिंह, डॉ. प्रीति बागड़े, डॉ. सुषमा यादव, डॉ. सुप्रभा दास, डॉ. स्वेता शर्मा आदि उपस्थित रहे. इस कार्यक्रम की समन्वयक डॉ. वंदना राजोरिया एवं शिवानी खरे रही. प्रतियोगिता में निवेदिता, सरस्वती तथा रानी लक्ष्मीबाई कन्या छात्रावास की छात्राओं ने भाग लिया. छात्राओं ने हिंदी, अवधी, कन्नड़, उड़िया, बुंदेली इत्यादि भाषाओं में अपनी कवितायें, कहानियां तथा रचनात्मक लेख प्रस्तुत किये. छात्राओं ने बुंदेली संस्कृति, अवध के राममंदिर, छात्रावास में उनका जीवन, कर्नाटक के छोटे से सागर से म.प्र. के विशाल सागर तक का सफर, पिता की भूमिका

आदि विषयों पर रचनात्मक लेखन किया. अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस समारोह के हिस्से के रूप में, प्रतियोगिता का उद्देश्य भाषाई विविधता को बढ़ावा देना और मातृभाषाओं की समृद्धि का जश्न मनाना था. जिसमें छात्राओं ने बढ़ चढ़ कर अपनी-अपनी मातृभाषा में अपनी रचनात्मक प्रतिभा का प्रदर्शन किया और इस प्रतियोगिता के आयोजन पर हर्ष व्यक्त किया.

दिनांक 28.02.2024 को इस मातृभाषा दिवस का समापन समारोह है, जिसमें प्रथम द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले प्रतिभागियों को पुरुस्कृत किया जाएगा.

उत्कृष्टता एवं अतिरिक्तता ही व्यक्तित्व की सफलता के मूल मंत्र हैं - चार्टर्ड अकाउंटेंट श्री गर्ग

वाणिज्य विभाग, डॉ. हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर में चंडीगढ़ से पधारे चार्टर्ड अकाउंटेंट श्री प्रेम गर्ग का एक विशेष व्याख्यान आयोजित किया गया. सी.ए. गर्ग ने अपने व्याख्यान का आरंभ छात्र जीवन में लक्ष्य निर्धारण की भूमिका से किया

तथा बताया कि लक्ष्य चाहे कितना भी जटिल क्यों ना हो, ईमानदारी एवं सत्यनिष्ठ पूर्ण कार्यशैली से प्राप्त किया जा सकता है. इसके लिए आपने व्यक्तित्व में निखार एवं सफलता के लिए उत्कृष्टता सिद्धांत की चर्चा की जिसमें आपने बताया कि किसी भी कार्य को हमें अपना सर्वश्रेष्ठ देना चाहिए तथा प्रयास में तुलनात्मक रूप से थोड़ा अधिक देने की कोशिश करना चाहिए. आपने बताया कि मानव जीवन का लक्ष्य समाज से लेना ही ना होकर समाज को जो हमारे पास है उसे वापस करना भी होना चाहिए जिससे समाज के कमजोर एवं वंचित वर्ग को विकास के अवसर प्राप्त हो सके. इस प्रकार की कार्यशैली से वंचित एवं इक्षित वर्ग को रोजगार के अवसर प्राप्त हो सकेंगे. आपने जीवन के विभिन्न पहलुओं में ईमानदार रहते हुए अपने कर्मभूमि में कैसे डटे रहना है, को बहुत ही सरल एवं स्पष्ट रूप से प्रस्तुत किया.

आपके द्वारा प्रस्तुत तथ्यों पर शोधार्थियों एवं छात्रों ने प्रश्न पूछे. सर्वप्रथम दिव्यांशु ने पूछा की संस्थाओं में व्यय की प्राथमिकता के कौन से क्षेत्र होने चाहिए. इसके उत्तर में श्री गर्ग ने बताया की केंद्रीय संस्थानों में व्यय की मदें शासन पूर्व से ही निर्धारित करती है. अतः निर्धारित प्रक्रिया एवं नियमों का पालन करते हुए प्राथमिक राशि आवंटन पर व्यय का निर्धारण संस्थाओं द्वारा सुनिश्चित किया जाता है. तत्पश्चात एम. कॉम. के छात्र संस्कार जैन ने पूछा कि सर्वोत्तम वियोग की प्राथमिकता क्या होना चाहिए? इसके प्रति उत्तर में लेखविद् श्री गर्ग ने बताया कि संपूर्ण आय का 25% भाग जीवन यापन पर व्यय होना चाहिए। आगामी 25% अपने व्यापार एवं पेशेगत कौशल के विकास पर खर्च होना चाहिए. 25% राशि कर एवं सामाजिक दान में व्यय होना चाहिए तथा अंतिम शेष 25% राशि में से सोना एवं स्थाई संपत्तियों में विनियोग करना चाहिए. वाणिज्य विभाग के शोधार्थी सुभाष गुप्ता द्वारा वियोग पर जोखिम के निर्धारण के संबंध में प्रश्न पूछा गया जिस पर श्री गर्ग ने बताया कि

दीर्घकालिक निवेश के लिए सबसे कम जोखिम वर्तमान में प्रचलित सावरेन गोल्ड बॉन्ड योजना में है तथा स्थाई वियोग के लिए भूमि को प्राथमिकता में रखा जा सकता है. शोध छात्रा पूजा साहू ने पूछा कि लेखांकन के क्षेत्र में शोध के कौन-कौन से अनछुए क्षेत्र है? अपने उत्तर में श्री गर्ग ने अपने अभी तक के अनुभव के आधार पर बताया कि उत्पादन लागत कम करने के लिए लेखांकन क्षेत्र में शोध कम हुए हैं तथा शोध के लिए यह एक अच्छा क्षेत्र हो सकता है इसके अतिरिक्त स्वयत्त शासी केंद्रीय संस्थानों के लेखें पर भी गहन शोध कार्य होना चाहिए. इसके अतिरिक्त वर्तमान समय में कृषि आय को बढ़ाने के लिए कृषि कार्य में लेखांकन को नया क्षेत्र बनाया जा सकता है. एम. कॉम. के छात्र विवेक तिवारी ने भगवान कृष्ण के प्रबंध में योगदान पर प्रश्न किया जिस पर श्री गर्ग ने बताया कि जीवन की 100% समस्याओं का निदान श्री गीता में है। जीवन के आरंभिक वर्षों से गीता का अध्ययन करने से सांसारिक समस्याओं का निदान करने की क्षमता स्वत ही विकसित हो जाती है. व्यक्तित्व के द्वारा पूर्व में निर्धारित किसी भी परिकल्पना को साकार करने के दो उत्कृष्ट उदाहरण सिंगापुर की ईमानदार राष्ट्रों में गिनती, दुबई की विकसित राष्ट्र के रूप में उभरना, दृढ़ इच्छा शक्ति एवं इमानदार कार्यशैली के परिणाम है. आपने 60 वर्ष से ऊपर के वरिष्ठ नागरिकों के लिए जो अपने बच्चों से पृथक रहते हैं, उनके लिए एक मॉडल विकसित करने की चर्चा की. आपने बताया कि यदि हम ऐसे महिला एवं पुरुष को नर्सिंग स्टाफ के रूप में तैयार करें जो वरिष्ठ नागरिकों को पृथक पृथक नर्सिंग सेवाएं दे सकें. इससे एक ओर व्यक्तियों को रोजगार मिलेगा तथा दूसरी ओर वरिष्ठ नागरिकों को उम्र के इस पड़ाव पर सहारा मिलेगा. यह समाज के वरिष्ठ नागरिकों के लिए एक महत्वपूर्ण मॉडल होगा. दूसरे मॉडल पर आपने भीख मांगने वाले बच्चों पर अपने उदगार व्यक्त किए. उन्होंने बताया कि जो बच्चे आठवीं-दसवीं की शिक्षा प्राप्त कर लेते हैं वह कभी भी भीख नहीं मांगते. अतः मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारा, सड़कों तथा चौराहों पर अशिक्षित भिखारियों को उनके भीख मांगने के समय ही शिक्षित किया जाना चाहिए तथा उन्हें औपचारिक शिक्षा के लिए स्कूल-कॉलेज आदि की फीस भरने में भी मदद करनी चाहिए. इससे भीख मांगने वालों की संख्या कम होती जाएगी. वाणिज्यिक विभाग अध्यक्ष प्रो. जे.के. जैन द्वारा श्री गर्ग का स्वागत किया गया तथा उनके सामाजिक तथा पेशेगत व्यक्तित्व के बारे में बताया। आपने बताया कि जिस पर मां सरस्वती की कृपा होगी उसे कभी लक्ष्मी की कमी नहीं होगी. कार्यक्रम का आरंभ एवं समापन मां सरस्वती व डॉ. गौर को नमन करके किया गया. वाणिज्य के स्नाकोत्तर छात्र संस्कार जैन द्वारा सभी को धन्यवाद ज्ञापित किया गया.

मातृभाषा प्रेम, स्नेह और समर्पण की भाषा है- डॉ. अजय तिवारी

विश्वविद्यालय में मातृभाषा सप्ताह कार्यक्रम का समापन प्रसंग आयोजित

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय एवं शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास नई दिल्ली के संयुक्त तत्वावधान में मातृभाषा में जीवन और व्यवहार विषय पर 21 से 28 फरवरी 2024 तक साप्ताहिक आयोजन किया गया जिसका समापन प्रसंग कुलसचिव सम्मेलन कक्ष में आयोजित किया गया. कार्यक्रम के मुख्य अतिथि स्वामी विवेकानंद विश्वविद्यालय सागर के कुलाधिपति डॉ. अजय तिवारी ने उद्बोधन देते हुए कहा कि मातृभाषा स्नेह, लगाव, प्रेम और समर्पण की भाषा है. मनुष्य पैदा होने के साथ ही मातृभाषा से जुड़ जाता है. इस भाषा में अपनत्व के कारण मनुष्य अपनी माँ से जुड़ जाता है. दुनिया की महान रचनाएं मूलतः मातृभाषा में ही लिखी गई हैं. आज इंजीनियरिंग, मेडिकल जैसी पढ़ाई स्थानीय भाषाओं में होने लगी है. सरकारी दस्तावेजों के प्रारूपों एवं काम-काज में भी स्थानीय भाषा का उपयोग बढ़ा है. उन्होंने त्रिभाषा सूत्र की भी चर्चा की। उन्होंने कहा कि कई भारतीय भाषाएं विलुप्त होने के कगार पर हैं. हम सबका कर्तव्य है कि हम अपनी भाषा को बचाएं, संरक्षित करें. यह तभी

संभव है जब हम अपनी मातृभाषा का ज्यादा से ज्यादा उपयोग करें. स्वभाषा मनुष्यता की भाषा है, संवेदना की भाषा है.

मौलिक सोच एवं विचार मातृभाषा में ही आते हैं. उन्होंने विभिन्न प्रतियोगिताओं में पुरस्कृत किये जाने वाले विद्यार्थियों को बधाई दी. सम्पूर्ण आयोजन के नोडल अधिकारी एवं संकाय मामले के निदेशक प्रो. अजीत जायसवाल ने कहा कि मातृभाषा से प्रेम नैसर्गिक है. तमाम शिक्षा नीतियों के बावजूद लंबे समय तक मातृभाषा शिक्षा की भाषा नहीं बन पाई. आज राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के माध्यम से यह साकार हो रहा है. मातृभाषा पर गर्व होना चाहिए क्योंकि यह हमें आत्मविश्वास प्रदान करती है, संवाद का सबसे सशक्त माध्यम है तथा यह हमें दूसरों से जोड़ने में मदद करती है. हमें सांसारिक ज्ञान मातृभाषा में ही मिलता है. आज हम संकल्प लें कि हम ज्यादा से ज्यादा अपनी मातृभाषा का प्रयोग करेंगे तभी हम इसे जीवंत रख पाएंगे. इस अवसर पर केंद्रीय विद्यालय एवं विश्वविद्यालय छात्रावास में आयोजित मातृभाषा में सृजनात्मक लेखन प्रतियोगिता में प्रथम, द्वितीय और तृतीय स्थान पर रहे विद्यार्थियों को अतिथियों ने पुरस्कृत किया. कार्यक्रम का संचालन डॉ. वंदना राजोरिया ने किया तथा साप्ताहिक आयोजन का प्रतिवेदन प्रस्तुत किया. इस अवसर विवि मीडया अधिकारी डॉ. विवेक जायसवाल, डॉ.

किरण आर्या, स्वामी विवेकानंद विश्वविद्यालय के शिक्षक डॉ. ममता सिंह, डॉ. सुखदेव बाजपेयी, डॉ. उमेश आर्य, केंद्रीय विद्यालय के प्राचार्य आर एस वर्मा, शिवानी खरे तथा कई विद्यार्थी एवं शिक्षक उपस्थित थे.

भारतीय संस्कृति और सभ्यता का केंद्र बिंदु है मध्य प्रदेश- प्रो. विभा त्रिपाठी

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.) में प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्त्व विभाग एवं भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद के संयुक्त तत्वाधान में आज 28 फरवरी को दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का उद्घाटन सत्र आयोजित किया गया, इसके अंतर्गत मध्य प्रदेश की कला एवं संस्कृति के विभिन्न पक्षों पर शोध पत्र प्रस्तुत किये जा रहे हैं, उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता प्रोफेसर पी.के. कठल ने की. उद्घाटन सत्र की शुरुआत प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्त्व विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. नागेश दुबे के स्वागत उद्बोधन से हुआ उन्होंने मंचासीन कार्यवाहक कुलपति प्रोफेसर पी.के. कठल, मुख्य अतिथि प्रोफेसर आलोक त्रिपाठी, मुख्य वक्ता प्रोफेसर विभा त्रिपाठी, अधिष्ठाता प्रोफेसर डी.एस.राजपूत व सभागार में

उपस्थित अन्य विद्वत जनों का स्वागत किया और उन्होंने कुलपति प्रोफेसर नीलिमा गुप्ता का मार्गदर्शन के लिए आभार व्यक्त किया. मुख्य वक्ता काशी हिंदू विश्वविद्यालय की प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्त्व विभाग की एमिरेट्स प्रोफेसर,

प्रो. विभा त्रिपाठी ने अपने बीज वक्तव्य में मध्य प्रदेश के पुरातात्विक व ऐतिहासिक पहलुओं पर विस्तार से प्रकाश डालते हुए बताया की किस प्रकार मध्य प्रदेश भारतवर्ष की संस्कृति और सभ्यता का प्रतिनिधित्व करता है, जिससे भारत के हृदय स्थल के रूप में इसकी पहचान और प्रभावी हो जाती है, मध्यप्रदेश भारतीय सभ्यता और संस्कृति के केंद्र बिंदु में रखे जाने के विभिन्न कारणों को अपने अंदर सहेजे हुए "आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतोऽदब्धासो अपरीतास उद्भिदः" के श्लोक को चरितार्थ कर रहा है.

उन्होंने मध्य प्रदेश में ताम्रश्मीय काल से लेकर ऐतिहासिक काल तक के दौरान पाए गए पुरातात्विक अवेशेषों व पुरास्थलों के महत्व के विषय में विस्तार से बताया व इस दौरान के विभिन्न पुरास्थल आदमगढ़, कायथा, एरण, खजुराहो, चौसठ योगिनी मन्दिर इत्यादि पुरास्थलों और प्राप्त पुरातात्विक महत्व के पुरावशेषों पर विस्तार से प्रकाश डाला और उन्होंने शोधार्थियों से आगे विभिन्न पुरातात्विक महत्व के अनछुए पहलुओं पर स्वतन्त्र सोच के साथ कार्य करने की सलाह दी.

मुख्य अतिथि प्रो. आलोक त्रिपाठी, अतिरिक्त महानिदेशक, भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण विभाग, (नई दिल्ली) ने मध्य प्रदेश की कला और संस्कृति के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डालने के साथ औपनिवेशिक मानसिकता से हटकर पुरातात्विक महत्व के पुरास्थलों और प्राप्त सामग्री की स्वतन्त्र व्याख्या करने पर बल दिया उन्होंने यह अपील की, कि प्राप्त अवशेषों का अध्ययन उस समय के मानव और उनके कार्यप्रणाली उनकी सामाजिक, आर्थिक व्यवस्था को जानने के लिए करने की आवश्यकता है, ना की परंपरागत मानसिकता के अनुसार साथ ही उन्होंने आने वाले शोधार्थियों और पुरातत्व के विद्यार्थियों को नवीन दृष्टिकोण से कार्य करने की सलाह दी.

अधिष्ठाता प्रोफेसर डी.एस.राजपूत ने भी कला और संस्कृति के विषय पर अपनी राय और अपने विचारों को साझा किया साथ ही उन्होंने कहा की हमारे जीवन जीने की शैली को संरक्षित करने का कार्य कला और संस्कृति करती है, वर्तमान में आवश्यकता है हमारे अतीत की कला और संस्कृति के विषय में अधिक जानने की और उनके योगदान को समझने की.

कार्यवाहक कुलपति प्रोफेसर पी.के. कठल ने इसे गौरव का पल बताया और कहा कि जब हम किसी गूढ़ विषय को समझने का प्रयत्न करते हैं, तो हमें अपनी बुद्धि का उपयोग करना चाहिए विज्ञान का कार्य चीजों को जटिल तरीके से पेश करना नही है अपितु उसको सरलता के साथ प्रस्तुत करना है वर्तमान में आवश्यकता है, कि जब हम किसी वस्तु को देखें तो उसे एक नए नजरिए से देखने का प्रयास करें ना कि विद्यमान ज्ञान के अनुरूप.

विश्वविद्यालय के प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्त्व विभाग व बीरबल साहनी पुराविज्ञान संस्थान लखनऊ (उ.प्र.) के मध्य विभिन्न अकादमिक एवं शोध कार्यों हेतु हुआ एमओयू

इस अवसर डॉ. हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय के प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्त्व विभाग व बीरबल साहनी पुराविज्ञान संस्थान लखनऊ (उ.प्र.) के मध्य विभिन्न अकादमिक एवं शोध कार्यों के समझौता ज्ञापन (MoU) पर हस्ताक्षर

विश्वविद्यालय के कुलसचिव प्रो. सत्यप्रकाश उपाध्याय व डॉ. नीरज राय, निदेशक बीरबल साहनी वानस्पतिक शोध संस्थान लखनऊ के द्वारा किया गया. कार्यक्रम के समन्वयक और निदेशक डॉ सुरेंद्र यादव ने आभार ज्ञापित किया और साथ ही कार्यक्रम के रूपरेखा के विषय में बताया. कार्यक्रम का सफल संचालन डॉ पंकज सिंह के द्वारा किया गया. उद्घाटन सत्र के पश्चात दो तकनीकी सत्रों का आयोजन किया गया प्रथम तकनीकी सत्र के विषय विशेषज्ञ प्रोफेसर बीके श्रीवास्तव, अध्यक्ष इतिहास विभाग थे. प्रोफेसर सरोज गुप्ता ने तकनीकी सत्र की अध्यक्षता की डॉ. निधि पांडे ने इस तकनीकी सत्र का संचालन किया इस तकनीकी सत्र के दौरान कुल पांच शोध पत्र प्रस्तुत किए गए. द्वितीय तकनीकी सत्र की अध्यक्षता प्रोफेसर आनंद प्रकाश त्रिपाठी अध्यक्ष हिंदी विभाग, डॉ. हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर ने की. विषय विशेषज्ञ प्रोफेसर शिवाकांत वाजपेयी रहे, इस तकनीकी सत्र का संचालन डॉ. आर.पी. सिंह ने किया इस तकनीकी सत्र के दौरान कुल 10 शोध पत्र प्रस्तुत किये गए. इस सत्र में डॉ. नीरज राय, डॉ. सुरेंद्र चौरसिया, डॉ. मनोज कुर्मी, डॉ. मनोज कुमार सिंह, डॉ. उमा पराशर एवं डॉ. निधि पांडेय आदि ने अपने शोध पत्र प्रस्तुत किये. कार्यक्रम में विभाग के अतिथि विद्वान डॉ. शिव कुमार परोचे, डॉ. मशकूर अहमद कादरी, संस्कृत विभाग के डॉ. शशि कुमार सिंह, डॉ. नॉनिहाल गौतम, डॉ. संजय कुमार, डॉ. किरण आर्या, डॉ. संजय बारोलिया, डॉ. प्रीति बागड़े, भरत यादव, संजय आठिया, यामिनी योगी, ईशा आदि उपस्थित थे.

विश्वविद्यालय : कम्प्यूटर विज्ञान एवं अनुप्रयोग विभाग में कैम्पस प्लेसमैंट का आयोजन

कम्प्यूटर विज्ञान एवं अनुप्रयोग विभाग के BCA, MCA, B.Com., B.B.A. एवं M.B.A. के विद्यार्थियों के लिए M/s

MANDOT SECURITIES Pvt. Ltd., Indore की कंपनी द्वारा कैम्पस प्लेसमैंट का आयोजन दिनांक 29 फरवरी 2024 को कम्प्यूटर विज्ञान एवं अनुप्रयोग विभाग में आयोजित हुआ. जिसमें लगभग 70 विद्यार्थियों ने भाग लिया. इस आयोजन के उद्घाटन सत्र में प्रो. जी.एल. पुण्ताम्बेकर, समन्वयक, प्लेसमेंट कौशल विकास एवं स्टार्टअप

सेल एवं डॉ. अभिषेक बंसल, विभागाध्यक्ष, कम्प्यूटर विज्ञान विभाग द्वारा दीप प्रज्जवलित कर कार्यक्रम की शुरूआत की. इसके पश्चात कंपनी से आये एच.आर. हेड श्री सतीश तिवारी द्वारा अपने उद्बोधन में M/s MANDOT SECURITIES Pvt. Ltd., Indore के संबंध में विस्तृत जानकारी छात्रों को दी. इसके बाद प्लेसमेंट से संबंधित जानकारी दी. डॉ. रंजीत रजक, विभागीय प्लेसमेंट इंचार्ज, कम्प्यूटर विज्ञान विभाग द्वारा उद्घाटन सत्र में धन्यवाद ज्ञापित किया गया. इस आयोजन को सफल बनाने में विभाग के शिक्षक डॉ. रंजीत रजक, श्री कमलकान्त अहिरवार, श्री गौरव जैन, श्री प्रशान्त कुमार नामदेव, श्रीमति रिचा पाठक, श्री सतीश चैरसिया एवं बी.सी.ए. तथा एम.सी.ए. विभाग के बड़ी संख्या में विद्यार्थियों ने हिस्सा लिया है.

विश्वविद्यालय: सरस्वती कन्या छात्रावास को किया 'राष्ट्र को समर्पित'

श्रेष्ठ शैक्षिक परिवेश ज्ञानार्जन को सहज और मानवीय बनाता है : डॉ. वीरेंद्र कुमार

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर में सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय, भारत सरकार के सौजन्य से अन्य

पिछड़े वर्ग की छात्राओं के लिए नव-निर्मित सरस्वती कन्या छात्रावास का लोकार्पण एवं 'राष्ट्र को समर्पण' कार्यक्रम विश्वविद्यालय के अभिमंच सभागार में आनलाइन माध्यम से आयोजित किया गया. कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुए सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्री डॉ. वीरेंद्र कुमार ने कहा कि देश के अनुसूचित एवं अन्य पिछड़ा वर्ग के विद्यार्थियों के उत्थान एवं उनको शिक्षा एवं समाज की मुख्य धारा से जोड़ने के लिए माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता अनेक पहल कर रहा है इसी कड़ी में आज पूरे देश के विभिन्न क्षेत्रों के कुल 10 ओबीसी छात्रावासों को राष्ट्र के नाम समर्पित किया गया है. जिसमें लगभग 1400 छात्रों के रहने की व्यवस्था हो सकेगी. यह भी अत्यंत महत्वपूर्ण है कि इनमें चार

छात्रावास सिर्फ छात्राओं के लिए आरक्षित है. मंत्रालय द्वारा सिर्फ छात्रावास के भवनों का ही नहीं अपितु इन छात्रावासों के सम्पूर्ण संसाधनो का भी विकास किया गया है जिससे इस संवर्ग के विद्यार्थियों को शिक्षा हेतु बेहतर सुविधा मिल सके. हमारा मानना है कि एक श्रेष्ठ शैक्षिक परिवेश ज्ञान के संधान को सहज और मानवीय बनाने में सहयोगी बनता है. कार्यक्रम को सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय के राज्य मंत्री माननीय डॉ. रामदास अठावले, राज्य मंत्री माननीय श्री ए. नारायण स्वामी, राज्य मंत्री सुश्री प्रतिमा भौमिक ने भी संबोधित किया. विश्वविद्यालय में अभिमंच सभागार में कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रभारी कुलपति प्रो. पी के कठल ने किया इस अवसर पर प्रभारी कुलसचिव डॉ. एस.पी. उपाध्याय, प्रो. चंदा बेन, प्रो. आनंद कुमार त्रिपाठी सहित अनेक गणमान्य शिक्षक, अधिकारी, कर्मचारी एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे. कार्यक्रम का संचालन एवं आभार ज्ञापन डॉ. शशि कुमार सिंह ने किया.

डॉक्टर हरीसिंह गौर, विश्वविद्यालय, सागर एवं हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय के मध्य हुआ अकादमिक अनुबंध

ज्ञान और संसाधनों का पारस्परिक विनिमय भविष्य कि मांग है : प्रो. नीलिमा गुप्ता

डॉक्टर हरीसिंह गौर, विश्वविद्यालय, सागर एवं हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला के मध्य शैक्षिक अनुसंधान,

कौशल विकास, गुणवत्ता उन्नयन, सामाजिक सरोकार से संबंधित विभिन्न विषयों को लेकर एक पूर्ण कालिक समझौता ज्ञापन हस्ताक्षर किया गया इस अवसर पर हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय की ओर से कुलपति प्रो. सत प्रकाश बंसल, कुलसचिव प्रो. सुमन शर्मा, अधिष्ठाता विद्यार्थी कल्याण प्रो. सुनील एवं एवं हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर की कुलपति प्रोफेसर नीलिमा गुप्ता उपस्थित रहे. इस समझौता ज्ञापन के अनुसार दोनों विश्वविद्यालयो में विभिन्न शैक्षणिक विषयों में अनुसंधान, शिक्षा एवं नवाचारी परियोजनाओं को एक दूसरे के समन्वय से पूर्ण करने की बात कही गई. इसके साथ ही साथ दोनों विश्वविद्यालय अपनी भौगोलिक एवं क्षेत्रीय विविधता के आधार विभिन्न कौशल विकास कार्यक्रम जैसे मधुमक्खी पालन, मत्स्य पालन, रेशम कीट पालन, मशरूम की खेती, पर्यटन और ट्राइबल से संबंधित पाठ्यक्रमों को शुरू करने एक दूसरे का सहयोग करेंगे.

इस अवसर पर डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर की कुलपति प्रोफेसर नीलिमा गुप्ता ने कहा कि दोनों विश्वविद्यालय ज्ञान,

संस्कृति, सामाजिक सरोकार और संसाधनों के पारस्परिक विनिमय के माध्यम से प्रभावी पाठ्यक्रमों को निर्मित करने का प्रयास करेंगे जिससे दोनों विश्वविद्यालय के विद्यार्थी एवं हितधारक इसका भरपूर लाभ ले सकें. इसके अलावा मूल्य शिक्षा से संबंधित पाठ्यक्रम, आउटरेज कार्यक्रम, दूरस्थ शिक्षा पाठ्यक्रम आदि से संबंधित नए डिप्लोमा प्रमाण पत्र, पीजी डिप्लोमा, अल्पकालिक पाठ्यक्रम आदि विकसित किए जाएंगे. समझौता ज्ञापन की समय अवधि के दौरान शोध के परिणामों को संयुक्त रूप से पेटेंट कराया जाएगा और पेटेंट से प्राप्त परिणामों का लाभ एक- दूसरे से साझा किया जाएगा. आंतरिक, राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय एजेंसियों द्वारा वित्त पोषण के लिए विभिन्न अनुसंधान कार्यक्रमों को विकसित करने पर जोर देने की बात भी कही गई.

------------//------------

खबरों में विश्वविद्यालय

भारतीय ज्ञान परंपरा की दुनिया को आवश्यकता

परमार्थ दर्शन एवं शैव दर्शन पर विवि के संस्कृत विभाग द्वारा आयोजित व्याख्यान में कुलपति प्रो. गुप्ता ने कहा

नवभारत न्यूज

सागर 31 जनवरी.डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय एवं भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद् नई दिल्ली के तत्त्वावधान में विवि के संस्कृत विभाग द्वारा केन्द्रीय संस्कृत विवि नई दिल्ली के पूर्व कुलपति प्रो.राधावल्लभ त्रिपाठी का परमार्थ दर्शन तथा शैव दर्शन विषय पर सारस्वत व्याख्यान आयोजित हुआ.

शिव की शक्ति के द्वारा जगत की रचना होती है : प्रो. तिवारी

कार्यक्रम की अध्यक्षता कुलपति प्रो.नीलिमा गुप्ता ने की. प्रो.अम्बिकादत्त शर्मा ने परमार्थ दर्शन एवं शैव दर्शन की आधारभूत रूपरेखा पर प्रकाश डाला. प्रो.राधावल्लभ त्रिपाठी ने कहा कि उन्नीसवीं शताब्दी के महानतम् दार्शनिक रामावतार शर्मा परमार्थ दर्शन के स्वतंत्र दार्शनिक सिद्धांत के प्रस्तोता आचार्य हैं. प्रो. त्रिपाठी ने कहा कि शैव दर्शन के अनुसार सम्पूर्ण जगत शिवशक्तिमय है. शिव की शक्ति के द्वारा जगत की रचना होती है. कुलपति प्रो. गुप्ता ने कहा कि भारतीय ज्ञान परम्परा की आवश्यकता न सिर्फ भारत को है बल्कि पूरे विश्व को इसकी आवश्यकता है. परमार्थ दर्शन एवं शैव दर्शन भारतीय ज्ञान परम्परा के महत्वपूर्ण सिद्धांत हैं. कार्यक्रम के संयोजक प्रो.आनंदप्रकाश त्रिपाठी ने कार्यक्रम के आरंभ में स्वागत उद्बोधन दिया. अभिनंदन-पत्र का वाचन डॉ.नौनिहाल गौतम ने किया. संचालन डॉ.शशिकुमार सिंह ने किया.आभार डॉ.संजय कुमार ने माना. इस अवसर पर प्रो. संतोष शुक्ला, प्रो.एपी मिश्रा, प्रो.जीएल पुणताम्बेकर, प्रो.चंदा बेन, प्रो.राजेंद्र यादव मौजूद थे.

शैव दर्शन के अनुसार सम्पूर्ण जगत शिवशक्तिमय है: आचार्य राधावल्लभ

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

सागर. डॉ. हरिसिंह गौर विवि एवं भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद नई दिल्ली द्वारा परमार्थ दर्शन तथा शैव दर्शन विषय पर व्याख्यान हुआ।

मुख्यअतिथि केन्द्रीय संस्कृत विवि नई दिल्ली के पूर्व कुलपति प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी ने कहा कि उन्नीसवीं शताब्दी के महान दार्शनिक रामावतार शर्मा परमार्थ दर्शन के स्वतंत्र दार्शनिक सिद्धांत के प्रस्तोता आचार्य हैं। उनके तीन प्रमुख दार्शनिक सिद्धांत हैं सर्वात्मकतावाद, विश्व वैचित्र्यवाद एवं देहात्मवाद। सर्वात्मकसत्ता में सबकुछ समवेत होता है देह और आत्मा अविभाज्य होते हैं। प्रो. त्रिपाठी ने कहा की शैव दर्शन के अनुसार सम्पूर्ण जगत शिवशक्तिमय है। शिव की शक्ति के द्वारा जगत की रचना होती है। कार्यक्रम की अध्यक्षता कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने की। संयोजक प्रो. आनंद प्रकाश त्रिपाठी ने में स्वागत उद्बोधन दिया। अभिनंदन पत्र का वाचन डॉ.नौनिहाल गौतम ने किया। संचालन डॉ. शशिकुमार सिंह ने किया। आभार डॉ. संजय कुमार ने माना। इस अवसर पर प्रो.संतोष शुक्ला, एपी मिश्रा, जीएल पुणताम्बेकर, चंदा बेन, राजेंद्र यादव, विजय वर्मा, अनिल तिवारी, नौनिहाल गौतम, रामहेत गौतम, किरण आर्या, ऋषभ भरद्वाज एवं डॉ.सुखदेव वाजपेयी मौजूद रहे।

व्याख्यान हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय एवं भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद नई दिल्ली के संयुक्त तत्त्वावधान में कार्यक्रम हुआ

परमार्थ दर्शन व शैव दर्शन में गहरा संवाद अन्तर्निहित है: प्रो. त्रिपाठी

सागर(नवदुनिया प्रतिनिधि)। डा. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय एवं भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद नई दिल्ली के संयुक्त तत्त्वावधान में विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग द्वारा अभिमंच सभागार में "परमार्थ दर्शन तथा शैव दर्शन" विषय पर सारस्वत व्याख्यान आयोजित किया गया। केन्द्रीय संस्कृत विवि नई दिल्ली के पूर्व कुलपति एवं भारतीय दार्शनिक अनुसन्धान परिषद, नई दिल्ली के राष्ट्रीय अध्येता प्रख्यात संस्कृतविद् प्रो.राधावल्लभ त्रिपाठी के कार्यक्रम की अध्यक्षता कुलपति प्रो.नीलिमा गुप्ता ने की।

कार्यक्रम के दौरान अतिथियों का सम्मान किया गया।● नवदुनिया

कार्यशाला के दौरान विवि के अधिकारी, विद्यार्थी व साहित्यकार मौजूद थे।● नवदुनिया

प्रो. त्रिपाठी ने कहा कि उन्नीसवीं शताब्दी के महानतम् दार्शनिक रामावतार शर्मा परमार्थ दर्शन के स्वतंत्र दार्शनिक सिद्धांत के प्रस्तोता आचार्य हैं। उनके तीन प्रमुख दार्शनिक सिद्धांत हैं सर्वात्मकतावाद, विश्ववैचित्र्यवाद एवं देहात्मवाद सर्वात्मकसत्ता में सबकुछ समवेत होता है। देह और आत्मा अविभाज्य होते हैं वे सर्वात्मक सत्ता के पीछे, विश्ववैचित्र्य को मानते हैं। पं. रामावतार शर्मा जगत को भी परमार्थ मानते हुए जगत को व्याघात से रहित मानते हैं। शैव दर्शन को व्याख्यायित करते हुए प्रो. त्रिपाठी ने कहा कि शैव दर्शन के अनुसार सम्पूर्ण जगत शिवशक्तिमय है। शिव की शक्ति के द्वारा जगत की रचना होती है। उन्होंने कहा कि पंडित रामावतार शर्मा के परमार्थ दर्शन में शैव दर्शन की तत्त्वमीमांसा एवं ज्ञानमीमांसा का अन्तर्निहित स्वरुप दिखाई पड़ता है। यद्यपि रामावतार शर्मा अपने परमार्थ दर्शन के प्रतिपादन में मौन दिखलाई पड़ते हैं। भारतीय ज्ञान परंपरा की आवश्यकता भारत ही नहीं बल्कि पूरे विश्व को है कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए कुलपति प्रो नीलिमा गुप्ता ने कहा कि भारतीय ज्ञान परंपरा की आवश्यकता न सिर्फ भारत को है बल्कि पूरे विश्व को इसकी आवश्यकता है। परमार्थ दर्शन एवं शैव दर्शन भारतीय ज्ञान परंपरा के महत्वपूर्ण सिद्धांत हैं। भारतीय शिक्षा नीति 2020 में भारतीय ज्ञान परम्परा को पुनर्स्थापित किया जा रहा है। हम सभी भारतीयों का यह नैतिक दायित्व है कि परमार्थ दर्शन एवं शैव दर्शन सदृश भारतीयता मूल्यनिष्ठ सिद्धांतों का पुनर्चिन्तन एवं मनन करें। कार्यक्रम के संयोजक प्रो.आनंदप्रकाश त्रिपाठी ने संस्कृत विभाग के शिक्षकों द्वारा शाल श्रीफल स्मृति चिह्न से अतिथियों का सम्मान किया। अभिनंदन-पत्र का वाचन डा. नौनिहाल गौतम ने किया। कार्यक्रम का संचालन डा. शशिकुमार सिंह ने किया व आभार ज्ञापन डा. संजय कुमार ने किया। इस अवसर पर प्रो. संतोष शुक्ला, प्रो. एपी मिश्रा, प्रो. जीएल पुणताम्बेकर, प्रो.चंदा बेन, प्रो.राजेंद्र यादव, प्रो. विजय वर्मा, डा.अनिल तिवारी, डा. नौनिहाल गौतम, डा. रामहेत गौतम, डा. किरण आर्या, डा. गजाधर सागर, डा. शरद सिंह, टीकाराम त्रिपाठी, डा. आशीष द्विवेदी मौजूद रहे।

अंतर विश्वविद्यालय मध्य क्षेत्र युवा उत्सव में सागर विवि 22 में से 10 विधाओं में पदक, 7 में नेशनल में बनाई जगह

भास्कर संवाददाता | सागर

विवेकानंद सुभारति मेरठ में 29 जनवरी से शुरू हुए 6 दिवसीय मध्य क्षेत्र अंतर विश्वविद्यालय युवा उत्सव का शनिवार को समापन हुआ। जिसमें पूरे देश से 30 विश्वविद्यालय के छात्र-छात्राओं ने विभिन्न विधाओं में भागीदारी की। हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय के सांस्कृतिक परिषद के समन्वयक डॉ. राकेश सोनी ने बताया कि सागर विश्वविद्यालय से 43 छात्र-छात्राओं का एक दल शामिल हुआ। जिसने रंगोली, पोस्टर मेकिंग, सुगम संगीत, शास्त्रीय संगीत, भारतीय समूह गान, एकल गान, पाश्चात्य गायन, एकल गायन, माइम, स्किट, बधाई, भारतीय परकुशन वाद्यान, पाश्चात्य गायन, वेस्टर्न सोलो, स्टुमेंटल सहित कुल 22 विधाओं में भाग लिया। जिसमें से 10 विधाओं में सागर विश्वविद्यालय ने अपना परचम लहलहाते हुए बाजी मारी। दल में यशगोपाल श्रीवास्तव, संजय कोरी, गगन राज, अतुल पथरोल, स्तुति खम्परिया, रिद्धि जैन, अर्पित दुबे, अनंया साहू, अमिता, प्रांजलि, ललित नागर, पंकज खरारे, अनुज यादव, अनुराग, अपर्णा, ओम भट्ट एवं दल प्रबंधक अवधेश तोमर एवं स्तुति खंपरिया शामिल थे।

युवा उत्सव के दौरान सागर के युवाओं ने 10 विधाओं में जीते पदक।

अब 7 विधाओं में नेशनल में हिस्सा लेगा विवि का दल

दल प्रबंधक स्तुति खम्परिया ने बताया कि 22 विधाओं में से विश्वविद्यालय की टीम ने 12 विधाओं में अपना परचम लहराते हुए बाजी मारी। जिनमें प्रहसन, फोक आर्केस्ट्रा, रंगोली एवं शोभायात्रा में पहला स्थान प्राप्त किया। वहीं लोकनृत्य, सुगम गायन में दूसरे स्थान पर रहे। नॉन परक्यूशन एवं इंस्टालेशन में तृतीय स्थान तथा क्लासिकल वोकल एवं ऑन द स्पॉट पेंटिंग में चौथा स्थान प्राप्त किया। संगीत, नृत्य और थियेटर में हमारी टीम ओवरऑल रनरशिप रही। जिन 7 विधाओं में सागर विवि की टीम पहले और दूसरे स्थान पर रही, उनमें नेशनल फेस्टिवल में टीम हिस्सा लेगी। विद्यार्थियों की उपलब्धि पर कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने हर्ष जताया है।

विवि को रंगमंच, फॉक आर्केस्ट्रा, रंगोली और शोभायात्रा में मिला पहला पुरस्कार

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

सागर. स्वामी विवेकानंद सुभारति विश्वविद्यालय मेरठ में 30 जनवरी से 3 फरवरी तक आयोजित हुए मध्य क्षेत्र अंतर विश्वविद्यालय युवा उत्सव में डॉ. हरिसिंह गौर केंद्रीय विवि ने 10 पुरस्कार जीते हैं। विजयी दल के सभी प्रतिभागी 28 मार्च से पंजाब एग्रीकल्चर लुधियाना में आयोजित होने वाले राष्ट्रीय युवा उत्सव में सहभागिता करेंगे।

विवि से मिली जानकारी के अनुसार टीम को रंगमंच की विधा प्रहसन, फॉक आर्केस्ट्रा, रंगोली और शोभा यात्रा में प्रथम, लोकनृत्य व सुगम गायन में द्वितीय, वाद्य वादन व इंस्टॉलेशन में तृतीय और शास्त्रीय गायन व पेंटिंग में चतुर्थ पुरस्कार मिला है। इसके अलावा टीम को ओवरऑल ट्राफी भी प्रदान की गई है। विश्वविद्यालय की ओर से गए इस दल के प्रबंधक के रूप में डॉ. अवधेश तोमर व स्तुति खम्परिया रहे तो वहीं सदस्यों के रूप में संजय कोरी, यश गोपाल, गगन राज, अर्पित दुबे, अनया साहू, अमिता, प्रांजली, ललित नागर, पंकज खरारे, अनुज यादव, अनुराग, अपर्णा, ओम बट्ट सहित अन्य छात्र शामिल थे। टीम की इस उपलब्धि पर कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने सभी को बधाई दी।

युवा उत्सव में विवि के कलाकारों को नौ विधाओं में पुरस्कार मिले

नवभारत न्यूज

सागर 4 फरवरी. मध्य क्षेत्र अन्तर विश्वविद्यालय युवा उत्सव में डॉ हरीसिंह गौर विवि ने 9 पुरस्कार जीते.

प्रहसन में प्रथम, फोक ऑर्केस्ट्रा में प्रथम, रंगोली में प्रथम, शोभा यात्रा में प्रथम, लोकनरत्य मे द्वितीय, सुगम गायन द्वितीय, वाद्य वादन मे तृतीय इंस्टालेशन मे तृतीय शास्त्रीय गायन मे चतुर्थ, पेंटिंग में चतुर्थ पुरुस्कार प्राप्त किए. दल प्रबंधक डॉ अवधेश तोमर समन्वयक, अकादमिक एवं सांस्कृतिक प्रकोष्ठ टीम के साथ गए. समन्वयक डॉ राकेश सोनी ने बताया दल में यशगोपाल श्रीवास्तव संजय कोरी, , गगन राज, अतुल पथरोल स्तुति खम्परिया, रिद्धि जैन शामिल थीं.

यूजीसी अध्यक्ष ने सेंट्रल जोन शोध संसाधन पोर्टल शुरू करने की घोषणा की

सेंट्रल जोन के विश्वविद्यालय कर सकेंगे शोध इंफ्रास्ट्रक्चर का उपयोग: कुलपति

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

सागर. विश्वविद्यालय अनुदान आयोग व विक्रम विश्वविद्यालय उंज्जैन द्वारा नई शिक्षा नीति-2020 के क्रियान्वयन पर एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। जिसका उद्घाटन प्रदेश के राज्यपाल मंगूभाई पटेल ने किया, इसमें विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के अध्यक्ष प्रो. एम जगदीश कुमार की भी उपस्थिति रही।

कार्यशाला में सेन्ट्रल जोन मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, उत्तर प्रदेश तथा उत्तराखंड से लगभग 400 कुलपतियों व एनइपी समन्वयकों ने सहभागिता की। कुल 10 सत्रों में आयोजित इस कार्यशाला में बहुआनुशासनिक व समग्र शिक्षा, डिजिटल सशक्तीकरण, ऑनलाइन शिक्षा, कौशल विकास एवं रोजगार, शोध, नवाचार एवं उद्यमिता, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए शिक्षकों का क्षमता निर्माण, गवर्नेंस एवं स्वायत्तता, प्रत्यायन एवं उत्कृष्टता, न्याय संगत एवं सर्वसमावेशी शिक्षा, भारतीय ज्ञान पद्धति एवं भारतीय भाषाएं, शिक्षा का अंतरराष्ट्रीयकरण जैसे विषयों पर मंथन हुआ।

डॉ. हरीसिंह गौर केंद्रीय विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने कार्यशाला के चौथे सत्र शोध, नवाचार व उद्यमिता की अध्यक्षता की। जिसमें में सभी चार प्रदेशों के कुलपतियों ने सहभागिता करते हुए एनईपी 2020 में प्रदत्त प्रावधानों के आधार पर विश्वविद्यालयों में बेहतर शोध की दशा-दिशा पर गहन चिंतन किया। प्रो. नीलिमा गुप्ता ने कहा प्रायः सभी विश्वविद्यालयों में शोध के लिए मूलभूत सविधाएं, उपकरण का अभाव होता है।

उन्होंने यह प्रस्ताव दिया कि प्रत्येक विश्वविद्यालय अपने पास उपलब्ध सुविधाओं को यदि एक-दूसरे विश्वविद्यालयों से साझा करें तो सभी विश्वविद्यालयों को इसका लाभ मिलेगा। उनके इस प्रस्ताव पर विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के अध्यक्ष प्रो. जगदीश कुमार ने तुरंत एक सेंट्रल जोन केंद्रीय शोध मूलभूत सुविधा केंद्र स्थापित करने की घोषणा की। जिसमें चारों प्रदेशों के शोधकर्ताओं के लिए एक ही पोर्टल पर सभी विश्वविद्यालय अपनी मूलभूत सविधाओं का विवरण देते हुए संपर्क व्यक्ति व संपर्क विवरण की पूरी जानकारी उपलब्ध कराएंगे। इस माध्यम से चारों प्रदेशों के विश्वविद्यालय लाभान्वित .हो सकेंगे।

आयोजन । यूजीसी अध्यक्ष ने की सेंट्रल जोन शोध संसाधन पोर्टल शुरू किए जाने की घोषणा

सेंट्रल जोन के सभी विश्व विद्यालय कर सकेंगे शोध इंफ्रास्ट्रक्चर का उपयोग: गुप्ता

सागर, आचरण संवाददाता।

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग तथा विक्रम विश्वविद्यालय उंज्जैन द्वारा एनईपी 2020 के क्रियान्वयन पर एकदिवसीय कार्यशाला आयोजित की गई जिसका उद्घाटन मध्यप्रदेश के माननीय राज्यपाल मंगूभाई पटेल ने किया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के अध्यक्ष प्रो. एम. जगदीश कुमार की भी विशिष्ट उपस्थिति रही। कार्यशाला में सेन्ट्रल जोन (मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, उत्तर प्रदेश तथा उत्तराखंड) से लगभग 400 कुलपतियों तथा एनईपी समन्वयकों ने सहभागिता की।

कुल दस सत्रों में आयोजित इस कार्यशाला में बहुआनुशासनिक एवं समग्र शिक्षा, डिजिटल सशक्तीकरण एवं ऑनलाइन शिक्षा, कौशल विकास एवं रोजगार, शोध, नवाचार एवं उद्यमिता, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए शिक्षकों का क्षमता निर्माण, गवर्नेंस एवं स्वायत्तता, प्रत्यायन एवं उत्कृष्टता, न्याय संगत एवं सर्वसमावेशी शिक्षा, भारतीय ज्ञान पद्धति एवं भारतीय भाषाएं, शिक्षा का अंतर्राष्ट्रीयकरण जैसे विषयों पर मंथन हुआ और इनको दृष्टिगत रखते हुए एनईपी 2020 के क्रियान्वयन पर बल दिया गया।

इस कार्यशाला में डॉ. हरीसिंह गौर केन्द्रीय विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता के साथ प्रो. ए. डी. शर्मा, प्रो. नवीन कानगो तथा प्रो. अनिल जैन ने विश्वविद्यालय का प्रतिनिधित्व किया। कार्यशाला के चौथे सत्र शोध, नवाचार एवं उद्यमिता की अध्यक्षता विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने की जिसमें में सभी चार प्रदेशों के कुलपतियों ने सहभागिता करते हुए एनईपी 2020 में प्रदत्त प्रावधानों के आधार पर विश्वविद्यालयों में बेहतर शोध की दशा-दिशा पर गहन चिन्तन किया। प्रो. नीलिमा गुप्ता ने यह रेखांकित किया कि प्रायः सभी विश्वविद्यालयों में शोध हेतु मूलभूत सविधायें तथा उपकरणों का अभाव होता है। उन्होंने यह प्रस्ताव दिया कि प्रत्येक विश्वविद्यालय अपने पास उपलब्ध सुविधाओं को यदि एक-दूसरे विश्वविद्यालयों से साझा करें तो सभी विश्वविद्यालयों को इसका लाभ मिलेगा और सभी के लिए सुविधाजनक होगा। उनके इस प्रस्ताव पर विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के अध्यक्ष प्रो. जगदीश कुमार ने तुरन्त इस प्रस्ताव की प्रशंसा करते हुए एक सेंट्रल जोन केन्द्रीय शोध मूलभूत सुविधा केन्द्र स्थापना करने की घोषणा की जिसमें चारों प्रदेशों के शोधकर्ताओं के लिए एक ही पोर्टल पर सभी विश्वविद्यालय अपनी मूलभूत सविधाओं का विवरण देते हुए सम्पर्क व्यक्ति तथा सम्पर्क विवरण की सम्पूर्ण जानकारी उपलब्ध कराएंगे। इस माध्यम से चारों प्रदेशों के विश्वविद्यालय लाभान्वित हो सकेंगे। डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय द्वारा की गई इस पहल तथा विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के अध्यक्ष प्रो. जगदीश कुमार द्वारा सेन्ट्रल जोन शोध पोर्टल की स्थापना करने की घोषणा पर सभी कुलपतियों ने हर्ष व्यक्त करते हुए आशा व्यक्त की कि इस नई पहल से सभी विश्वविद्यालय गुणवत्तापूर्ण शोध करके भारत में शोध को एक नई दिशा देने में सफल होंगे।

उन्होंने कहा कि बहुविषयी शोध को बढ़ावा देना चाहिए तथा उद्योंगों तथा अन्य विश्वविद्यालयों के साथ सहयोग स्थापित करके शोध को एक नई दिशा देनी चाहिए। सरकार द्वारा बनायी गई योजनाओं की भी सफलतापूर्वक क्रियान्वयन करना चाहिए तथा अपने विश्वविद्यालय में शोध के लिए संसाधन सृजन पर भी जोर देना चाहिए। उन्होंने आगे यह भी कहा कि कौशल विकास पर शोध करके हम आत्मनिर्भर भारत की ओर अग्रसर होंगे। हर स्तर पर शोध को पुरस्कृत करने से शोध का बढ़ावा मिलेगा तथा प्रत्येक विश्वविद्यालय द्वारा किये गये उत्कृष्ट शोध को बेस्ट प्रैक्टिस के रूप में प्रदर्शित किया जाना चाहिए ताकि अन्य विश्वविद्यालय भी उसका लाभ ले सकें।

उन्होंने कहा कि शोध को बढ़ावा देने के लिए प्रत्येक विश्वविद्यालय को शोध प्रकोष्ठ की स्थापना करनी चाहिए जो विश्वविद्यालय के सभी शोध क्रिया-कलापों को एक नयी राह दिखा सकें। साथ ही उन्होंने शिक्षकों को शोध हेतु उचित प्रशिक्षण देने पर भी जोर दिया। इस वर्ष शिक्षा हेतु भारत सरकार द्वारा की गई शिक्षा निधि में वृद्धि पर सभी ने प्रसन्नता जाहिर की और इस बात पर भी जोर दिया गया कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में चिन्हित नेशनल रिसर्च फाउंडेशन शीघ्र ही पूर्ण रूप से स्थापित होकर देश में शोध को बढ़ावा देगा जिससे सभी विश्वविद्यालय इससे लाभान्वित होंगें।

उक्त सत्र संचालन पर सभी कुलपतियों ने सराहना करते हुए आशा व्यक्त की कि इस सत्र में लिए गये निर्णयों के आलोक में भारतीय शोध विश्व स्तर पर ख्याति अर्जित करेंगे और नया कीर्तिमान बनाएंगे। समापन सत्र में प्रो. नीलिमा गुप्ता ने विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के अध्यक्ष, प्रो. जगदीश कुमार तथा विक्रम विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. ए. के. पाण्डेय को कार्यशाला के सफल आयोजन हेतु बधाई दी।

विवि : पीजी में प्रवेश की तारीख बढ़ी, अब 7 फरवरी तक जमा होंगे फॉर्म

सागर | डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर सहित देश के अन्य विश्वविद्यालयों में पीजी पाठ्यक्रमों में प्रवेश के लिए होने वाले कॉमन यूनिवर्सिटी एंट्रेंस टेस्ट के लिए रजिस्ट्रेशन की आखिरी तारीख बढ़ा दी गई है। विद्यार्थी अब 7 फरवरी तक पंजीयन कर सकेंगे। पहले यह तारीख 31 जनवरी थी।

संशोधित सीयूईटी पीजी 2024 तारीखों के अनुसार उम्मीदवार 8 फरवरी तक परीक्षा के लिए शुल्क का भुगतान कर सकेंगे। सीयूईटी पीजी 2024 सुधार विंडो अब 9 फरवरी से 11 फरवरी तक एक्टिव रहेगी। नेशनल टेस्टिंग एजेंसी ने कॉमन यूनिवर्सिटी एंट्रेंस टेस्ट-पोस्ट ग्रेजुएट के लिए आवेदन करने के लिए लिंक भी जारी की है।

विद्यार्थी pgcuet.samarth.ac.in पर आवेदन पत्र भर सकते हैं। पंजीयन से लेकर एडमिशन से संबंधित जानकारी आदि को लेकर विद्यार्थियों के सहयोग के लिए डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों के साथी ग्रुप ने साथी स्टूडेंट हेल्प डेस्क बनाई है। हेल्पलाइन नंबर भी जारी किए हैं। हेल्पलाइन नंबर - 9691591255, 8319005125, 7225914080, 7000916825 एवं 9424548665 पर संपर्क किया जा सकता है। फिलहाल स्नातक में प्रवेश के लिए पंजीयन होने को लेकर कोई भी तारीख जारी नहीं की गई है।

विवि में पीजी में प्रवेश के लिए 7 फरवरी तक आवेदन

सागर | डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर सहित देश के अन्य विश्वविद्यालयों में पीजी पाठ्यक्रमों में प्रवेश के लिए होने वाले कॉमन यूनिवर्सिटी एंट्रेंस टेस्ट के लिए रजिस्ट्रेशन की आखिरी तारीख बढ़ा दी गई है। विद्यार्थी अब 7 फरवरी तक पंजीयन कर सकेंगे। विद्यार्थी 8 फरवरी तक परीक्षा के लिए शुल्क का भुगतान कर सकेंगे। सीयूईटी पीजी 2024 सुधार विंडो अब 9 फरवरी से 11 फरवरी तक एक्टिव रहेगी। नेशनल टेस्टिंग एजेंसी ने कॉमन यूनिवर्सिटी एंट्रेंस टेस्ट- पोस्ट ग्रेजुएट के लिए आवेदन करने के लिए लिंक भी जारी की है।

डा. हरिसिंह गौर पीठ और नागपुर विश्वविद्यालय के बीच शीघ्र होगा अकादमिक समझौता

• गौर पीठ की पहल के बाद डा. गौर से जुड़े विषयों पर हो सकेंगे शोध कार्य

सागर(नवदुनिया प्रतिनिधि)। सागर विश्वविद्यालय के संस्थापक डाक्टर हरीसिंह गौर के जीवन के विभिन्न पहलुओं पर शोधपरक प्रकाशन को गति देने के लिए जल्द ही डा. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय एवं नागपुर विवि के अधिकारियों के बीच जल्द ही अकादमिक समझौता होगा। इस संबंध में गौर पीठ के समन्वयक प्रो. दिवाकर सिंह राजपूत ने नागपुर पहुंचकर कुलपति से मुलाकात कर अकादमिक समझौते पर विस्तार से चर्चा की। समझौता होने के बाद दोनों विवि के बीच शोध कार्यों सहित अन्य अध्यन कार्य में विस्तार होगा।

डा. हरीसिंह गौर विवि का फाइल चित्र। • नवदुनिया

दरअसल सागर विश्वविद्यालय की स्थापना के पूर्व डा गौर दिल्ली विश्वविद्यालय और नागपुर विश्वविद्यालय के कुलपति रह चुके हैं। विवि की गौर पीठ द्वारा डा. गौर के कार्यकाल को लेकर विभिन्न विवि से संपर्क कर उनके कार्यों, उनके भाषण, संविधान निर्माण के दौरान उनके कार्य और भाषण आदि का कलेक्शन किया जा रहा है।

गौर से जुड़ी सामग्री कलेक्शन के बाद उनके नाम पर विवि में शोध कार्य भी शुरू हो जाएंगे, जिसके चलते इस दिशा में गौर पीठ के समन्वयक प्रो. दिवाकर सिंह राजपूत ने नागपुर विश्वविद्यालय के प्रति कुलपति प्रोफेसर संजय दूधे से मुलाकात कर अकादमिक समझौता पत्रक पर चर्चा की। यहां की समिति से चर्चा करने के बाद जल्द ही दोनों विवि के कुलपतियों के बीच एमओयू पर हस्ताक्षर होंगे। इसके बाद डा. गौर के जीवन के विभिन्न पहलुओं पर शोधपरक प्रकाशन को गति दी जा सकेगी।

अपनी पूरी संपति शिक्षा के लिए दान कर दी

सागर विवि के संस्थापक डाक्टर हरीसिंह गौर विश्व के उन महान शिक्षाविदों में हैं, जिन्होंने अपना सारा जीवन, संपत्ति केवल शिक्षा और देश-भक्ति के लिए समर्पित कर दी। इस विवि की स्थापना 18 जुलाई 1946 को अपनी निजी पूंजी से की थी। अपनी स्थापना के समय वह भारत का पहला ऐसा विवि था जो किसी एक व्यक्ति के दान से स्थापित हुआ था। 27 मार्च 2008 में इसे केन्द्रीय विश्वविद्यालय की श्रेणी प्रदान की गई है।

नागपुर के कुलपति ने कहा यह हमारे लिए सौभाग्य की बात

राष्ट्र संत तुकडो जी महाराज नागपुर विवि महाराष्ट्र के प्रति कुलगुरु प्रो. संजय दूधे ने इस बात पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि डाक्टर गौर के व्यक्तित्व और कृतित्व पर शोधपरक कार्य करना सौभाग्य की बात होगी। डॉक्टर गौर को भारत रत्न सम्मान मिल सके इस दिशा में भी समन्वित प्रयास करने पर सहमति बनी। नागपुर विश्वविद्यालय के लिए डा. गौर के अतुलनीय योगदान के लिए उन्होंने उनके कार्यों की सराहना की। विवि प्रशासन की ओर से उनके लिए डा. गौर की जीवनी भेंट की है।

जल्द होना है राजकीय विवि की स्थापना ...

मुख्यमंत्री डा. मोहन यादव की घोषणा के बाद नए राजकीय विवि की स्थापना का कार्य भी शुरू हो गया। शासकीय कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय के करीब सवा छह करोड़ रुपये की लागत से निर्मित भवन में यह विवि खोलने की तैयारी की जा रही है, लेकिन नए भवन के लिए जिला प्रशासन के अधिकारी शहर के आसपास सरकारी भूमि भी देख रहे हैं। हालांकि इंटरनेट मीडिया में इस विवि के नाम को लेकर बहस शुरू हो गई है। अधिकांश लोग सागर विवि नाम रखे जाने पर चर्चा कर रहे हैं।

> सागर विश्वविद्यालय के संस्थापक डा. हरीसिंह गौर नागपुर विवि में भी कुलपति रह चुके हैं। यहां के कुलपति से चर्चा के बाद जल्द एमओयू साइन होने वाला है। संयुक्त रूप से दोनों विवि द्वारा डा. गौर के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर शोधपरक कार्य एवं प्रकाशन के लिए कार्य करेंगे।
>
> - डा. दिवाकर सिंह राजपूत, समन्वयक गौर पीठ सागर

मानव विज्ञान के क्षेत्र में प्रो. कपूर का अतुलनीय योगदान: प्रो. शर्मा

सागर। डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के मानव विज्ञान विभाग से जुड़े रहे मानवविज्ञानी प्रो. अनूप कुमार कपूर का दिल्ली में निधन हो गया। विवि के मानव विज्ञान विभाग में श्रद्धांजलि सभा हुई। विभागाध्यक्ष प्रो. केकेएन शर्मा ने कहा प्रो. कपूर ने अपने शैक्षणिक कार्यों के साथ शोध के क्षेत्र में राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्‌ रीय स्तर पर कीर्तिमान स्थापित किए। उन्होंने 12 पुस्तकें, 238 से अधिक शोध पत्र, 25 पीएचडी शोधार्थियों का मार्गदर्शन करते अवार्ड कराईं। वह इंडियन साइंस कांग्रेस के अध्यक्ष भी रहे। प्रो. कपूर के शैक्षणिक शोध कार्य तथा अकादमिक कार्यों के चलते उन्हें विभिन्न अवार्डों से सम्मानित किया गया। प्रो. एके कपूर का मानव विज्ञान के क्षेत्र में अतुलनीय योगदान है। डोफा प्रो. अजीत जायसवाल ने कहा कि मैं उनका ही विद्यार्थी हूं। उनके द्वारा भारत का सबसे बड़ा शैक्षणिक प्रोजेक्ट सफलतापूर्वक पूरा किया गया जो पहले कई मानव विज्ञानी नहीं कर पाए थे। डॉ. अरिबम विजयासुंदरी देवी ने कहा प्रो. कपूर ने अंतिम समय तक बेड पर रहते हुए भी शैक्षणिक ऑनलाइन कार्य संपादित किए। विभागाध्यक्ष प्रो. केकेएन शर्मा ने शोक संदेश का वाचन किया। श्रद्धांजलि देने वालों में प्रो. एएन शर्मा, प्रो. कल्पना सैनी, प्रो. देवाशीष बोस, प्रो. संतोष शुक्ला, प्रो. आरपी मिश्रा, प्रो. राजेश कुमार गौतम आदि मौजूद थे।

प्रो. एके कपूर का मानव विज्ञान के क्षेत्र में अतुलनीय योगदान

विवि के मानव विज्ञान विभाग में श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया। ● नवदुनिया

सागर(नवदुनिया प्रतिनिधि)। डा. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर के मानव विज्ञान विभाग से जुड़े शिक्षाविद् प्रसिद्ध मानव विज्ञानी प्रो. अनूप कुमार कपूर का दिल्ली में असमायिक निधन हो गया। विभाग में श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया। विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. केकेएन शर्मा, विवि फेकल्टी अफेयर्स के निदेशक प्रो. अजीत जायसवाल ने उनके चित्र पर माल्यर्पण करके प्रारंभ की। प्रो. केकेएन शर्मा ने सभा को संबोधित करते हुए बताया कि प्रो. कपूर ने अपने शैक्षणिक कार्यो के साथ-साथ शोध के क्षेत्र में राष्ट्रीय अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर कीर्तिमान किए। उन्होंने 12 पुस्तक, 238 से अधिक शोध पत्र, 25 पीएचडी शोधार्थियों का मार्गदर्शन करते अवार्ड कराई। फेकल्टी अफेयर्स निदेशक प्रो. अजीत जायसवाल ने कहा कि मैं उनका ही विद्यार्थी हूं। उन्होंने शैक्षणिक एवं शोध कार्यों में सैकड़ो शिक्षाविद् में प्रोफेसर, आइएएस, आइपीएस डायरेक्टर है जो कि गौरव की बात है। डां. अरिबम विजयासुंदरी देवी(असिस्टेंट प्रोफेसर) ने शोक संवेदना व्यक्त की। इस दौरान प्रो. एएन शर्मा, प्रो. कल्पना सैनी, प्रो. देवाशीष बोस, प्रो. संतोष शुक्ला, प्रो. आरपी मिश्रा, प्रो. राजेश कुमार गौतम, सर्वेन्द्र यादव, सोनिया कौशल उपस्थित थे।

आयोजन

प्रो. कपूर के निधन पर मानव विज्ञान विभाग में श्रद्धांजलि सभा का हुआ आयोजन

प्रो. कपूर का मानव विज्ञान के क्षेत्र में अतुलनीय योगदान: प्रो.शर्मा

सागर, आचरण संवाददाता।

डॉ हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय , सागर के मानव विज्ञान विभागसे जुड़े शिक्षाविद् प्रसिद्ध मानव वैज्ञानी प्रो. अनूप कुमार कपूर जो 4 जनवरी 2024 दिल्ली में असमायिक दुःखद निधन हो गया है. विभाग में श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया. विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. के. के. एन. शर्मा, वि.वि. फैकल्टी अफेयर्स के निदशक प्रो. अजीत जायसवाल ने प्रो कपूर के चित्र पर माल्यर्पण करके प्रारंभ की. प्रो. के. के. एन. शर्मा ने सभा को संबोधित करते हुए बताया कि प्रो. कपूर 20 जनवरी 1954 में दिल्ली के प्रतिष्ठित कपूर परिवार में जन्में जिनकी प्राथमिक, माध्यमिक, इंटर एवं उच्च शिक्षा दिल्ली से हुई. वर्ष 1973 में बी.एस.सी., वर्ष 1975 में एम.एस.सी. मानव विज्ञान विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय से गोल्ड मेडलिस्ट उत्तीर्ण हुए. वर्ष 1981 में पीएच.डी. की उपाधि से विभूषित हुए. प्रो. कपूर का पीएच.डी. जेनेटिक वेरीबिलटी एमंग जौहरी एवं रंग बोटिया समुदाय पिथोरागढ़(उ. प्र.) विषय पर शोध कार्य किया वह वर्ष 1983 में दिल्ली विश्वविद्यालय में सहायक प्राध्यापक पद पर नियुक्ति हुई. वर्ष 1981 में रीडर प्रवाचक(रीडर) डायरेक्ट रिक्रूमेंट में नियुक्त हुए वर्ष 1997 में प्रोफेसर भी डायरेक्ट नियुक्त हुए. वर्ष 2007 से 2009 तक मध्यप्रदेश शासन द्वारा जीवाजी राव विश्वविद्यालय के कुलपति बनाऐ गए. वह मानव विज्ञान विभाग दिल्ली विश्वविद्यालय के विभागाध्यक्ष रहे. वर्ष 20 जनवरी 2019 में वह सेवा से निवृत हुए. प्रो. कपूर ने अपने शैक्षणिक कार्यो के साथ-साथ शोध के क्षेत्र में राष्ट्रीय अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर कीर्तिमान किए. इन्होंने 12 पुस्तक, 238 से अधिक शोध पत्र, 25 पीएच.डी. शोधार्थियों का मार्गदर्शन करते अवार्ड करायी है. वह इंडियन साइंस कांग्रेस के अध्यक्ष भी रहे. प्रो. कपूर के शैक्षणिक शोध कार्य तथा अकादमिक कार्यों में दृष्टिगत उन्हें विभिन्न अवार्डो से सम्मानित किया गया है. जिनमें प्रमुख है लाइफ टाइम अचीवमेंट, एजुकेशन अचीवमेंट अवार्ड, मैन ऑफ द ईयर अवार्ड, विद्यारत्न अवार्ड, डॉ. पंचानन मेमोरियल अवार्ड है. वह अनेक संस्थाओं एवं विभिन्न विश्वविद्यालयों में गवर्निंग वाडी ऑन सिलेक्शन एक्सपर्ट में रहकर मार्गदर्शन, यूजीसी आई.सी.एस.ए.आर. आदि प्रोजेक्ट शामिल है।

फैकल्टी अफेयर्स निदेशक प्रो. अजीत जायसवाल ने कहा कि मैं उनका ही विद्यार्थी हूं उन्होंने शैक्षणिक एवं शोध कार्यों में सैकड़ों शिक्षाविद् में प्रोफेसर, आई.ए.एस., आई.पी.एस. डायरेक्टर है जो कि गौरव की बात है. उनके द्वारा भारत का सबसे बड़ा शैक्षणिक प्रोजेक्ट सक्सेसफुली कंपलीट किया जो पहले कई एंथ्रोप्लाजिस्ट नही कर पाऐ थे. (पीजी ई पाठशाला मिनिस्ट्री ऑफ एजुकेशन) है. प्रो. कपूर अपने पीछे भरा पूरा परिवार छोड़कर गए। उनकी एक पुत्री आई.आई.टी. मुम्बई में पुत्र भी असिसटेंट प्रोफेसर है. यह गर्व की बात है इनके विद्यार्थी अनेक विश्वविद्यालय में प्रोफेसर, आई.ए.एस., आई.पी.एस. डायरेक्टर है जो कि गौरव की बात है.

प्रो.कपूर जी के न रहने से हमारा विभागीय परिवार बहुत दुखी है. शिक्षा जगत में बेहद बड़ी क्षति हुई है. जिसकी भारपाई किया जाना बमुश्किल है. डॉ. अरिबम विजयासुंदरी देवी(असिस्टेंट प्रोफेसर) ने शोक संवेदना व्यक्त करते हुए कहा कि प्रो. कपूर ने अंतिम समय तक बेड पर रहते हुए भी शैक्षणिक ऑनलाइन कार्य संपादित किए वह एक समर्पित कर्मठी शिक्षक थे. उनकी यादें हम भुला नहीं पाऐगें हमारे विभाग के विद्यार्थी उनके द्वारा प्रकाशित शोध कार्य का अध्ययन करके नई दिशा देंगे. विभाग के उपस्थित शिक्षको, शोधार्थियों, विद्यार्थियों एवं कर्मचारियों ने पुष्प अर्पित करके श्रद्धांजलि व्यक्त की।

अंत में विभागाध्यक्ष प्रो. के.के.एन.शर्मा ने शोक सन्देश का वाचन किया दो मिनिट का मौन धारण करके परम पिता परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को अपने श्री चरंणों में स्थान देवे. शोक संतप्त परिवार को गहन दुख सहन करने की शक्ति देवे. दो मिनिट का मौन धारण करके प्रार्थना कर इस अवसर प्रमुख रूप से श्रद्धांजलि व्यक्त की. प्रमुख रूप से शोक संवेदना प्रकट करने वालो में प्रो. ए. एन. शर्मा, प्रो. कल्पना सैनी, प्रो. देवाशीष बोस, प्रो. संतोष शुक्ला, प्रो. आर. पी. मिश्रा, प्रो. राजेश कुमार गौतम, डॉ सर्वेन्द्र यादव, डॉ. सोनिया कौशल, शोधार्थी निकिता दास, काव्या पॉल, योगेश गौतम, सुनंदा साहू, सुमन साहू, बसंत सेन, तनुश्री, अभिषेक पटेल, भगवानदास रजक, दिव्यांश चौहान, संतोष रैकवार सहित अनेक विद्यार्थी उपस्थित थे।

राष्ट्रीय युवा उत्सव में सहभागिता करेंगे संगीत विभाग के युवा संगीतज्ञ

सागर, देशबन्धु। राष्ट्रीय युवा उत्सव पंजाब एग्रीकल्चर लुधियाना में प्रतिभागिता करने के लिए मध्य क्षेत्र अन्तर विश्वविद्यालय युवा उत्सव में चयनित डॉ. हरीसिंह गौर विवि के विद्यार्थियों को कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने शुभकामनाएं एवं आशीर्वाद प्रदान किया। विवि को विवेकानंद सुभारती यूनिवर्सिटी मेरठ में 30 जनवरी से 03 फरवरी तक आयोजित युवा उत्सव में 09 पुरस्कार प्राप्त हुये, जिसमें प्रमुखता से संगीत विभाग एवं ललित एवं प्रदर्शनकारी कला विभाग के छात्र–छात्राओं ने विभिन्न विधाओं में पदक प्राप्त किए। जिसके अंतर्गत फोक ऑर्केस्ट्रा में प्रथम, सुगम गायन में द्वितीय स्थान स्तुति खंपरिया ने प्राप्त हुआ। एकल वाद्य वादन नॉन परक्यूशन बांसुरी में पंकज खरारे तृतीय स्थान पर रहे।

शास्त्रीय गायन में चतुर्थ स्थान रहा। डॉ. अवधेश प्रताप सिंह तोमर एवं डॉ. राहुल स्वर्णकार के मार्गदर्शन से शोध छात्र यश गोपाल श्रीवास्तव एवं गगन राज ने संगीत की विभिन्न विद्याओं का समन्वय किया। दल प्रभारी सांस्कृतिक एवं अकादमिक गतिविधि प्रकोष्ठ के समन्वयक डॉ. तोमर ने बताया कि सांगीतिक विधाओं में विवि को द्वितीय पुरस्कार प्राप्त हुआ। इसी के साथ उन्होंने बताया की विजयी दल के सभी प्रतिभागी राष्ट्रीय युवा उत्सव पंजाब एग्रीकल्चर लुधियाना मे सहभागिता करेंगे।

राष्ट्रीय युवा उत्सव में सहभागिता करेंगे हरि सिंह गौर विवि के संगीत विभाग के युवा संगीतज्ञ

सागर। राष्ट्रीय युवा उत्सव पंजाब एग्रीकल्चर लुधियाना में प्रतिभागिता करने के लिए मध्य क्षेत्र अन्तर विश्वविद्यालय युवा उत्सव में चयनित डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों को कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने शुभकामनाएं एवं आशीर्वाद प्रदान किया। विश्वविद्यालय को विवेकानंद सुभारती यूनिवर्सिटी मेरठ में 30 जन से 03 फरवरी तक आयोजित युवा उत्सव में 09 पुरस्कार प्राप्त हुए। जिसमें प्रमुखता से संगीत विभाग एवं ललित एवं प्रदर्शनकारी कला विभाग के छात्र–छात्राओं ने विभिन्न विधाओं में पदक प्राप्त किए। जिसके अंतर्गत फोक ऑर्केस्ट्रा मे प्रथम, सुगम गायन में द्वितीय स्थान स्तुति खंपरिया ने प्राप्त हुआ। एकल वाद्य वादन नॉन परक्यूशन बांसुरी में पंकज खरारे तृतीय स्थान पर रहे। शास्त्रीय गायन में चतुर्थ स्थान रहा। डॉ अवधेश प्रताप सिंह तोमर एवं डॉ. राहुल स्वर्णकार के मार्गदर्शन से शोध छात्र यश गोपाल श्रीवास्तव एवं गगन राज ने संगीत की विभिन्न विद्याओं का समन्वय किया। दल प्रभारी सांस्कृतिक एवं अकादमिक गतिविधि प्रकोष्ठ के समन्वयक डॉ तोमर ने बताया कि सांगीतिक विधाओं में विवि को द्वितीय पुरस्कार प्राप्त हुआ। इसी के साथ उन्होंने बताया की विजयी दल के सभी प्रतिभागी राष्ट्रीय युवा उत्सव पंजाब एग्रीकल्चर लुधियाना में सहभागिता करेंगे।

रसायनशास्त्र के शोधार्थी दीपक को पीएच-डी

जागरण, सागर। दीपक पाटकर ने रसायन विभाग डॉ. हरीसिंह गौर केंद्रीय विश्वविद्यालय से पीएचडी की उपाधि प्राप्त की है। दीपक ने अपना शोध कार्य पर्यवेक्षक डॉ.मिलिंद एम देशमुख सहायक प्राध्यापक के मार्गदर्शन में पूर्ण किया। विभागाध्यक्ष, पर्यवेक्षक, शिक्षकगण, परिजन, सहपाठियों एवं मित्रों ने उन्हें बधाई दी है।

विवि कन्या छात्रावास में मनाई गई वसंत पंचमी

सागर। वसंत पंचमी के शुभ अवसर पर कन्या छात्रावास, डॉ हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय में निवेदिता, सरस्वती एवं रानी लक्ष्मीबाई कन्या छात्रावास में बसंत पंचमी की पूजा अर्चना एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें डॉक्टर रश्मि सिंह मुख्य प्रतिपालिका, डॉक्टर सुषमा यादव, डॉक्टर वंदना राजोरिया, डॉक्टर सुप्रभात दास, डॉ श्वेता शर्मा, डॉक्टर शिवानी खरे एवं छात्रावास के कर्मचारियों की उपस्थिति में कन्या छात्रावास की कन्याओं ने आयोजन हर्षोल्लास से संपन्न किया।

कुलपति ने विद्यार्थियों को दी बधाई एवं शुभकामनाएं

राष्ट्रीय युवा उत्सव में सहभागिता करेंगे संगीत विभाग के युवा संगीतज्ञ

सागर

राष्ट्रीय युवा उत्सव पंजाब एग्रीकल्चर लुधियाना में प्रतिभागिता करने के लिए मध्य क्षेत्र अन्तर विश्वविद्यालय युवा उत्सव में चयनित डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों को कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने शुभकामनाएं एवं आशीर्वाद प्रदान किया। विश्वविद्यालय को विवेकानंद सुभारती यूनिवर्सिटी मेरठ मे दिनांक 30 जन से 03 फर तक आयोजित युवा उत्सव में 09 पुरस्कार प्राप्त हुये, जिसमें प्रमुखता से संगीत विभाग एवं ललित एवं प्रदर्शनकारी कला विभाग के छात्र छात्राओं ने विभिन्न विधाओं में पदक प्राप्त किए। जिसके अंतर्गत फोक ऑर्केस्ट्रा मे प्रथम, सुगम गायन में द्वितीय स्थान स्तुति खंपरिया ने प्राप्त हुआ। एकल वाद्य वादन नॉन परक्यूशन बांसुरी में पंकज खरारे तृतीय स्थान पर रहे। शास्त्रीय गायन में चतुर्थ स्थान रहा। डॉ. अवधेश प्रताप सिंह तोमर एवं डॉ. राहुल स्वर्णकार के मार्गदर्शन से शोध छात्र यश गोपाल श्रीवास्तव एवं गगन राज ने संगीत की विभिन्न विद्याओं का समन्वय किया। दल प्रभारी सांस्कृतिक एवं अकादमिक गतिविधि प्रकोष्ठ के समन्वयक डॉ. तोमर ने बताया कि सांगीतिक विधाओं में वि. वि. को द्वितीय पुरस्कार प्राप्त हुआ। इसी के साथ उन्होंने बताया की विजयी दल के सभी प्रतिभागी राष्ट्रीय युवा उत्सव पंजाब एग्रीकल्चर लुधियाना मे सहभागिता करेंगे। इस अवसर पर कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने सभी को मिष्ठान के साथ बधाई दी एवं आगामी राष्ट्रीय प्रतियोगिता के लिए शुभकामनाएं दीं। छात्र कल्याण अधिष्ठाता प्रो. एडी शर्मा ने बधाई दी। सांस्कृतिक समन्वयक डॉ. राकेश सोनी जी ने बताया कि संगीत विभाग के विद्यार्थियों में संजय कोरी, अतुल पथरोल, मैकलिन सिंह, रिद्धि जैन, यश पाठक ,विधान चौबे, गोलू कुशवाह, हिमांश खरारे, अनुराग यादव ,नीतेश यादव, ओम भट्ट रहे। संगीत विभाग अध्यक्ष प्रो अशोक अहिरवार ने विद्यार्थियों को बधाई देते हुए आगामी राष्ट्रीय युवा उत्सव में सम्मिलित होने हेतु प्रोत्साहित किया।

त्रिदिवसीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन आज से शुरु

सागर. वाणिज्य विभाग, डॉ. हरि सिंह गौर विश्वविद्यालय तथा भारतीय लेखांकन परिषद सागर ब्रांच के संयुक्त तत्वाधीन में त्रिदिवसीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन 14, 15 एवं 16 फरवरी को किया जा रहा है भारतीय लेखांकन परिषद के अध्यक्ष प्रो. वी. अप्पराओ, हैदराबाद, प्रो. जसराज बोहरा, प्रो. जी सोरल, प्रो. संजय बियानी, प्रो. सत्यजीत धर, प्रो. अरिंदम गुप्ता, प्रो. अनिल कुमार, प्रो. केआर शर्मा, प्रो. एनएम खंडेलवाल, प्रो. केए गोयल तथा डॉ. मीनू महेश्वरी, विभिन्न सत्रों में शामिल होंगे.

कन्या छात्रावास में मनाई गई बसंत पंचमी

सागर, देशबन्धु। बसंत पंचमी के अवसर पर कन्या छात्रावास डॉ. हरिसिंह गौर विवि में निवेदिता सरस्वती एवं रानी लक्ष्मीबाई कन्या छात्रावास में बसंत पंचमी की पूजा अर्चना एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किया गया। जिसमें डॉ. रश्मि सिंह मुख्य प्रतिपालिका, डॉ. सुषमा यादव, डॉ. वंदना राजोरिया, डॉ. सुप्रभात दास, डॉ. श्वेता शर्मा, डॉ. शिवानी खरे एवं छात्रावास के कर्मचारियों की उपस्थिति में कन्या छात्रावास की कन्याओं ने आयोजन हर्षोल्लाह से संपन्न किया।

हरित पारंपरिक उद्योगों की प्रगति सतत आर्थिक विकास द्वारा ही संभव है : प्रो. नविता नथानी

सागर(नवदुनिया प्रतिनिधि)। डाक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के वाणिज्य विभाग में चल रहे तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन के द्वितीय दिवस गुरुवार को कई वक्ताओं ने अपने विचार रखे।

मुख्य अतिथि के रूप में प्रो. जसराज बोहरा, पूर्व अध्यक्ष, आइएए व प्रो. प्रदिप्त बनर्जी, पश्चिम बंगाल को आमंत्रित किया गया।

मुख्य अतिथि के रूप में प्रो. नविता नथानी का स्वागत किया गया, जिन्होंने सतत विकास में सतत वित्त पर अपने विचार प्रस्तुत किया। उन्होंने बताया कि इसके माध्यम से ही देश में छोटे उद्योगों की प्रगति संभव है साथ ही सतत वित्त के विभिन्न स्त्रोतों पर प्रकाश डाला।

प्रो. जेके जैन ने बताया कि सतत विकास के लिए हरित क्रांति और सतत् वित्त पोषण की आवश्यकता है व प्रोफेसर पाहवा ने सत्र के दौरान कहा कि छात्रों का सुखद भविष्य उनके वित्तीय ज्ञान एवं आधुनिक विनियोग नीति द्वारा ही संभव है।

कार्यशाला के दौरान अपने विचार रखते हुए अतिथि। ● सौजन्य : आयोजक

इसके बाद तकनीकी सत्र का संचालन किया गया, जिसमें तृतीय सत्र की अध्यक्षता प्रो. जसराज बोहरा व सह अध्यक्षता प्रो. प्रदिप्त बनर्जी द्वारा किया गया। चौथे सत्र की अध्यक्षता प्रो. अरिंदम गुप्ता, पूर्व कोषाध्यक्ष, आइएए द्वारा किया गया।

आज के सत्र में देश के विभिन्न राज्यों के शिक्षाविद, शोधार्थी एवं विद्यार्थियों की ओर से विभिन्न प्रकार के 40 से अधिक शोध पत्र वर्चुअल पढ़े गए।

हरित क्रांति–सतत वित्त पोषण की आवश्यकता

विवि के वाणिज्य विभाग में त्रिदिवसीय अंतराष्ट्रीय सम्मेलन के तकनीकी सत्र में शोध पत्र

नवभारत न्यूज

सागर 15 फरवरी. वाणिज्य विभाग, डॉक्टर हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय में चल रही त्रिदिवसी अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में मुख्य अतिथि प्रो. जसराज बोहरा, पूर्व अध्यक्ष, आईएए तथा प्रो. प्रदिप्त बनर्जी, पश्चिम बंगाल को आमंत्रित किया.

मुख्य अतिथि प्रो. नविता नथानी ने सतत् विकास में सतत् वित्त पर अपने विचार प्रस्तुत किया तथा बताया कि इसके माध्यम से ही देश में छोटे उद्योगों की प्रगति संभव है साथ ही सतत वित्त के विभिन्न स्रोतों पर प्रकाश डाला. तकनीकी सत्र का संचालन किया गया जिसमें अध्यक्षता प्रो. जसराज बोहरा तथा सह अध्यक्षता प्रो. प्रदिप्त बनर्जी द्वारा किया गया. चौथे सत्र की अध्यक्षता प्रो. अरिंदम गुप्ता, पूर्व कोषाध्यक्ष, आई. ए. ए. द्वारा किया गया.

सत्र में देश के विभिन्न राज्यों के शिक्षाविद, शोधार्थी एवं विद्यार्थियों द्वारा 40 से अधिक शोध पत्र पढ़े गए. प्रो. जेके जैन ने बताया कि सतत विकास के लिए हरित क्रांति और सतत् वित्त पोषण की आवश्यकता है तथा प्रोफेसर पाहवा ने सत्र के दौरान कहां की छात्रों का सुखद भविष्य उनके वित्तीय ज्ञान एवं आधुनिक विनियोग नीति द्वारा ही संभव है. कार्यक्रम का संचालन विभाग के शोधार्थी हर्षित जैन, भव्यता जैन, एवं पूजा साहू द्वारा डॉक्टर रूपाली सैनी, सहायक प्राध्यापक, वाणिज्य विभाग के मार्गदर्शन में किया गया.

वित्तीय घोटोलों पर गहन शोध की आवश्यकता

सागर. कार्यक्रम के उद्घाटन सत्र में मुख्य वक्ता निजवा विश्वविद्यालय ओमान की सह प्राध्यापक डॉ. कनीज फातिमा ने वित्तीय घोटालो से होने वाली हानियां तथा बचाव के उपाय उपाय पर अपना विशिष्ट शोध पत्र प्रस्तुत किया. कार्यक्रम के निर्देशक प्रो. जैन द्वारा सभी मुख्य अतिथियों एवं सहभागियों का स्वागत किया गया तथा उद्घाटन सत्र का समापन प्रो. मनविंदर सिंह पाहवा द्वारा धन्यवाद ज्ञापित करके किया गया. सम्मेलन में दो तकनीकी सत्रों का आयोजन किया गया जिसमें देश भर के विभिन्न शिक्षाविदों, शोधार्थियों तथा विद्यार्थियों द्वारा भिन्न-भिन्न विषयों पर करीब 40 शोध पत्र पढ़े गए जिसमें प्रथम तकनीकी सत्र की अध्यक्षता प्रो. आशीष माथुर, केंद्रीय विश्वविद्यालय हरियाणा द्वारा किया गया. अध्यक्षता प्रो. केएस ठाकुर, कुलपति, गोविंद गुरु जनजाति विश्वविद्यालय बांसवाड़ा, राजस्थान द्वारा किया गया. प्रो. अमर नारायण अग्रवाल विभाग संस्थापक श्रेष्ट शोध पत्र पुरूस्कार, प्रो. हरिशचंद्र सैनी श्रेष्ट शोध पत्र पुरूस्कार, प्रो. रमेश कुमार भारती श्रेष्ट शोध पत्र पुरूस्कार, प्रो. प्रफुल कुमार सेठ श्रेष्ट शोध पत्र पुरूस्कार, प्रो. बिमल कुमार जैन स्मृति श्रेष्ट शोध पत्र पुरूस्कार.

विश्वविद्यालय • राजनीति विज्ञान एवं लोक प्रशासन विभाग ने आयोजित की एलुमिनी व्याख्यानमाला

संसदीय व्यवस्था में प्रश्नकाल सबसे महत्वपूर्ण, यह हमारी सरकार को उत्तरदायित्व का बोध कराता है: डॉ. उपाध्याय

भास्कर संवाददाता | सागर

संसदीय व्यवस्था में प्रश्नकाल सबसे महत्वपूर्ण होता है। यह सरकार को उत्तरदायित्व का बोध कराता है। जिन प्रतिमानों को संसदीय लोकतंत्र में अपनाने का संविधान निर्माताओं ने संकल्प लिया था। उन्हें पूर्ण करने के लिए भारतीय लोकतंत्र को मूल्यों पर आधारित परंपराओं को विकसित करना होगा।

यह बात डॉ. हरीसिंह गौर महाविद्यालय के राजनीति विज्ञान के विभागाध्यक्ष प्रो. सर्वेश्वर उपाध्याय ने डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के राजनीति विज्ञान एवं लोक प्रशासन विभाग द्वारा आयोजित एलुमिनी व्याख्यानमाला में कही।

सागर। एलुमिनी व्याख्यानमाला को संबोधित करते वक्ता।

विशिष्ट अतिथि प्रो. जीएल पुणतांबेकर ने कहा राजनीति विज्ञान विषय वर्तमान में सर्वाधिक महत्वपूर्ण विषय है। यह लोक जागरण का विषय है। उन्होंने कहा लोक और सरकार प्रबंधन में नेतृत्व की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। यदि आपको पता हो कि आपके पीछे कौन खड़ा है तो आप युद्ध जीत सकते हैं। यदि आपको पता हो कि आपके आगे कौन खड़ा है तो आप दुनिया जीत सकते हैं। भारत में वर्तमान संसदीय लोकतंत्र एक श्रेष्ठ नेतृत्व दे रहा है। कार्यक्रम संयोजक एवं विभागाध्यक्ष प्रो. अनुपमा कौशिक ने कहा विद्यार्थी विभाग के ऐसे पूर्व विद्यार्थियों से प्रेरित हों, जिन्होंने अपने जीवन में सफलता हासिल की है, उन्हीं से रूबरू कराने के उद्देश्य से यह एलुमिनी व्याख्यानमाला आयोजित की जाती है। प्रो. कौशिक ने संसदीय प्रजातंत्र को उत्तरदायित्व बोध की सर्वश्रेष्ठ प्रणाली कहा। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे प्रो. दिवाकर सिंह राजपूत ने कहा आज पूरा विश्व भारत की तरफ विश्वास से देख रहा है। भारत में ज्ञान ही सबसे महत्वपूर्ण है। यह विद्यार्थियों में समझ व संसदीय परंपरा की जीवन शैली विकसित करता है। छात्र-छात्राओं को पाठ्यक्रम के साथ-साथ विश्वविद्यालय की अन्य अकादमिक व सांस्कृतिक गतिविधियों में शामिल होना चाहिए। संचालन निधि सिंह ने किया। आभार डॉ. रणवीर सिंह ने माना। मुख्य वक्ता का परिचय डॉ. दीपक मोदी ने दिया। इस मौके पर प्रो. अनुपम शर्मा, प्रो. नागेश दुबे, डॉ. नेहा निरंजन, डॉ. आफरीन खान, डॉ. सत्यनारायण देवलिया, डॉ. शिवकुमार परोचे, समीर पांडे आदि मौजूद थे।

प्रत्येक भारतीय के पास होगी अपार-आइडी

सागर(नवदुनिया प्रतिनिधि)। विद्यार्थियों के अकादमिक रिकार्ड को डिजिटली उपलब्ध कराने में डाक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर ने देश भर के अग्रणी संस्थानों में शुमार होते हुए दूसरा स्थान हासिल किया है। इसके लिए नई दिल्ली के एक होटल में आयोजित राष्ट्रीय कार्यक्रम में केन्द्रीय शिक्षा मंत्री डा. धर्मेन्द्र प्रधान ने विवि की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता को सम्मानित किया।

इस अवसर पर केन्द्रीय शिक्षा मंत्री डा. धर्मेंद्र प्रधान ने संबोधित करते हुए कहा कि आने वाले समय में प्रत्येक भारतीय के पास अपार-आइडी उपलब्ध होगी जो उसे वैयक्तिक पहचान दिलाएगी। उन्होंने कहा कि एबीसी और डीजी लाकर के माध्यम से ही नई शिक्षा नीति 2020 के महत्त्वपूर्ण उद्देश्य मल्टीपल एंट्री-मल्टीपल एक्जिट की अवधारणा को पूर्ण करने में सहायता मिलेगी। भविष्य में ए बीसी और डीजी लाकर पर उपलब्ध सूचनाओं को एकेडमिक क्रेडिट और जाब प्रोफ़ाइल से लिंक कर रोजगार संबंधी क्षेत्र में उपयोग में लाया जाएगा। पूरी दुनिया ने 53

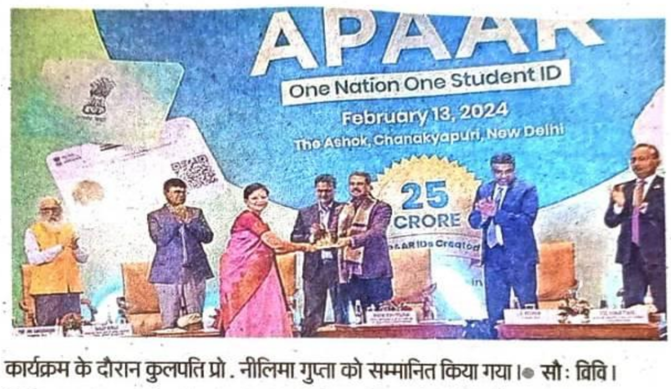

कार्यक्रम के दौरान कुलपति प्रो . नीलिमा गुप्ता को सम्मानित किया गया।● सौः विवि।

डिजिटल पावर इंफ्रास्ट्रक्चर 16 देशों ने मिलकर किया है जिसमें से 19 को भारत ने अकेले विकसित किया है। उन्होंने अपार-आईडी लांच करते हुए दीक्षा, स्वयं, समर्थ जैसे डिजिटल प्लेटफ़ार्म पर भी प्रकाश डाला।

विवि की ईएमआरसी द्वारा बनाई गई दो फिल्मों को राष्ट्रीय स्तर पर सराहा: कार्यक्रम में विवि की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने कहा कि एबीसी, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का एक महत्त्वपूर्ण चरण है। विवि ने इसके लिए एक नैड प्रकोष्ठ स्थापित किया। एकेडमिक बैंक आफ क्रेडिट के बारे में और इसके लाभ प्रति विद्यार्थियों में जागरूकता पैदा करने के लिए कई उन्मुखीकरण कार्यक्रम आयोजित किए गए। एकेडमिक बैंक आफ क्रेडिट के प्रति जागरूकता के लिए विवि की ईएमआरसी द्वारा बनाई गई दो फिल्मों को राष्ट्रीय स्तर पर सराहा गया है। उन्होंने कहा कि डीजीलाकर के माध्यम से डिग्री देने वाले संस्थानों में हम देश में अग्रणी विश्वविद्यालय हैं। उन्होंने इसके लिए विश्वविद्यालय के प्रशासनिक अधिकारियों, शिक्षकों, तकनीकी स्टाफ की सराहना की।

25 करोड़ विद्यार्थियों के अकादमिक रिकार्ड डिजिटल प्लेटफ़ार्म पर उपलब्ध

गौरतलब है कि शिक्षा मंत्रालय द्वारा 'वन स्टूडेंट-वन आइडी'-अपार आइडी लांच किया गया है, जिसके तहत 25 करोड़ विद्यार्थियों के अकादमिक रिकार्ड- डिजिटल प्लेटफ़ार्म पर उपलब्ध हैं। इस उपलब्धि के अवसर पर केन्द्रीय शिक्षा मंत्रालय द्वारा एक राष्ट्रीय कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में एकेडमिक बैंक आफ क्रेडिट क्रियान्वयन में अग्रणी शीर्ष चार संस्थानों के कुलपतियों को केन्द्रीय शिक्षा मंत्री ने सम्मानित किया। कार्यक्रम में यूजीसी अध्यक्ष प्रो. एम जगदीश कुमार, एनईटीएफ के चेयरमैन प्रो. अनिल सहस्त्रबुधे, एनसीवीईटी के चेयरमैन डा. निर्मलजीत सिंह, उच्च शिक्षा सचिव संजय के मूर्ति कौशल, विवि प्रतिनिधि के रूप में प्रभारी परीक्षा नियंत्रक डा. एसपी गादेवार, विवि नैड के नोडल अधिकारी डा. अरविन्द मिश्रा भी मौजूद रहे।

एकेडमिक बैंक ऑफ क्रेडिट क्रियान्वयन में डॉ. गौर विवि देश भर में दूसरे नंबर पर

केन्द्रीय शिक्षा मंत्री डॉ. धर्मेन्द्र प्रधान ने किया कुलपति को सम्मानित

सागर, देशबन्धु। डॉ. हरीसिंह गौर विवि विद्यार्थियों के अकादमिक रिकॉर्ड को डिजिटली उपलब्ध कराने में देश भर के अग्रणी संस्थानों में शुमार होते हुए दूसरे नंबर पर है। इसके लिए नई दिल्ली में आयोजित एक राष्ट्रीय कार्यक्रम में केन्द्रीय शिक्षा मंत्री डॉ. धर्मेन्द्र प्रधान ने विवि की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता को सम्मानित किया। गौरतलब है कि शिक्षा मंत्रालय द्वारा वन स्टूडेंट-वन आईडी अपार आईडी लांच किया गया है जिसके तहत 25 करोड़ विद्यार्थियों के अकादमिक रिकॉर्ड 'डिजिटल प्लेटफॉर्म पर उपलब्ध हैं। इस उपलब्धि के अवसर पर केन्द्रीय शिक्षा मंत्रालय द्वारा एक राष्ट्रीय कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में एकेडमिक बैंक ऑफ क्रेडिट क्रियान्वयन में अग्रणी शीर्ष चार संस्थानों के कुलपतियों को केन्द्रीय शिक्षा मंत्री डॉ. धर्मेन्द्र प्रधान ने सम्मानित किया। इस अवसर पर केन्द्रीय शिक्षा मंत्री डॉ. धर्मेन्द्र प्रधान ने कहा कि आने वाले समय में प्रत्येक भारतीय के पास अपार आई डी उपलब्ध होगी जो उसे वैयक्तिक पहचान दिलायेगी। एबीसी और डीजी लॉकर के माध्यम से ही नई शिक्षा नीति 2020 के महत्वपूर्ण उद्देश्य मल्टीपल एंट्री मल्टीपल एक्जिट की अवधारणा को पूर्ण करने में सहायता मिलेगी। भविष्य में एबीसी और डीजीलॉकर पर उपलब्ध सूचनाओं को एकेडमिक क्रेडिट और जॉब प्रोफाइल से लिंक कर रोजगार संबंधी क्षेत्र में उपयोग में लाया जाएगा। पूरी दुनिया ने 53 डिजिटल पॉवर इंफ्रास्ट्रक्चर 16 देशों ने मिलकर किया है जिसमें से 19 को भारत ने अकेले विकसित किया है। उन्होंने अपार आईडी लांच करते हुए दीक्षा, स्वयं, समर्थ जैसे डिजिटल प्लेटफॉर्म पर भी प्रकाश डाला। कार्यक्रम में विवि की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने विवि में एकेडमिक बैंक ऑफ क्रेडिट के क्रियान्वयन की रणनीतियों और इसके सफल क्रियान्वयन पर वक्तव्य देते हुए कहा कि इस काम को एक मिशन के तहत किया गया है। एबीसीए राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का एक महत्वपूर्ण चरण है। विवि ने इसके लिए एक नैड प्रकोष्ठ स्थापित किया। एकेडमिक बैंक ऑफ क्रेडिट के बारे में और इसके लाभ प्रति विद्यार्थियों में जागरूकता पैदा करने के लिए कई उन्मुखीकरण कार्यक्रम आयोजित किये गए। अभी तक लगभग 1.5 लाख डिग्रियां ऑनलाइन उपलब्ध कराई जा चुकी हैं। डीजीलॉकर के माध्यम से डिग्री देने वाले संस्थानों में हम देश में अग्रणी विवि हैं। उन्होंने यूजीसी, डीजीलॉकर और नैड के सभी टीम और सदस्यों का आभार जताया। विवि प्रतिनिधि के रूप में प्रभारी परीक्षा नियंत्रक डॉ. एसपी गादेवार तथा विवि नैड के नोडल अधिकारी डॉ. अरविन्द मिश्रा भी मौजूद रहे।

एकेडमिक बैंक ऑफक्रेडिट क्रियान्वयन में डॉ.गौर विवि देश में द्वितीय

सागर ■ राज न्यूज नेटवर्क

केन्द्रीय शिक्षा मंत्री ने किया कुलपति को सम्मानित

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर विद्यार्थियों के अकादमिक रिकॉर्ड को डिजिटली उपलब्ध कराने में देशभर के अग्रणी संस्थानों में शुमार होते हुए दूसरे नंबर पर है। इसके लिए नई दिल्ली के होटल चाणक्य में आयोजित एक राष्ट्रीय कार्यक्रम में केन्द्रीय शिक्षा मंत्री डॉ. धर्मेन्द्र प्रधान ने विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता को सम्मानित किया। गौरतलब है कि शिक्षा मंत्रालय द्वारा द्यवन स्टूडेंट.वन आईडी.अपार आईडी लांच किया गया है, जिसके तहत 25 करोड़ विद्यार्थियों के अकादमिक रिकॉर्ड डिजिटल प्लेटफॉर्म पर उपलब्ध हैं। इस उपलब्धि के अवसर पर केन्द्रीय शिक्षा मंत्रालय द्वारा एक राष्ट्रीय कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में एकेडमिक बैंक ऑफक्रेडिट क्रियान्वयन में अग्रणी शीर्ष चार संस्थानों के कुलपतियों को केन्द्रीय शिक्षा मंत्री डॉ. धर्मेन्द्र प्रधान ने सम्मानित किया।

इस अवसर पर केन्द्रीय शिक्षा मंत्री डॉ. धर्मेन्द्र प्रधान ने संबोधित करते हुए कहा कि आने वाले समय में प्रत्येक भारतीय के पास अपार.आई डी उपलब्ध होगी जो उसे वैयक्तिक पहचान दिलाएगी। एबीसी और डीजीलॉकर के माध्यम से ही नई शिक्षा नीति 2020 के महत्वपूर्ण उद्देश्य मल्टीपल एंट्री.मल्टीपल एक्जिट की अवधारणा को पूर्ण करने में सहायता मिलेगी। भविष्य में, बीसी और डीजीलॉकर पर उपलब्ध सूचनाओं को एकेडमिक क्रेडिट और जॉब प्रोफाइल से लिंक कर रोजगार संबंधी क्षेत्र में उपयोग में लाया जाएगा। पूरी दुनिया ने 53 डिजिटल पॉवर इंफ्रास्टक्चर 16 देशों ने मिलकर किया है जिसमें से 19 को भारत ने अकेले विकसित किया है। उन्होंने अपार.आईडी लांच करते हुए दीक्षा, स्वयं, समर्थ जैसे डिजिटल प्लेटफॉर्म पर भी प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि नई शिक्षा नीति के माध्यम से स्किल, नॉलेज और स्पोर्ट्स तीनों में बराबर समन्वय स्थापित किया जा रहा है। कार्यक्रम में विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने विश्वविद्यालय में एकेडमिक बैंक ऑफ क्रेडिट के क्रियान्वयन की रणनीतियों और इसके सफल क्रियान्वयन पर वक्तव्य देते हुए कहा कि इस काम को एक मिशन के तहत किया गया है। एबीसीए राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का एक महत्वपूर्ण चरण है। विश्वविद्यालय ने इसके लिए एक नैड प्रकोष्ठ स्थापित किया। एकेडमिक बैंक ऑफ क्रेडिट के बारे में और इसके लाभ प्रति विद्यार्थियों में जागरूकता पैदा करने के लिए कई उन्मुखीकरण कार्यक्रम आयोजित किए गए। एकेडमिक बैंक ऑफक्रेडिट के प्रति जागरूकता हेतु विश्वविद्यालय की ईएमआरसी द्वारा बनाई गई दो फिल्मों को राष्ट्रीय स्तर पर सराहा गया है देश भर के अकादमिक संस्थानों में विद्यार्थी जागरूकता हेतु इन फिल्मों को भेजा गया।

विश्वविद्यालय की वेबसाइट पर इंटरऐक्टिव लिंक उपलब्ध कराया गया है जो डिजीलॉकर से सीधे संबंधित है। इसके माध्यम से लगातार विद्यार्थियों का पंजीकरण जारी है। इसमें वर्ष 2009 से 2023 तक की सभी विद्यार्थियों की डिग्री ऑनलाइन उपलब्ध कराया गया है। 2023.24 से हम एकीकृत समर्थ पोर्टल से भी जुड़ गए हैं। यह कार्य लगातार जारी है। अभी तक लगभग 1०5 लाख डिग्रियां ऑनलाइन उपलब्ध कराई जा चुकी हैं। उन्होंने कहा कि डीजीलॉकर के माध्यम से डिग्री देने वाले संस्थानों में हम देश में अग्रणी विश्वविद्यालय हैं। उन्होंने इसके लिए विश्वविद्यालय के प्रशासनिक अधिकारियों, शिक्षकों, तकनीकी स्टाफकी सराहना की।

विवि के केंद्रीय होने के बाद 2009 से 2023 के बीच के 1.45 लाख डिग्री, डिप्लोमा, ग्रेड शीट व ट्रांसस्क्रिप्ट डिजीलॉकर पर की अपलोड

देश-विदेश के विश्वविद्यालयों में दस्तावेज का सत्यापन होगा ऑनलाइन

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

सागर. डॉ. हरिसिंह गौर केंद्रीय विश्वविद्यालय ने डिजीलॉकर पर विद्यार्थियों के दस्तावेज अपलोड करने में तो बेहतर काम किया ही है। अब इसके बाद विवि देश-विदेश के अन्य विश्वविद्यालयों में प्रवेश के पहले होने वाले दस्तावेज प्रमाणीकरण की प्रक्रिया को भी सरल करने को लेकर काम कर रहा है।

अधिकारियों का कहना है कि वर्तमान में यदि कोई विद्यार्थी विदेश के किसी विवि में प्रवेश लेने अपने दस्तावेज देता है तो वहां से पोस्ट से उसके दस्तावेज यहां आते हैं और उन्हें प्रमाणित होने के बाद वापस भेजने तक की प्रक्रिया में छह माह का समय लग जाता है। इसलिए अब दस्तावेज प्रमाणीकरण की इस प्रक्रिया को सरल बनाने को लेकर काम शुरू कर दिया है। आने वाले समय में यह व्यवस्था होगी कि विश्वविद्यालय में पढ़े विद्यार्थियों के दस्तावेजों का प्रमाणीकरण ऑनलाइन प्रक्रिया के तहत सीमित समय में होने लगेगा। प्रबंधन ने 2017 में विद्यार्थियों के दस्तावेज को डिजीलॉकर पर अपलोड करने का काम शुरू किया था। इसमें शुरुआत

में वर्ष 2017 से 2022 के बीच के दस्तावेज अपलोड किए, इसके बाद 2009 से 2016 के बीच के दस्तावेजों को डिजीलॉकर पर अपलोड किया गया। इसके बाद अब 2023 तक के अध्ययनरत विद्यार्थियों का शैक्षणिक संबंधी पूरा डाटा डिजीलॉकर पर मौजूद है। प्रबंधन ने वर्ष 2009 से लेकर 2023 के बीच अध्ययनरत विद्यार्थियों की डिग्री, डिप्लोमा, ग्रेड शीट और ट्रांसस्क्रिप्ट को मिलाकर कुल 1 लाख 45 हजार 56 दस्तावेज डिजी लॉकर पर अपलोड कर दिए हैं।

यह दस्तावेज डिजी लॉकर पर

55 विद्यार्थियों के डिप्लोमा।

15815 विद्यार्थियों की डिग्री।

60105 विद्यार्थियों की ट्रांसस्क्रिप्ट।

69081 विद्यार्थियों की ग्रेड शीट।

मिला सम्मान

अकादमिक रिकॉर्ड को डिजिटली उपलब्ध कराने को लेकर विवि देश अपनी पहचान स्थापित कर चुका है। हालही में दिल्ली में आयोजित एक कार्यक्रम में केंद्रीय शिक्षा मंत्री डॉ. धर्मेंद्र प्रधान ने विश्वविद्यालय को इस उपलब्धि के लिए सम्मानित भी किया है। विश्वविद्यालय की वेबसाइट पर इंटरऐक्टिव लिंक उपलब्ध कराया गया है जो डिजीलॉकर से सीधे संबंधित है। इसके माध्यम से लगातार विद्यार्थियों का पंजीकरण जारी है। इसके अलावा 2023-24 से एकीकृत समर्थ पोर्टल से भी जुड़ गया है।

साथ में लेकर नहीं चलने होंगे दस्तावेज

विवि के परीक्षा नियंत्रक डॉ. सुरेंद्र पी गादेवार ने बताया कि डिजीलॉकर पर शैक्षणिक दस्तावेज अपलोड होने के बाद अब विद्यार्थियों को अपने डिग्री, डिप्लोमा, मार्कशीट आदि साथ में लेकर घूमने की जरूरत नहीं होगी। ऐसा होने से अब दस्तावेजों के गुमने जैसी समस्याएं भी नहीं आएंगी। वहीं यदि दस्तावेज कहीं खो जाते हैं तो उनको रिकवर करना भी डिजीलॉकर के माध्यम से आसान होगा।

स्वास्थ्य के प्रति जागरुकता आवश्यक : प्रो . गुप्ता

नवभारत न्यूज

सागर 19 फरवरी. कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता की अध्यक्षता में क्षेत्रीय संचालक स्वस्थ सेवाएं एवं जिला अस्पताल के संयुक्त तत्वाधान मे कैंसर परीक्षण शिविर का केंद्रीय विश्वविद्यालय के स्वास्थ्य केंद्र मे आयोजित किया गया.

शिविर में कुलपति प्रो. गुप्ता ने कहा कि आज के समय में स्वास्थ्य के प्रति जागरुकता होना बहुत आवश्यक है. शिविर में लगभग 55 लोगों के मुंह के कैंसर सर्वाइकल कैंसर आदि से संबंधित परीक्षण विशेषज्ञ चिकित्सकों द्वारा किए गए. समन्वयक मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ. अभिषेक जैन ने शिविर की उपयोगिता के बारे में बताया. और लोगों को कैंसर के प्रति जागरूक किया. शिविर में एक मरीज के कैंसर होने की संभावना के पहचान चिन्ह मिले, जिसे तुरंत ही स्वास्थ्य केंद्र में थर्मल एविलेशन के जरिए उपचारित किया गया. शिविर में डॉ. ज्योति चौहान, डॉ. सुशीला यादव, डॉ. ममता तिमोरी, डॉ. जयंत, डॉ. ललिता पाटील, डॉ. किरण सिंह, डॉ. किरण माहेश्वरी आदि मौजूद रहे.

सौगात डा हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय में 250 करोड़ की लागत से नए भवनों का निर्माण होगा जल्द

प्रधानमंत्री ने तीन भवनों का किया वर्चुअल उद्घाटन

सागर (नवदुनिया प्रतिनिधि)। डा हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के नवीन भवनों का लोकार्पण कार्यक्रम मंगलवार को विश्वविद्यालय के अभिमंच सभागार में आयोजित किया गया। आनलाइन माध्यम से रिमोट के जरिये प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने शिक्षा मंत्रालय, कौशल विकास मंत्रालय सहित कई अन्य योजनाओं के तहत देश भर के नवनिर्मित भवनों का लोकार्पण किया।

इसी क्रम में डा. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के तीन नवीन भवनों का भी लोकार्पण किया गया। जम्मू से आनलाइन माध्यम से कार्यक्रम का सजीव प्रसारण किया गया, जिसमें जम्मू कश्मीर के उपराज्यपाल मनोज सिन्हा, केंद्रीय मंत्री जीतेंद्र सिंह एवं जम्मू के स्थानीय सांसद मौजूद थे।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा कि भारत विकसित होने के संकल्प के साथ आगे बढ़ रहा है। शिक्षा के संस्थान अपने नवीनतम एवं आधुनिक इंफ्रास्ट्रक्चर के साथ हम तरक्की और विकास के रास्ते पर हैं। देश के युवाओं के बेहतर भविष्य के लिए हम संकल्पित हैं। उन्होंने देश के कई आईआईटी, आईआईएम, केन्द्रीय विश्वविद्यालयों के साथ ही कई शैक्षणिक संस्थानों के भवनों का लोकार्पण किया।

विश्वविद्यालय के अभिमंच सभागार में आयोजित कार्यक्रम को संबोधित करतीं कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता। ● नवदुनिया

इसी क्रम में विश्वविद्यालय के अपराध विज्ञान और फोरेंसिक विज्ञान विभाग, ललित और प्रदर्शन कला विभाग, पुस्तकालय और सूचना विज्ञान विभाग के लिए एकीकृत भवन, केंद्रीय पुस्तकालय भवन का विस्तार और व्यवसाय प्रबंधन भवन विभाग के विस्तारित भवन का भी लोकार्पण हुआ।

ऐसी कई परियोजनाएं होगी जल्द ही शुरू

इस अवसर पर विश्वविद्यालय की कुलगुरु प्रो. नीलिमा गुप्ता ने प्रधानमंत्री का आभार जताया। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय में ये तीन भवन नई संरचनाओं एवं आधुनिक सुविधाओं के साथ तैयार हुए हैं। कई भवनों के प्रोजेक्ट चल रहे हैं। जल्द ही ऐसे कई नवीन अकादमिक भवन और प्रयोगशालाएं विश्वविद्यालय में विद्यार्थियों के उपयोग के लिए तैयार हो जायेंगी। उन्होंने कहा कि अभी हाल ही में विश्वविद्यालय को लगभग 250 करोड़ की नवीन परियोजनाओं की स्वीकृति मिली है, जिसका निर्माण कार्य शीघ्र ही शुरू होगा।

इसमें सिंथेटिक ट्रेक, स्वीमिंग पूल, कंवेंश सैंटर, फूड प्लाजा, पैरामेडिकल एवं इंजीनियरिंग विभागों के नवीन भवन, खेल सुविधाएं एवं अन्य कई आवश्यक परियोजनाएं शामिल हैं। कार्यक्रम का संचालन डा. आशुतोष ने किया। प्रभारी कुलसचिव डा. एसपी उपाध्याय द्वारा आभार व्यक्त किया गया। कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के समस्त शिक्षक, अधिकारी, कर्मचारी एवं शोध छात्र सहित बड़ी संख्या में विद्यार्थी उपस्थित रहे।

भारत-नेपाल उच्च शिक्षा शिखर सम्मेलन.2024 में कुलपति ने दिया उद्बोधन

शिक्षा का अंतर्राष्ट्रीयकरण वैश्विक मूल्यबोध परक पाठ्यचर्याओं से ही संभव. कुलपति प्रो. नीलिमा

आचरण संवाददता

सागर। भारतीय विश्वविद्यालय संघ, नई दिल्ली के तत्तवावधान में 15 से 17 फरवरी 2024 तक उच्च शिक्षा का वैश्वीकरण और अंतर्राष्ट्रीयकरण विषय पर काठमांडू विश्वविद्यालय, काठमांडू नेपाल में भारत के सभी भारतीय विश्वविद्यालयों की एक बैठक आयोजित की गई। जिसमें 117 भारतीय विश्वविद्यालयों ने सहभागिता की डॉ. हरीसिंह गौर विवि. सागर की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता के नेतृत्व में एनईपी 2020 शिक्षा प्रणाली के अंतर्राष्ट्रीयकरण थीम के साथ सम्मिलित हुईं विश्वविद्यालय की प्रो. श्वेता यादव और डॉ. सुनीत वालिया ने भी कार्यक्रम में भाग लिया। शिखर सम्मेलन का उद्घाटन नेपाल के प्रधानमंत्री पुष्प कमल दहल प्रचंड ने किया और उद्घाटन भाषण भी दिया। विभिन्न विश्वविद्यालयों के प्रख्यात कुलपतियों ने कई तकनीकी सत्रों को संबोधित किया। विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने इंटरनेशनल कोलैबोरेशंस एंड पार्टनरशिप बिल्डिंग ब्रिजेज फॉर हायर एजुकेशन विषय पर व्याख्यान देते हुए उन्होंने शिक्षा प्रणाली के अंतर्राष्ट्रीयकरण और वैश्वीकरण पर प्रकाश डाला उन्होंने छात्र विनिमय कार्यक्रमों के माध्यम से अंतर्राष्ट्रीय छात्रों की भागीदारी के बारे में चर्चा की उन्होंने करीकुलम के वैश्विक मूल्यों पर जोर देते हुए कहा कि हमें इस पर अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है तभी हम वैश्विक स्तर पर अपने ज्ञान संसाधनों एवं उसकी महत्ता को बतला सकने में सक्षम होंगे। उन्होंने भारतीय छात्रों के बढ़ते पलायन एवं ब्रेन-ड्रेन जैसे तथ्यों की तरफ भी ध्यान आकृष्ट करते हुए कहा कि पढ़ाई के लिए जब छात्र बाहर जाते हैं तो इससे भारतीय मेधा के साथ भारतीय आर्थिकी का भी इससे नुकसान होता है। उन्होंने इसके उपचारात्मक समाधान पर जोर देते हुए कहा कि यूजीसी विदेशी छात्रों को आकर्षित करने और भारतीय छात्रों को वापस बनाए रखने के लिए संस्कृति विविधता जैसे कार्यक्रमों के माध्यम से सुविधा प्रदान कर रहा है। उन्होंने अंतर्राष्ट्रीय छात्रों को आकर्षित करने और आमंत्रित करने के लिए आउट.रीच कार्यक्रम, वेबसाइट लाइन, मजबूत डिजिटल उपस्थिति और लचीली और त्वरित प्रवेश प्रक्रिया और छात्रों के इमीग्रेशन और प्रवास की प्रक्रिया को आसान बनाने का सुझाव दिया प्रो. गुप्ता ने अकादमिक विद्वानों के अंतर्राष्ट्रीयकरण को बढ़ाने पर जोर देते हुए कहा कि इससे घरेलू और वैश्विक शिक्षा प्रणाली की समझ बढ़ेगी और व्यापक सांस्कृतिक आदान-प्रदान और विश्व शांति विकसित होगी। विश्वविद्यालय की अकादमिक उपलब्धियों एवं विशिष्टताओं का किया प्रदर्शन यह आयोजन एक ऐसा बड़ा मंच था जिसमें सभी प्रतिभागी विश्वविद्यालयों ने अपने पाठ्यक्रमों, प्रवेश, प्रक्रियाओं, अनुसंधान क्षेत्रों और सहयोग आदि के संदर्भ में अपनी सक्षम उपस्थिति दर्ज की इसी क्रम में डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय ने भी स्टाल के माध्यम से विश्वविद्यालय की अकादमिक उपलब्धियों, छात्र सुविधाओं, अध्ययन-अध्यापन के वातावरण, पाठ्यक्रमों, शोध.अनुसंधान आदि में अपनी सभी प्रमुख उपलब्धियों को प्रदर्शित किया। काठमांडू के सात से अधिक स्कूलों ने अपने प्रधानाचार्यों और शिक्षकों, उपकुलपतियों, संकाय सदस्यों और विश्वविद्यालय के छात्रों के साथ विश्वविद्यालय के स्टाल का अवलोकन किया और जानकारी प्राप्त की। वहां के कई सरकारी और निजी विश्वविद्यालयों के कुलपतियों और शिक्षकों ने विज्ञान, प्रबंधन, कला, इंजीनियरिंग आदि जैसे विषयों में परियोजनाओं, छात्र विनिमय, कार्यक्रमों, एमओयू के संदर्भ में सहयोग की संभावनाओं पर भी चर्चा कीण् सम्मलेन में ऑस्ट्रेलियाई उच्चायोग, हांगकांग, थाईलैंड और यूनाइटेड किंगडम के प्रतिनिधियों ने चुनौतियों, नई नीतियों के निर्माण और इसके एलाइनमेंट पर भी चर्चा की।

प्रधानमंत्री मोदी ने किया विवि के नवनिर्मित भवनों का लोकार्पण

भारत विकसित होने के संकल्प के साथ आगे बढ़ रहा है: प्रधानमंत्री

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

सागर. डॉ. हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर के नवीन भवनों का लोकार्पण कार्यक्रम विश्वविद्यालय के अभिमंच सभागार में आयोजित किया गया। इस मौके पर ऑनलाइन माध्यम से रिमोट के जरिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शिक्षा मंत्रालय, कौशल विकास मंत्रालय सहित कई अन्य योजनाओं के तहत देश भर के नवनिर्मित भवनों का लोकार्पण किया।

जम्मू से ऑनलाइन माध्यम से कार्यक्रम का सजीव प्रसारण किया गया। प्रधानामंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा कि भारत विकसित होने के संकल्प के साथ आगे बढ़ रहा है। शिक्षा के संस्थान अपने नवीनतम व आधुनिक इंफ्रॉस्ट्रक्चर के साथ हम तरक्की और विकास के रास्ते पर हैं। देश के युवाओं के बेहतर भविष्य के लिए हम संकल्पित हैं।

विश्वविद्यालय की कुलगुरू प्रो. नीलिमा गुप्ता विवि में ये तीन भवन नई संरचनाओं व आधुनिक सुविधाओं के साथ तैयार हुए हैं। कई भवनों के प्रोजेक्ट चल रहे हैं, जल्द ही ऐसे कई नवीन अकादमिक भवन और प्रयोगशालाएं विश्वविद्यालय में विद्यार्थियों के उपयोग के लिए तैयार हो जाएंगी। उन्होंने कहा कि अभी हाल ही में विश्वविद्यालय को लगभग 250 करोड़ की नवीन परियोजनाओं की स्वीकृति मिली है जिसका निर्माण कार्य जल्द ही शुरू होगा। इसमें सिंथेटिक ट्रेक, स्वीमिंग पूल, कन्वेंशन सेंटर, फूड प्लाजा, पैरामेडिकल एवं इंजीनियरिंग विभागों के नवीन भवन, खेल सुविधाएं एवं अन्य कई आवश्यक परियोजनाएं शामिल हैं। कार्यक्रम का संचालन डॉ. आशुतोष ने किया. जबकि प्रभारी कुलसचिव डॉ. एसपी उपाध्याय ने आभार व्यक्त किया।

प्रधानमंत्री मोदी ने किया विश्वविद्यालय के नवनिर्मित भवनों का लोकार्पण

सागर, देशबन्धु। डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के नवीन भवनों का लोकार्पण कार्यक्रम अभिमंच सभागार में आयोजित किया गया। कार्यक्रम में विवि की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने डॉ. गौर और मां सरस्वती पर माल्यार्पण किया। ऑनलाइन माध्यम से रिमोट के जरिये प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शिक्षा मंत्रालय, कौशल विकास मंत्रालय सहित कई अन्य योजनाओं के तहत

देश भर के नवनिर्मित भवनों का लोकार्पण किया। इसी क्रम में डॉ. हरीसिंह गौर विवि के तीन नवीन भवनों का लोकार्पण किया गया। जम्मू से ऑनलाइन माध्यम से कार्यक्रम का सजीव प्रसारण किया गया जिसमें जम्मू कश्मीर के उपराज्यपाल मनोज सिन्हा, केन्द्रीय मंत्री जीतेन्द्र सिंह एवं जम्मू के स्थानीय सांसद मौजूद थे। विवि के अपराध विज्ञान और फोरेंसिक विज्ञान विभाग, ललित और प्रदर्शन कला विभाग, पुस्तकालय और सूचना विज्ञान विभाग के लिए एकीकृत भवन, केंद्रीय पुस्तकालय भवन का विस्तार और व्यवसाय प्रबंधन भवन विभाग के विस्तारित भवन का भी लोकार्पण हुआ। इस अवसर पर विवि की कुलगुरु प्रो. नीलिमा गुप्ता ने प्रधानमंत्री का आभार ज्ञापित किया। उन्होंने कहा कि विवि में ये तीन भवन नई संरचनाओं एवं आधुनिक सुविधाओं के साथ तैयार हुए हैं। कई भवनों के प्रोजेक्ट चल रहे हैं। जल्द ही ऐसे कई नवीन अकादमिक भवन और प्रयोगशालाये विवि में विद्यार्थियों के उपयोग के लिए तैयार हो जायेंगी। अभी हाल ही में विवि को लगभग 250 करोड़ की नवीन परियोजनाओं की स्वीकृति मिली है जिसका निर्माण कार्य शीघ्र ही शुरू होगा। इसमें सिंथेटिक ट्रेक, स्वीमिंग पूल, कन्वेंशन सेंटर, फूड प्लाजा, पैरामेडिकल एवं इंजीनियरिंग विभागों के नवीन भवनए खेल सुविधाएं एवं अन्य कई आवश्यक परियोजनाएं शामिल हैं। कार्यक्रम का संचालन डॉ. आशुतोष ने किया। प्रभारी कुलसचिव डॉ. एसपी उपाध्याय द्वारा आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम में विवि के समस्त शिक्षक, अधिकारी, कर्मचारी एवं शोध छात्र सहित विद्यार्थी उपस्थित रहे।

भारतीय विश्वविद्यालयों की बैठक • भारत-नेपाल उच्च शिक्षा शिखर सम्मेलन- 2024 में कुलपति ने दिया उद्बोधन

पढ़ाई करने के लिए जब हमारे विद्यार्थी विदेश जाते हैं तो इससे भारतीय मेधा के साथ आर्थिकी का भी बहुत नुकसान होता है : कुलपति

भास्कर संवाददाता | सागर

भारतीय विश्वविद्यालय संघ, नई दिल्ली के तत्वावधान में उच्च शिक्षा का वैश्वीकरण और अंतरराष्ट्रीयकरण विषय पर काठमांडू विवि, नेपाल में सभी भारतीय विश्वविद्यालयों की बैठक हुई। इसमें 117 भारतीय विश्वविद्यालयों ने सहभागिता की। डॉ. हरीसिंह गौर विवि की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता के नेतृत्व में एनईपी-2020 शिक्षा प्रणाली के अंतरराष्ट्रीयकरण थीम के साथ शामिल हुईं। विवि की प्रो. श्वेता यादव और डॉ. सुनीत वालिया ने भी कार्यक्रम में भाग लिया।

शिखर सम्मेलन का उद्घाटन नेपाल के प्रधानमंत्री पुष्प कमल दहल प्रचंड ने किया। कुलपति प्रो. गुप्ता ने इंटरनेशनल कोलैबोरेशंस एंड पार्टनरशिपः बिल्डिंग ब्रिजेज फॉर हायर एजुकेशन विषय पर व्याख्यान दिया। उन्होंने छात्र विनिमय कार्यक्रमों के माध्यम से अंतरराष्ट्रीय छात्रों की भागीदारी के बारे में चर्चा की। उन्होंने करिकुलम के वैश्विक मूल्यों पर जोर देते हुए कहा कि हमें इस पर अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है तभी हम वैश्विक स्तर पर अपने ज्ञान संसाधनों एवं उसकी महत्ता को बता सकने में सक्षम होंगे। उन्होंने भारतीय छात्रों के बढ़ते पलायन एवं ब्रेन ड्रेन जैसे तथ्यों की तरफ भी ध्यान आकृष्ट करते हुए कहा पढ़ाई के लिए जब छात्र बाहर जाते हैं तो इससे भारतीय मेधा के साथ भारतीय आर्थिकी का भी नुकसान होता है। उन्होंने इसके उपचारात्मक समाधान पर जोर देते हुए कहा कि यूजीसी विदेशी छात्रों को आकर्षित करने और भारतीय छात्रों को वापस बनाए रखने के लिए संस्कृति विविधता जैसे कार्यक्रमों के माध्यम से सुविधा प्रदान कर रहा है।

सागर। शिखर सम्मेलन- 2024 में कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने सहभागिता की।

उन्होंने अंतरराष्ट्रीय छात्रों को आकर्षित करने और आमंत्रित करने के लिए आउटरीच कार्यक्रम, वेबसाइट लाइन, मजबूत डिजिटल उपस्थिति और लचीली और त्वरित प्रवेश प्रक्रिया और छात्रों के इमीग्रेशन और प्रवास की प्रक्रिया को आसान बनाने का सुझाव दिया। प्रो. गुप्ता ने अकादमिक विद्वानों के अंतरराष्ट्रीयकरण को बढ़ाने पर जोर देते हुए कहा इससे घरेलू और वैश्विक शिक्षा प्रणाली की समझ बढ़ेगी और व्यापक सांस्कृतिक आदान-प्रदान और विश्व शांति विकसित होगी। प्रतिभागी विश्वविद्यालयों ने अपने पाठ्यक्रमों, प्रवेश-प्रक्रियाओं, अनुसंधान क्षेत्रों और सहयोग आदि के संदर्भ में स्टॉल लगाए।

सागर विश्वविद्यालय ने भी स्टाल के माध्यम से विवि की अकादमिक उपलब्धियों, छात्र सुविधाओं, अध्ययन-अध्यापन के वातावरण, पाठ्यक्रमों, शोध-अनुसंधान आदि में अपनी प्रमुख उपलब्धियों को प्रदर्शित किया। सम्मेलन में ऑस्ट्रेलियाई उच्चायोग, हांगकांग, थाईलैंड और यूनाइटेड किंगडम के प्रतिनिधियों ने चुनौतियों, नई नीतियों के निर्माण और इसके एलाइन्मेंट पर भी चर्चा की।

आयोजन भारत-नेपाल उच्च शिक्षा शिखर सम्मेलन-2024 में कुलपति नीलिमा गुप्ता ने दिया उद्बोधन

छात्रों के विदेश जाने से देश का मेधा व आर्थिक नुकसान

सागर (नवदुनिया प्रतिनिधि)। भारतीय विश्वविद्यालय संघ के तत्वावधान में 15 से 17 फरवरी तक उच्च शिक्षा का वैश्वीकरण और अंतर्राष्ट्रीयकरण विषय पर काठमांडू विश्वविद्यालय (नेपाल) में भारत के सभी भारतीय विश्वविद्यालयों की एक बैठक आयोजित की गई, जिसमें 117 भारतीय विश्वविद्यालयों ने सहभागिता की। डा. हरीसिंह गौर विवि की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता के नेतृत्व में एनईपी 2020-शिक्षा प्रणाली के अंतर्राष्ट्रीयकरण थीम के साथ सम्मिलित हुईं। विश्वविद्यालय की प्रो. श्वेता यादव और डा. सुनीत वालिया ने भी कार्यक्रम में भाग लिया। शिखर सम्मेलन का उद्घाटन नेपाल के प्रधानमंत्री पुष्प कमल दहल 'प्रचंड' ने किया।

विवि द्वारा लगाए गए स्टाल में विवि की उपलब्धियों का प्रदर्शन करतीं छात्राएं। • नवदुनिया

कुलपति गुप्ता ने छात्रों की चर्चा और उन्हें दी सीख

विभिन्न विश्वविद्यालयों के कुलपतियों ने कई तकनीकी सत्रों को संबोधित किया। विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने इंटरनेश्नल कोलैबोरेशंस एंड पार्टनरशिप बिल्डिंग ब्रिजेज फार हायर एजुकेशन विषय पर व्याख्यान देते हुए उन्होंने शिक्षा प्रणाली के अंतर्राष्ट्रीयकरण और वैश्वीकरण पर प्रकाश डाला। उन्होंने छात्र विनिमय कार्यक्रमों के माध्यम से अंतरराष्ट्रीय छात्रों की भागीदारी के बारे में चर्चा की। उन्होंने करीकुलम के वैश्विक मूल्यों पर जोर देते हुए कहा कि हमें इस पर अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है। तभी हम वैश्विक स्तर पर अपने ज्ञान संसाधनों एवं उसकी महत्ता को बताने में सक्षम होंगे। उन्होंने भारतीय छात्रों के बढ़ते पलायन एवं ब्रेन-ड्रेन जैसे तथ्यों की तरफ भी ध्यान आकृष्ट करते हुए कहा कि पढ़ाई के लिए जब छात्र बाहर जाते हैं तो इससे भारतीय मेधा के साथ भारतीय आर्थिकी का भी इससे नुकसान होता है। उन्होंने इसके उपचारात्मक समाधान पर जोर देते हुए कहा कि यूजीसी विदेशी छात्रों को आकर्षित करने और भारतीय छात्रों को वापस बनाए रखने के लिए संस्कृति विविधता जैसे कार्यक्रमों के माध्यम से सुविधा प्रदान कर रहा है। उन्होंने अंतर्राष्ट्रीय छात्रों को आकर्षित करने और आमंत्रित करने के लिए आउट-रीच कार्यक्रम, वेबसाइट लाइन, मजबूत डिजिटल उपस्थिति और लचीली और त्वरित प्रवेश प्रक्रिया और छात्रों के इमीग्रेशन और प्रवास की प्रक्रिया को आसान बनाने का सुझाव दिया। प्रो. गुप्ता ने अकादमिक विद्वानों के अंतर्राष्ट्रीयकरण को बढ़ाने पर जोर देते हुए कहा कि इससे घरेलू और वैश्विक शिक्षा प्रणाली की समझ बढ़ेगी और व्यापक सांस्कृतिक आदान-प्रदान और विश्व शांति विकसित होगी।

अकादमिक उपलब्धियों एवं विशिष्टताओं का प्रदर्शन

यह आयोजन एक ऐसा बड़ा मंच था, जिसमें सभी प्रतिभागी विश्वविद्यालयों ने अपने पाठ्यक्रमों, प्रवेश, प्रक्रियाओं, अनुसंधान क्षेत्रों और सहयोग आदि के संदर्भ में अपनी सक्षम उपस्थिति दर्ज की। इसी क्रम में डा. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय ने भी स्टाल के माध्यम से विश्वविद्यालय की अकादमिक उपलब्धियों, छात्र सुविधाओं, अध्ययन-अध्यापन के वातावरण, पाठ्यक्रमों, शोध-अनुसंधान आदि में अपनी सभी प्रमुख उपलब्धियों को प्रदर्शित किया। काठमांडू के सात से अधिक स्कूलों ने अपने प्रधानाचार्यों और शिक्षकों, उपकुलपतियों, संकाय सदस्यों और विश्वविद्यालय के छात्रों के साथ विश्वविद्यालय के स्टालों को देखा और जानकारी प्राप्त की। वहां के कई सरकारी और निजी विश्वविद्यालयों के कुलपतियों और शिक्षकों ने विज्ञान, प्रबंधन, कला, इंजीनियरिंग आदि जैसे विषयों में परियोजनाओं, छात्र विनिमय कार्यक्रमों, एमओयू के संदर्भ में सहयोग की संभावनाओं पर भी चर्चा की। सम्मलेन में आस्ट्रेलियाई उच्चायोग, हांगकांग, थाईलैंड और यूनाइटेड किंगडम के प्रतिनिधियों ने चुनौतियों, नई नीतियों के निर्माण और इसके एलाइनमेंट पर भी चर्चा की।

डॉ. गौर को भारत रत्न देने की मांग के पत्र का प्रारूप तैयार, केंद्र सरकार को भेजेंगे

विवि में कुलपति की अध्यक्षता में हुई बैठक, समाजवादी चिंतक रघु ठाकुर भी हुए शामिल

भास्कर संवाददाता | सागर

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के कुलपति सम्मेलन कक्ष में बुधवार को डॉ. गौर को भारत रत्न दिए जाने के लिए समीक्षा बैठक कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता की अध्यक्षता में हुई। कुलपति ने कहा डॉ. गौर ने अपनी बहन की पीड़ा को नजदीक से देखा है, उस पीड़ा को जिया है।

चिरकाल तक वह पीड़ा उनके मन मानस में अंकित रही थी, जिसके प्रतिबिंब के रूप में स्त्री शिक्षा से लेकर स्त्री विवाह, स्त्री समानता, स्त्री को संपत्ति में अधिकार, स्त्री को कार्य की आजादी, स्त्री समाज को मुख्यधारा में लाने के लिए उनके द्वारा किए गए कार्य अतुलनीय एवं अनुकरणीय हैं।

इन सभी तथ्यों को रेखांकित करते हुए एक सारगर्भित प्रस्ताव अविलंब तैयार करने उन्होंने जोर दिया। समाजवादी चिंतक रघु ठाकुर ने कहा डॉ. गौर ने अपने जीवनकाल में काफी संघर्ष किए। उन्होंने अपनी मां और बहन को भी जीवन-संघर्ष करते हुए देखा था। इसलिए ऐसे महान स्वप्नदृष्टा और मनीषी को सर्वोच्च नागरिक सम्मान मिले इसके लिए हम सबको प्रयास करना चाहिए। समिति के अध्यक्ष प्रो. संजय जैन ने बताया प्रधानमंत्री, मुख्यमंत्री एवं अन्य को भेजे जाने वाले पत्र का प्रारूप तैयार कर लिया गया है। समिति के अनुमोदन के बाद कुलपति द्वारा इसे भेजा जाएगा। इस पर निर्णय लिया गया कि इस पत्र में आंशिक संशोधन कर पत्र को अंतिम रूप दिया जाए। जिससे इसे अविलंब भेजा जा सके।

सागर। कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता की अध्यक्षता में बैठक हुई।

बैठक में इस बात पर सहमति बनी कि डॉ. गौर को भारत रत्न के लिए सार्थक पहल करते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को डॉ. गौर के अवदानों और कार्यों से अवगत कराया जाए। नगर के जनमानस की इस बहुप्रतीक्षित मांग को भी उनके समक्ष रखा जाए। इसके लिए एक प्रतिनिधिमंडल भेंट के लिए भेजा जाए। इसके लिए आवश्यक पत्राचार भी किया जाए।

समिति ने सर्वसम्मति से यह विचार रखा कि डॉ. गौर ने स्त्री की सामाजिक दशा को सुधारने एवं उच्च शिक्षा उस गरीब से गरीब व्यक्ति तक को हासिल हो, जिसकी वह जीवन में कल्पना भी न कर सका हो, को इस विश्वविद्यालय को दिए अपने दान तथा अपनी विधि की शिक्षा से भारतीय संविधान में ऐसे प्रावधानों को बनाने में विशेष योगदान दिया है। समाज सुधार के साथ-साथ समाज में स्त्री को समानता एवं शिक्षा के अधिकार के पक्षधर, सामाजिक सरोकार के धनी डॉ. गौर को भारत रत्न मिले इस प्रस्ताव को यथाशीघ्र गृह मंत्रालय, भारत सरकार को भेजा जाएगा। बैठक में प्रो. दिवाकर सिंह राजपूत, प्रो. चंदा बेन, प्रो. आरके त्रिवेदी, प्रो. पीपी सिंह, एसआर आठिया, डॉ. संदीप रावत, प्रभारी कुलसचिव डॉ. सत्यप्रकाश उपाध्याय, उपकुलसचिव सतीश कुमार मौजूद थे।

विवि...अधिकारी, कर्मचारी एवं विद्यार्थियों ने मातृभाषा में हस्ताक्षर करने का संकल्प लिया

सागर| डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय एवं शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास नई दिल्ली के संयुक्त तत्वावधान में मातृभाषा में जीवन और व्यवहार विषय पर साप्ताहिक कार्यक्रम का बुधवार को शुभारंभ हुआ। विवि स्थित स्टेट बैंक ऑफ इंडिया शाखा परिसर एवं पोस्ट ऑफिस में मातृभाषा में हस्ताक्षर अभियान चलाया गया। नागरिकों से संकल्प पत्र पर हस्ताक्षर करवाए गए। बैंक एवं पोस्ट ऑफिस के अधिकारियों, कर्मचारियों एवं विद्यार्थियों ने भी मातृभाषा में हस्ताक्षर करने का संकल्प लिया। इस मौके पर कार्यक्रम के नोडल अधिकारी प्रो. अंजीत जायसवाल, प्रो. केएन झा, डॉ. शशि कुमार सिंह, डॉ. विवेक जायसवाल, डॉ. रमाकांत आदि मौजूद थे।

मातृभाषा हस्ताक्षर अभियान चलाया

नवभारत न्यूज

सागर 21 फरवरी. डॉ. हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय एवं शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास नई दिल्ली के संयुक्त तत्वावधान में विवि स्टेट बैंक ऑफ इंडिया शाखा परिसर एवं विवि पोस्ट ऑफिस में मातृभाषा में हस्ताक्षर अभियान चलाया गया.

अभियान के तहत बैंक एवं पोस्ट ऑफिस के अधिकारियों, कर्मचारियों एवं विद्यार्थियों ने भी मातृभाषा में हस्ताक्षर करने का संकल्प लिया. इस अवसर पर प्रो. अजीत जायसवाल, प्रो. केएन झा, डॉ. शशि कुमार सिंह, डॉ. विवेक जायसवाल, डॉ. रमाकांत, डॉ. रविदास अहिरवार मौजूद थे.

शोध मशहूर साइंस जर्नल नेचर में मंगलवार को पब्लिश हुआ है विवि के मानवशास्त्री का शोध

शोध निष्कर्षः बहुसंख्यक वर्ग के मुकाबले अल्पसंख्यक समुदाय के पुरुषों की लंबाई और वजन ज्यादा

आचरण संवाददाता

सागर। भारत में अल्पसंख्यक वर्ग के पुरुषों की लंबाई और वजन, बहुसंख्यक वर्ग पुरुषों के मुकाबले अधिक है। यह निष्कर्ष डॉ. हरीसिंह गौर विवि के मानव शास्त्र विभाग के प्रोफेसर राजेश गौतम व उनके अन्य तीन देश-विदेश के मानव विज्ञानियों ने निकाला है। एक दिन पहले यह शोध-पत्र, दुनिया के नामचीन साइंस जर्नल ÷नेचर ÷ में प्रकाशित हुआ है। शोध-निष्कर्ष के अनुसार संप्रदाय विशेष के मुकाबले, बहुसंख्यक वर्ग को पोषक तत्वों की ज्यादा जरूरत है। जो उन्हें सामान्य भोजन के जरिए नहीं मिल पाते हैं। अल्पसंख्यक वर्ग के पुरुषों का वजन और ऊँचाई इसलिए बेहतर हैं क्योंकि उनके डाइट चार्ट में नॉनवेज भोजन सामान्यतः मौजूद रहता है।

18-84 साल के पुरुषों पर 55 साल पहले हुआ था सर्वे

इस निष्कर्ष को सामने लाने वाले मानव विज्ञानियों में से एक प्रो. गौतम के अनुसार, एंथ्रोपलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया ने वर्ष 1970 के दशक में बहुसंख्यक-अल्पसंख्यक पुरुषों की ऊंचाई और वजन समेत अन्य बॉडी इंडेक्स लिए थे। इस सर्वे में 1891-1957 के बीच देश के विभिन्न हिस्सों में जन्मे 18 से 84 वर्ष के 43,950 पुरुषों को शामिल किया गया था। प्रो. गौतम के अनुसार मैंने व मेरे साथी मानव शास्त्रियों ने इस डाटा का अध्ययन किया। जिसमें इन दोनों वर्गों के पुरुषों की ऊंचाई व वजन के संबंध में उपरोक्त निष्कर्ष सामने आया। एंथ्रोपलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया के इस सर्वे-डाटा में तत्कालीन दोनों वर्गों के शारीरिक के अलावा शैक्षणिक, सामाजिक व आर्थिक स्थितियों का ब्योरा भी शामिल किया था।

शाकाहारी होने से विटामिन बी-12, आयरन की कमी रहती है

इस शोध के अनुसार बहुसंख्यकों की कद-काठी और वजन में कमी का मुख्य कारण उनके भोजन में पर्याप्त मात्रा में पोषक तत्वों की उपलब्धता नहीं होना है। मानव विज्ञानियों के अनुसार भारत में अधिकांश हिंदु परिवार निम्न आय वर्ग से आते हैं। जिसके चलते उनके भोजन में ऐसे खाद्य पदार्थ नहीं होते हैं, जिनमें विटामिन बी-12, आयरन, जिंक, सेलेनियम, ओमेगा-3 और फैटी एसिड की पूर्ति हो पाए। जबकि इन तत्वों की आपूर्ति मांसाहारी भोजन से आसानी से हो जाती है। चूंकि इनके परिवारों में मांसाहार सामान्य है। इसलिए उन्हें यह पोषक तत्व नियमित रूप से मिलते रहते हैं। इन पोषक तत्वों की कुछ हद तक पूर्ति ड्राय फ्रूट्स, गुणवत्तायुक्त खाद्यान्न से हो सकती है लेकिन उनके महंगे होने के कारण यह बहुसंख्यकों की क्रय क्षमता से बाहर होते हैं।

एंथ्रोप्लॉजी के शोध नतीजे लंबे समय तक उपयोगी व प्रभावी होते हैं

उपरोक्त शोध व निष्कर्ष करीब 55 वर्ष पुराने डाटा पर आधारित है। वर्तमान परिपेक्ष्य में इसके उपयोगी होने के सवाल पर मानवशास्त्री प्रो. गौतम का कहना है कि मानव शास्त्र उन गिने-चुनी साइंस फील्ड्स में से है। जिनके शोध का बेसिक मेटेरियल जितना ज्यादा दीर्घकालीन यानी अधिक से अधिक वर्षों पर आधारित होता है। उसके नतीजे भी उतने ही अधिक समय के लिए प्रभावी होते हैं। ताजा निष्कर्ष भले ही 55 वर्ष पुराने डाटा पर आधारित है लेकिन इसके नतीजों में अभी कोई अंतर आया होगा, इसकी संभावना नगण्य है। लेकिन हम शोध के नतीजों के अनुसार अपने भोजन, जीवनचर्या आदि में बदलाव करें तो अगले कुछ दशक में यह नतीजे बदलना शुरु हो जाएंगे। प्रो. गौतम के अनुसार इस शोध में दोनों वर्गों के परिवारों में महिला, लड़के-लड़कियों के पालन-पोषण का माहौल, लिंग भेद, शिक्षा, रोजगार के अवसर, रहन-सहन समेत सामान्य शारीरिक अवस्थाएं कुपोषण, मोटापा-दुबलापन, प्रजनन दर, बुढ़ापा और मृत्युदर आदि का तुलनात्मक डाटा भी शामिल है।

साइंस जर्नल नेचर में प्रकाशित इस शोध अध्ययन में यह तीन अन्य वैज्ञानिक शामिल थे

1.एंथ्रोपलॉजिस्ट प्रो. ग्रेजयाना लिज्ब्रिस्का (मानव जीव विज्ञान और विकास संस्थान, एडम मिकीविक्ज विवि पॉज्नान, पोलेंड) 2. प्रो. प्रेमानंद भारती (जैविक मानव विज्ञान इकाई, भारतीय सांख्यिकी संस्थान, कोलकाता) 3. प्रो.रॉबर्ट एम. मेलिना (एमेरिट्स काइन्सियोलॉजी और स्वास्थ्य शिक्षा विभाग टेक्सॉस विवि यूएसए और स्कूल ऑफ पब्लिक हेल्ड एंड इन्फॉमेशन साइंसेज यूनिवर्सिटी ऑफ लुइस विले, यूएसए)

मातृभाषा हमारी अस्मिता, सामाजिकता और सांस्कृतिक उन्नयन का प्रतीक है

कार्यक्रम के दौरान अपने विचार रखते हुए अतिथि। • नवदुनिया

सागर(नवदुनिया प्रतिनिधि)। डाक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर एवं शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास के संयुक्त तत्वाधान में मनाए जाने वाले अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस सप्ताह के द्वितीय दिवस गुरुवार को मातृ भाषा में जीवन व्यवहार एवं शिक्षा विषय पर व्याख्यान का आयोजन विश्वविद्यालय के मालवीय मिशन प्रशिक्षण केंद्र में किया गया।

सागर (पूर्ववर्ती मानव संसाधन केंद्र) में कुलपति प्रो.नीलिमा गुप्ता के मार्गदर्शन एवं संरक्षण में प्रातः 11 बजे से आयोजित किया गया। कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के रूप में प्रो. अनिल कुमार जैन विभागाध्यक्ष, शिक्षाशास्त्र विभाग ने मातृ भाषा के आवश्यकता एवं उपादेयता पर बात करते हुए कहा कि मातृभाषा सिर्फ सम्प्रेषण या अभिव्यक्ति का माध्यम ही नहीं है बल्कि भारत जैसे बहुभाषी देश में या जीवन व्यवहार एवं शिक्षा का मूलभूत आधार भी है। विश्व के सभी देशों में विकासात्मक माडल में अपनी मातृभाषा के समावेशन का प्रतिविम्ब समाहित है।

हमें अपने जीवन व्यवहार एवं शिक्षा में मातृभाषा के प्रयोग को बढ़ाना ही होगाः कार्यक्रम नोडल अधिकारी प्रो. अजीत जायसवाल, निदेशक, संकाय मामले ने कहा कि हमें यह सोचना चाहिए कि आज हमें मातृभाषा को लेकर दिवस मनाने की परम्परा क्यों आरम्भ करनी पड़ी। सार्वभौमिकीकरण के इस युग में भाषा हमारी सामाजिकता, सांस्कृतिक उन्नयन एवं अस्मिता का महत्वपूर्ण प्रतीक है। हमें अपने जीवन व्यवहार एवं शिक्षा में मातृभाषा के प्रयोग को बढ़ाना ही होगा।

कार्यक्रम की रूपरेखा डा. रजनीश, मंच संचालन डा. पुष्पिता एवं डा. सावन एवं धन्यवाद ज्ञापन डा. नवीन सिंह ने किया। इस अवसर पर डा. रानी दुबे, डा. रश्मि जैन, डा. धर्मेंद्र सर्राफ़, डा. अभिषेक, डा. मेघा दास, डा. चिंतन, अपर्णा श्रीवास्तव, डा. शिवशंकर, डा. योगेश, डा. शकीला उपस्थित रहे।

हरिसिंह गौर केंद्रीय विवि का 32वां दीक्षांत समारोह 13 को

कुलपति ने की तैयारियों को लेकर बैठक

सागर। डॉक्टर हरिसिंह गौर केंद्रीय विश्वविद्यालय, सागर का 32वां दीक्षांत समारोह 13 मार्च 2024 को आयोजित किया जा रहा है। इस संबंध में आवश्यक तैयारियों को लेकर कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता की अध्यक्षता में एक बैठक कुलपति सम्मेलन कक्ष में संपन्न हुई। बैठक में कुलपति ने आयोजन की तैयारियों के संबंध में विभिन्न समितियों के समन्वयक एवं उपसमन्वयकों से चर्चा कर तैयारियों की जानकारी ली और सफल आयोजन हेतु आवश्यक दिशा.निर्देश दिए। आयोजन के मुख्य समन्वयक प्रो. नवीन कानगो ने बताया कि लगभग 1100 विद्यार्थियों ने अभी तक पंजीकरण कराया है जिसमें से लगभग 850 विद्यार्थियों ने उपस्थित होकर डिग्री लेने की सहमति दी है। पंजीकरण की तिथि में वृद्धि करते हुए अंतिम तिथि 29 फरवरी 2024 कर दी गई है ताकि ज्यादा से ज्यादा विद्यार्थी दीक्षांत समारोह में सहभागिता कर सकें। विद्यार्थियों की सहभागिता सुनिश्चित करने हेतु विश्वविद्यालय द्वारा एक गूगल फॉर्म भी शीघ्र अपलोड कर दिया जाएगा। उन्होंने बताया कि विश्वविद्यालय द्वारा निर्धारित पोशाक सफेद कुर्ता पायजामा, सफेद सलवार कुर्ता में विद्यार्थी दीक्षांत समारोह में भाग ले सकेंगे। बुंदेली सतरंगी पगड़ी और स्टोल विश्वविद्यालय द्वारा प्रदान किया जाएगा। प्रभारी परीक्षा नियंत्रक डॉ. सुरेंद्र गादेवार ने बताया कि आयोजन के पहले विद्यार्थियों को निर्धारित काउंटर पर डिग्री फाइल भी प्रदान की जाएगी। विद्यार्थी अद्यतन जानकारी के लिए विश्वविद्यालय की वेबसाइट का अवलोकन करते रहें। बैठक में प्रभारी कुलसचिव डॉ एसपी उपाध्यायए प्रो पीके कठल, प्रो संजय जैन, प्रो एडी शर्मा, प्रो चंदा बेन सहित विभिन्न समितियों के संयोजक एवं सह.संयोजक उपस्थित थे।

विश्वविद्यालय: कुलपति ने किया नववर्ष कैलेंडर का विमोचन

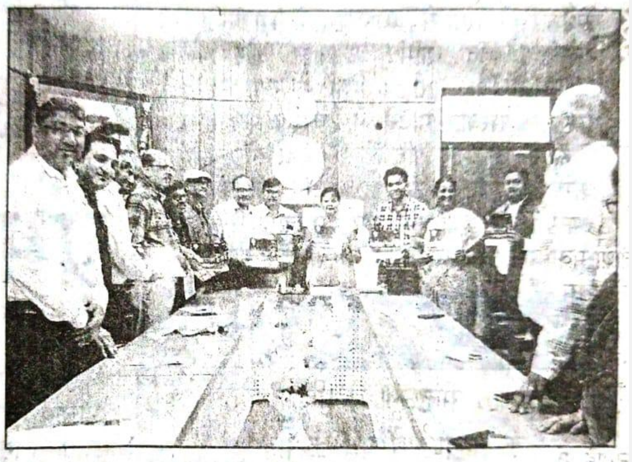

सागर, आचरण। डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर के नव वर्ष 2024 के टेबल कैलेंडर का विमोचन .कुलपति प्रो नीलिमा गुप्ता ने सम्मेलन कक्ष में किया। इस वर्ष कैलेंडर की थीम विश्वविद्यालय के विभिन्न भवनों पर रखी गई है। इस अवसर पर कुलपति प्रो नीलिमा ने कहा कि विश्वविद्यालय के तीन भवनों का लोकापर्ण अभी हाल ही में माननीय प्रधानमंत्री जी द्वारा किया गया है। कई भवन निर्माण प्रगति पर हैं और इसी वर्ष कई नए प्रोजेक्ट की आधारशिला भी रखी जानी है। साथ ही परिसर का विस्तार भी हो रहा है। यह कैलेंडर इसी श्रृंखला को जारी रखने का एक दस्तावेज है जिससे विश्वविद्यालय में स्थापत्य अधोसंरचना के लिए यह वर्ष स्मृति में रहेगा। इस अवसर पर प्रभारी कुलसचिव डॉ एस पी उपाध्याय, प्रो. पी के कठल, प्रो नवीन कानगो, प्रो संजय जैन, प्रो चंदा बेन, प्रो. यू के पाटिल, डॉ विवेक जायसवाल सहित कई शिक्षक मौजूद थे।

आयोजन मातृभाषा में जीवन व्यवहार शिक्षा विषय पर व्याख्यान का आयोजन

मातृभाषा हमारी अस्मिता, सामाजिकता और सांस्कृतिक उन्नयन का प्रतीक है

आचरण संवाददाता

सागर। डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर एवं शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास नई दिल्ली के संयुक्त तत्वाधान में दिनांक 21 फरवरी से 28 फरवरी 2024 तक मनाए जाने वाले अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस सप्ताह के द्वितीय दिवस में दिनांक 22 फरवरी 2024 को मातृ भाषा विषयक व्याख्यान जिसका शीर्षक मातृ भाषा में जीवन व्यवहार एवं शिक्षा का आयोजन विश्वविद्यालय के मालवीय मिशन प्रशिक्षण केंद्र सागर पूर्ववर्ती मानव संसाधन केंद्र में कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता के मार्गदर्शन एवं संरक्षण में प्रातः 11 बजे से आयोजित किया गया है। कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के रूप में प्रो. अनिल कुमार जैन विभागाध्यक्ष, शिक्षाशास्त्र विभाग ने मातृभाषा के आवश्यकता एवं उपादेयता पर बात करते हुए कहा कि मातृभाषा सिर्फ सम्प्रेषण या

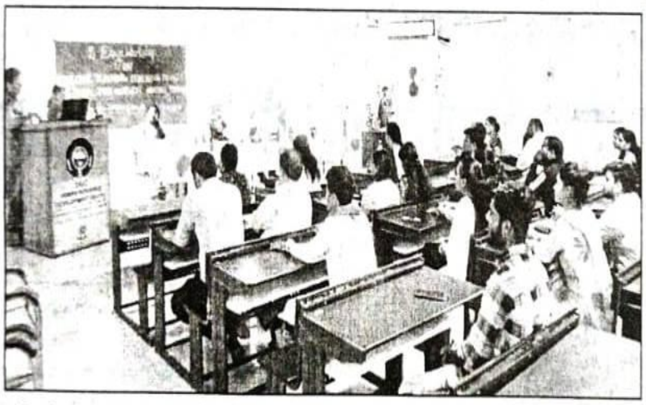

अभिव्यक्ति का माध्यम ही नहीं है बल्कि भारत जैसे बहुभाषी देश में या जीवन व्यवहार एवं शिक्षा का मूलभूत आधार भी है, विश्व के सभी देशों में विकासात्मक मॉडल में अपनी मातृभाषा के समावेशन का प्रतिविम्ब समाहित है। कार्यक्रम नोडल अधिकारी प्रो. अजीत जायसवाल, निदेशक, संकाय मामले ने मातृभाषा सप्ताह के अंतर्गत आयोजित किये जा रहे विभिन्न गतिविधियों का उल्लेख करते हुए कहा कि हमे यह निश्चित रूप से सोचना चाहिए कि आज हमें मातृभाषा को लेकर दिवस मनाने की परम्परा क्यों आरम्भ करनी पड़ी। सार्वभौमिकीकरण के इस युग में भाषा हमारी सामाजिकता, सांस्कृतिक उन्नयन एवं अस्मिता का महत्वपूर्ण प्रतीक है, हमें अपने जीवन व्यवहार एवं शिक्षा में मातृभाषा के प्रयोग को बढ़ाना ही होगा। कार्यक्रम की रूपरेखा डॉ. रजनीश, मंच संचालन डॉ. पुष्पिता एवं डॉ. सावन एवं धन्यवाद ज्ञापन डॉ. नवीन सिंह ने किया। इस अवसर पर डॉ. रानी दुबे, डॉ. रश्मि जैन, डॉ. धर्मेंद्र सर्राफ, डॉ. अभिषेक, डॉ. मेघा दास, डॉ. चिंतन, अपर्णा श्रीवास्तव, डॉ.शिवशंकर, डॉ. योगेश, डॉ. शकीला सहित शिक्षक, शोधार्थी एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे।

विज्ञान शिक्षकों के लिए शिक्षा अधिगम विधियों पर पांच दिवसीय कार्यशाला का उद्घाटन कार्यक्रम 23 को

आचरण संवाददाता

सागर। डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर एवं नई दिल्ली स्थित आईसीएसएसआर एनआरसी के संयुक्त तत्वावधान में पांच दिवसीय कार्यशाला का आयोजन 22.26 फरवरी 2024 को किया जा रहा है। इस कार्यशाला का उद्घाटन 23 फरवरी 2024 को विश्वविद्यालय के अभिमंच सभागार में किया जाएगा। इस कार्यशाला में मुख्य अतिथि उत्तर प्रदेश राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय प्रयागराज की प्रोफेसर सीमा सिंह होंगीए कार्यक्रम की अध्यक्षता माननीय कुलगुरू प्रो. नीलिमा गुप्ता करेंगी। विज्ञान शिक्षकों के लिए प्रभावो शिक्षा अधिगम विधियों पर शिक्षा विभाग द्वारा आयोजित कार्यशाला विज्ञान शिक्षकों के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण है। विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित इस कार्यशाला में शिक्षा अधिगम विधियों पर शिक्षकों को नवीनतम अनुसंधान, उदाहरण, और उपायों के बारे में जानकारी प्रदान की जायेगीए इससे वे अपने शिक्षा कौशल में सुधार कर सकते हैं और अपने छात्रों को बेहतर शिक्षा प्रदान कर सकते है। कार्यशाला की संयोजक शिक्षा विभाग में कार्यरत सहायक प्राध्यापक डॉ. मेघा दास हैं।

कुलपति ने किया नववर्ष कैलेंडर का विमोचन

सागर, देशबन्धु। डॉ. हरीसिंह गौर विवि के नव वर्ष 2024 के टेबल कैलेंडर का विमोचन कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने सम्मेलन कक्ष में किया। इस वर्ष कैलेंडर की थीम विश्वविद्यालय के विभिन्न भवनों पर रखी गई है। कई भवन निर्माण प्रगति पर हैं और इसी वर्ष कई नये प्रोजेक्ट की आधारशिला भी रखी जानी है। साथ ही परिसर का विस्तार भी हो रहा है। यह कैलेंडर इसी श्रृंखला को जारी रखने का एक दस्तावेज है जिससे विश्वविद्यालय में स्थापत्य अधोसंरचना के लिए यह वर्ष स्मृति में रहेगा।

विश्वविद्यालय परिसर में मातृभाषा में हस्ताक्षर अभियान चलाया

सागर, देशबन्धु। डॉ. हरिसिंह गौर विवि एवं शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास नई दिल्ली के संयुक्त तत्वावधान में मातृभाषा में जीवन और व्यवहार विषय पर 21 से 28 फरवरी तक साप्ताहिक आयोजन किया जा रहा है। इसी क्रम में अभिमंच सभागार परिसर में मातृभाषा में हस्ताक्षर अभियान चलाया गया। अभियान श्रृंखला में कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने हस्ताक्षर पटल पर अपनी मातृभाषा में हस्ताक्षर किये। शिक्षा विभाग में आयोजित किये जा रहे कार्यशाला में मुख्य अतिथि के रूप में पधारी उत्तर प्रदेश राजर्षि टंडन मुक्त विवि, प्रयागराज की कुलपति प्रो. सीमा सिंह ने भी मातृभाषा में हस्ताक्षर किये। इस अवसर पर कार्यक्रम के नोडल अधिकारी प्रो. अजीत जायसवाल, डॉ. आशुतोष, डॉ. सुनीत वालिया, डॉ. देवेंद्र विश्वकर्मा सहित कई विद्यार्थी एवं शिक्षक उपस्थित थे।

विवि की कुलगुरु ने किया नववर्ष कैलेंडर का विमोचन

कैलेंडर का विमोचन करती हुई कुलगुरु प्रो . नीलिमा गुप्ता। • नवदुनिया

सागर (नवदुनिया प्रतिनिधि)। डाक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर के नव वर्ष 2024 के टेबल कैलेंडर का विमोचन कुलगुरु प्रो. नीलिमा गुप्ता ने सम्मेलन कक्ष में किया। इस वर्ष कैलेंडर की थीम विवि के विभिन्न भवनों पर रखी गई है। इस अवसर पर कुलगुरु प्रो. नीलिमा ने कहा कि विवि के तीन भवनों का लोकार्पण हाल ही में प्रधानमंत्री द्वारा किया गया है। साथ ही परिसर का विस्तार भी हो रहा है। यह कैलेंडर इसी श्रृंखला को जारी रखने का एक दस्तावेज है जिससे विवि में स्थापत्य अधोसंरचना के लिए यह वर्ष स्मृति में रहेगा। इस अवसर पर प्रभारी कुलसचिव डा. एसपी उपाध्याय, प्रो. नवीन कानगो, प्रो. संजय जैन, प्रो. चंदा बेन, प्रो. यूके पाटिल, डा. विवेक जायसवाल मौजूद थे।

विश्वविद्यालय में कैंसर परीक्षण शिविर का किया गया आयोजन

सागर। कुलपति प्रोफेसर नीलिमा गुप्ता की अध्यक्षता में क्षेत्रीय संचालक स्वस्थ सेवाएं एवं जिला अस्पताल के संयुक्त तत्वावधान मे कैंसर परीक्षण शिविर का केंद्रीय विश्वविद्यालय के स्वास्थ्य केंद्र मे आयोजित किया गया। शिविर में लगभग 55 लोगों के मुंह के कैंसर सर्वाइकल कैंसर आदि से संबंधित परीक्षण विशेषज्ञ चिकित्सकों द्वारा किए गए। शिविर के समन्वयक मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉक्टर अभिषेक जैन ने शिविर की उपयोगिता के बारे में बताया और लोगों को कैंसर के प्रति जागरूक किया। उन्होंने कहा कि समय पर जांच और जागरुकता ही कैंसर से बचाव की महत्वपूर्ण भूमिका है डॉक्टर जैन ने बताया की भारत सरकार शीघ्र ही सर्वाइकल कैंसर आदि के बचाव हेतु के लिए एक नया एचपीवीए टीका राष्ट्रीय टीकाकरण कार्यक्रम में शामिल करने जा रही है शिविर में एक मरीज के कैंसर होने की संभावना के पहचान चिन्ह मिले, जिसे तुरंत ही स्वास्थ्य केंद्र में थर्मल एब्लिेशन के जरिए उपचारित किया गया। कुलपति द्वारा ऐसे उपयोगी शिविर आयोजित किए जाने हेतु निर्देश दिए गए। आयोजन में मिलेट्स यानी मोटे अनाजों की उपयोगिता संबंधित पोस्टर्स का प्रदर्शन किया गया। शिविर में मुख्य रूप से क्षेत्रीय संचालक डॉ ज्योति चौहान, संयुक्त संचालक डॉ सुशीला यादव, मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ ममता तिमोरी, सिविल सर्जन डॉ जयंत, गाइनेकोलॉजिस्ट डॉ ललिता पाटील, डॉ किरण सिंह, डॉ किरण माहेश्वरी, डॉक्टर भूपेंद्र पटेल डेंटल सर्जन डॉ धर्मेंद्र कानोरिया एडॉ संदीप गौतम, स्टाफनर्स ननकी मोनिका जयप्रकाश ममता पटेल भगत और स्वास्थ्य केंद्र के सभी कर्मचारी और विश्वविद्यालय महिला क्लब के सदस्य उपस्थित रहे। डॉक्टर जैन ने बताया कि 20 फरवरी को उक्त कैंसर जांच शिविर पथरिया जाट के ग्राम पंचायत भवन में भी आयोजित किया जा रहा है। उन्होंने सभी से परीक्षण करवाने हेतु आग्रह किया है।

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय में 5 दिवसीय कार्यशाला का उद्घाटन किया

बुक बैंक कॉर्नर और हस्तनिर्मित शिक्षण अधिगम सामग्री की प्रदर्शनी आयोजित

सागर आचरण

शिक्षाशास्त्र विभाग में बुक बैंक कॉर्नर का उद्घाटन किया साथ ही बी.ए./बी.एस.सी.बी.एड. प्रशिक्षुओं द्वारा हस्तनिर्मित शिक्षण अधिगम सामग्री की प्रदर्शनी की गई। आज की मुख्य अतिथि प्रो. सीमा सिंह, कुलपति उत्तर प्रदेश राजर्षि टंडन मुक्त विष्वविद्यालय, प्रयागराज व प्रो. नीलिमा गुप्ता कुलपति डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर, मध्यप्रदेश उपस्थित थे। यह कार्यक्रम प्रो. अनिल कुमार जैन (विभागाध्यक्ष) की अध्यक्षता एवं कार्यक्रम संयोजक सहा. अध्यापक डॉ. अभिषेक कुमार प्रजापति व धर्मेन्द्र कुमार सर्राफ के सहयोग से सम्पन्न हुआ।

5 दिवसीय कार्यशाला का उद्घाटन

शिक्षाशास्त्र विभाग, डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर, मध्यप्रदेश द्वारा आयोजित 5 दिवसीय (22 फरवरी से 26 फरवरी) कार्यशाला का उद्घाटन किया। जिसका विषय "Effective teaching learning methods for under/post graduate science teacher" था। कार्यशाला की मुख्य अतिथि प्रो. सीमा सिंह, कुलपति उत्तर प्रदेश राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज व प्रो. नीलिमा गुप्ता कुलपति डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर, मध्यप्रदेश उपस्थित थे। जिसके तहत प्रो. सीमा सिंह ने कहा कि अपने विद्यार्थियों को जाने और उसके अनुरूप अपनी शिक्षण विधियों का कक्षा कक्ष में उपयोग करें क्योंकि प्रत्येक बच्चा खास है। अध्यक्षीय उद्बोधन हेतु कुलपति नीलिमा गुप्ता को आमंत्रित किया गया जिन्होंने शिक्षकों में नवाचार के साथ सामंजस्य स्थापित करने की बात कही। तत्पश्चात् प्रो. अनिल कुमार जैन (विभागाध्यक्ष) को स्वागत उद्बोधन हेतु मंच पर आमंत्रित किया गया। कार्यशाला की संयोजक डॉ. मेघा दास ने वैचारिक उद्बोधन प्रस्तुत किया। डॉ. धर्मेन्द्र कुमार सर्राफ ने मुख्य अतिथि का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत किया एवं उनको मंच पर आमंत्रित किया। उन्होंने शिक्षण विधियों व शिक्षक के गुणों पर अपने विचार प्रस्तुत किए। अंत में अध्यक्षीय उद्बोधन हेतु कुलपति नीलिमा गुप्ता को आमंत्रित किया गया। जिन्होंने विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास पर अपने विचार प्रस्तुत किए। इस कार्यशाला के उद्घाटन सत्र में शिक्षाशास्त्र विभाग के सभी शिक्षकगण और शोधार्थी, विद्यार्थीगण उपस्थित थे।

दूरस्थ और नियमित शिक्षा मिलकर बनाएंगे नया आयामः- प्रो. नीलिमा गुप्ता

डॉक्टर हरीसिंह गौर वि. वि. सागर, म.प्र. के रजिस्ट्रार डॉ. सत्यप्रकाश उपाध्याय एवं विनय कुमार रजिस्ट्रार उत्तर प्रदेश राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय प्रयागराज ने दोनों विश्वविद्यालय के कुलगुरूओं की गरिमामयी उपस्थिति में एमओयू की औपचारिक प्रक्रिया सम्पन्न कर अपने हस्ताक्षर किए। इसके संदर्भ में डॉ. हरीसिंह गौर वि. वि. सागर, म.प्र. की कुलगुरू प्रो. नीलिमा गुप्ता ने कहा कि इस एमओयू का दूरदर्शी परिणाम यह होगा कि दूरस्थ और नियमित शिक्षा मिलकर नये आयाम स्थापित करेंगे।

शिक्षाशास्त्र विभाग का सर्वश्रेष्ठ प्रशिक्षु शिक्षक पुरस्कार की घोषणा

कार्यक्रम में सर्वश्रेष्ठ प्रशिक्षु शिक्षकों को पुरूस्कृत किया गया। जिसमें कुलपति महोदया ने सर्वश्रेष्ठ शिक्षक प्रशिक्षु कला, विज्ञान तथा शिक्षण सहायक सामग्री बनाने वाले शिक्षक प्रशिक्षुओं हेतु 1000 रूपये के पुरस्कार राशि की घोषणा की। इस वर्ष सर्वश्रेष्ठ शिक्षक प्रशिक्षु कला हेतु अमन जैन तथा शिक्षक प्रशिक्षु विज्ञान हेतु तान्या यादव एवं सर्वश्रेष्ठ शिक्षण सहायक सामग्री हेतु सबा हसन को चुना गया।

बुक बैंक कॉर्नर ▶ **प्रशिक्षु द्वारा हस्तनिर्मित प्रदर्शनी का आयोजन**

विद्यार्थियों को जानकर उनके अनुरुप शिक्षण विधियां बनाएं

नवभारत न्यूज

सागर 25 फरवरी. डॉ. हरीसिंह गौर विवि की शिक्षाशास्त्र विभाग द्वारा आयोजित कार्यशाला का उद्घाटन किया. कार्यशाला की मुख्य अतिथि प्रो. सीमा सिंह, कुलपति उप्र राजर्षि टंडन मुक्त विवि प्रयागराज ने कहा कि विद्यार्थियों को जाने और उसके अनुरूप शिक्षण विधियों का कक्षा कक्ष में उपयोग करें क्योंकि प्रत्येक बच्चा खास है. प्रो. अनिल कुमार जैन (विभागाध्यक्ष) ने स्वागत भाषण दिया. संयोजक डॉ. मेघा दास ने वैचारिक उद्बोधन प्रस्तुत किया. डॉ. धर्मेन्द्र कुमार सर्राफ ने शिक्षण विधियों व शिक्षक के गुणों पर विचार प्रस्तुत किए. कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने अध्यक्षीय उद्बोधन देते हुए विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास पर विचार प्रस्तुत किए. शिक्षाशास्त्र विभाग में बुक बैंक कॉर्नर का उद्घाटन किया साथ ही बीए, बीएससी, बीएड प्रशिक्षुओं द्वारा हस्तनिर्मित शिक्षण अधिगम सामग्री की प्रदर्शनी की गई. कार्यक्रम में सर्वश्रेष्ठ प्रशिक्षु शिक्षकों को पुरूस्कृत किया गया. कुलपति ने सर्वश्रेष्ठ षिक्षक प्रशिक्षु कला, विज्ञान तथा शिक्षण सहायक सामग्री बनाने वाले शिक्षक-प्रशिक्षुओं हेतु 1000 रूपये के पुरूस्कार राशि की घोषणा की. सर्वश्रेष्ठ शिक्षक हेतु अमन जैन तथा तान्या यादव को दिया गया.

फार्मेसी विभाग के सन्नी राठी को मिला युवा वैज्ञानिक पुरस्कार

सागर, देशबन्धु। डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के फार्मेसी विभाग के शोधार्थी सन्नी राठी को माधव इंस्टिट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी एंड साइंस ग्वालियर में 21 से 23 फरवरी तक आयोजित 39 वें एमपी यंग साइंटिस्ट सम्मलेन में यंग साइंटिस्ट अवार्ड से सम्मानित किया गया। सन्नी राठी को उनकी रिसर्च इन सीटू हाइड्रोजल सिस्टम फॉर द मैनेजमेंट ऑफ रूमेटाइड अर्थराइटिस विषय पर रिसर्च के लिए मप्र विज्ञान एवं तकनीकी काउंसिल के डायरेक्टर जनरल, डॉ. अनिल कोठारी द्वारा उक्त पुरुस्कार से सम्मानित किया गया। इस तीन दिवसीय सम्मलेन में राज्य के विभिन्न संस्थानों के 205 शोधकर्ताओं द्वारा अलग अलग स्ट्रीम में शोध पत्र प्रस्तुत किये गये।

मातृभाषा में हस्ताक्षर अभियान चलाया गया

सागर . डॉ . हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय एवं शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास नई दिल्ली के संयुक्त तत्वावधान में मातृभाषा में जीवन और व्यवहार विषय पर साप्ताहिक आयोजन किया जा रहा है . विश्वविद्यालय के अभिमंच सभागार परिसर में मातृभाषा में हस्ताक्षर अभियान चलाया गया . अभियान श्रृंखला में कुलपति प्रो . नीलिमा गुप्ता ने हस्ताक्षर पटल पर मातृभाषा में हस्ताक्षर किए . शिक्षा विभाग में आयोजित किये जा रहे कार्यशाला में मुख्य अतिथि उप्र राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज की कुलपति प्रो . सीमा सिंह ने भी मातृभाषा में हस्ताक्षर किए . उपस्थित विद्यार्थियों, शिक्षकों एवं अधिकारियों ने भी मातृभाषा में हस्ताक्षर किए .

अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा सप्ताह के अंतर्गत स्वभाषा के प्रयोग के लिए कार्यालयों में संपर्क अभियान

जागरण, सागर। डॉ.हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय एवं शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास नई दिल्ली के संयुक्त तत्वावधान में अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा सप्ताह के अन्तर्गत स्वभाषा में नाम पट्टिका एवं कार्यालयों में हिन्दी एवं मातृभाषा का अधिकाधिक प्रयोग करने हेतु जन जागरूकता अभियान चलाया गया। इस अभियान की संरक्षिका विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो.नीलिमा गुप्ता एवं कार्यक्रम के नोडल अधिकारी प्रो.अजीत जायसवाल उपस्थित रहे। कुलपति कार्यालय, कुलसचिव कार्यालय संकाय मामले कार्यालय एवं अन्य कार्यालयों में संपर्क किया गया। कार्यालयों में विश्वविद्यालय के कर्मचारियों द्वारा हिन्दी एवं मातृभाषा के अधिकाधिक प्रयोग हेतु सकारात्मक प्रतिक्रिया दी।

स्वभाषा के प्रयोग हेतु कार्यालयों में संपर्क अभियान चलाया

सागर। डॉ. हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर एवं शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास नई दिल्ली के संयुक्त तत्वावधान में अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा सप्ताह के अन्तर्गत चतुर्थ कार्यक्रम के रूप में स्वभाषा में नाम पट्टिका एवं कार्यालयों में हिन्दी एवं मातृभाषा का अधिकाधिक प्रयोग करने हेतु जन जागरूकता अभियान चलाया गया। इस अभियान की संरक्षिका विश्वविद्यालय की कुलगुरु प्रो. नीलिमा गुप्ता जी एवं कार्यक्रम के नोडल अधिकारी प्रो. अजीत जायसवाल उपस्थित रहे। कुलपति कार्यालय, कुलसचिव कार्यालय, संकाय मामले कार्यालय एवं अन्य कार्यालयों में संपर्क किया गया। कार्यालयों में विश्वविद्यालय के कर्मचारियों द्वारा हिन्दी एवं मातृभाषा के अधिकाधिक प्रयोग हेतु सकारात्मक प्रतिक्रिया दी।

वैज्ञानिक ने लैब में तैयार किया डायटम नैनो फिंगरप्रिंट पाउडर

सागर। डॉक्टर हरिसिंह गौर केंद्रीय विश्वविद्यालय, सागर के अपराध शास्त्र और न्यायिक विज्ञान विभाग में डायटम रिसर्च यूनिट को उनके इंडो. फ्रेंच प्रोजेक्ट सेफिप्रा पर काम करते हुए जर्मनी से एक अंतरराष्ट्रीय पेटेंट प्रदान किया गया है। यह पेटेंट फ्लोरोसेंस डाई युक्त डायटम नैनो.फिंगरप्रिंट पाउडर के संश्लेषण पर है जो काफी सस्ता, कम हानिकारक, पर्यावरण के अनुकूल और अत्यधिक प्रभावी है। प्रोजेक्ट की प्रमुख

फॉरेंसिक मामलों की जांच में होगी पाउडर की महत्वपूर्ण भूमिका

अन्वेषक और सहायक प्राध्यापक डॉ. वंदना विनायक, डॉक्टर हरीसिंह गौर केंद्रीय विश्वविद्यालय सागर के अपराध शास्त्र और न्यायिक विज्ञान विभाग में पिछले एक दशक से अधिक समय से शैवाल डायटम के क्षेत्र में अनुसंधान कर रही हैं। उन्होंने बताया कि फोरेंसिक मामलों की जांच में फिंगरप्रिंट महत्वपूर्ण भौतिक साक्ष्य होते हैं, लेकिन मौजूदा फिंगरप्रिंट पाउडर ऐसे रासायनिक यौगिकों से मिलकर बने होते हैं जो मानव स्वास्थ और पर्यावरण के लिए हानिकारक होते हैं। डायटोमाइट पाउडर गैर.विषाक्त, अपेक्षाकृत किफायती है और विभिन्न सतहों पर फिंगरप्रिंट को बिना उनकी विशेषताओं को नुकसान पहुंचाए हुए विकसित करता है।

उन्होंने बताया कि इस पाउडर के विकास में उनके साथ शोध छात्रों अंकेश अहिरवार, वंदना सिरोटिया, प्रियंका खंडेलवाल और गुरप्रीत सिंह और छात्रा उर्वशी सोनी ने महत्ववपूर्ण भूमिका निभाई है। इसके अलावा साहित्य समीक्षा पर भी कई विद्यार्थियों ने काम किया है। फ्लोरेसेसेंट डायटम पाउडर की कार्यप्रणाली के बारे में विस्तार से बताते हुए उन्होंने बताया कि इसमें एक पॉली लिंकर के साथ एक फ्लोरोसेंट डाई और डायटम फ्रस्ट्यूल्स डायटोमाइट को क्रिया करके विभाग की डायटम लैब में बनाया गया है।

फॉरेंसिक मामलों की जांच में महत्वपूर्ण भूमिका

विवि की वैज्ञानिक ने तैयार किया डायटम नैनो-फिंगरप्रिंट पाउडर, जर्मनी से मिला अंतरराष्ट्रीय पेटेंट

डॉ. वंदना विनायक टीम के साथ।

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

सागर. डॉ. हरिसिंह गौर केंद्रीय विश्वविद्यालय अपराध शास्त्र और न्यायिक विज्ञान विभाग में डायटम रिसर्च यूनिट को उनके इंडो-फ्रेंच प्रोजेक्ट (सेफिप्रा) पर काम करते हुए जर्मनी से एक अंतरराष्ट्रीय पेटेंट मिला है।

यह पेटेंट फ्लोरोसेंस डाई युक्त डायटम नैनो-फिंगरप्रिंट पाउडर के संश्लेषण पर है, जो काफी सस्ता, कम हानिकारक, पर्यावरण के अनुकूल और अत्यधिक प्रभावी है। प्रोजेक्ट की प्रमुख अन्वेषक और सहायक प्राध्यापक डॉ. वंदना विनायक विश्वविद्यालय के अपराध शास्त्र और न्यायिक विज्ञान विभाग में पिछले एक दशक से अधिक समय से शैवाल डायटम के क्षेत्र में अनुसंधान कर रही हैं। इस उपलब्धि पर विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने डॉ. वंदना विनायक, उनकी टीम व विभाग को बधाई दी।

सामान्य पाउडर हानिकारक होते हैं

डॉ. वंदना विनायक ने बताया कि फोरेंसिक मामलों की जांच में फिंगरप्रिंट महत्वपूर्ण भौतिक साक्ष्य होते हैं, लेकिन मौजूदा फिंगरप्रिंट पाउडर ऐसे रासायनिक यौगिकों से मिलकर बने होते हैं जो मानव स्वास्थ और पर्यावरण के लिए हानिकारक होते हैं। डायटोमाइट पाउडर गैर-विषाक्त, अपेक्षाकृत किफायती है और विभिन्न सतहों पर फिंगरप्रिंट को बिना उनकी विशेषताओं को नुकसान पहुंचाए हुए विकसित करता है। उन्होंने बताया कि इस पाउडर के विकास में उनके साथ शोध छात्र अंकेश अहिरवार, वंदना सिरोठिया, प्रियंका खंडेलवाल, गुरप्रीत सिंह और छात्रा उर्वशी सोनी ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इसके अलावा साहित्य समीक्षा पर भी विभाग के कई विद्यार्थियों ने काम किया है।

ऐसे तैयार किया

फ्लोरेसेसेंट डायटम पाउडर की कार्यप्रणाली के बारे में विस्तार से बताते हुए डॉ. वंदना विनायक ने बताया कि इसमें एक पॉली लिंकर के साथ एक फ्लोरोसेंट डाई और डायटम फ्रस्ट्यूल्स (डायटोमाइट) को क्रिया करके विभाग की डायटम लैब में बनाया गया है। पाउडर भौतिक रूप से सतह पर पसीने में मौजूद पदार्थों के साथ रासायनिक क्रिया करके चिपक जाता है और फिर प्रतिदीप्ति फोटोग्राफी की मदद से विकसित उंगलियों के निशान की उच्च गुणवत्ता के साथ फोटो खींची जा सकती है। पाउडर में उच्च कंट्रास्ट, प्रकृति के लिए गैर-विनाशकारी, अत्यधिक संवेदनशीलता, नवीनता और कई अन्य उन्नत विशेषताएं होने के कारण न्यायिक विज्ञान के क्षेत्र में यह अग्रणी योगदान देने वाला उत्पाद साबित होगा।

डा. हरीसिंह गौर विवि ने तैयार किया उच्च गुणवत्तापूर्ण व किफायती फिंगरप्रिंट पाउडर

उपलब्धि ● फारेंसिक मामलों की जांच में उपयोगी हो सकेगा यह पाउडर, इसे जर्मनी से मिला अंतरराष्ट्रीय पेटेंट

सागर (नवदुनिया प्रतिनिधि)। डा. हरी सिंह गौर केंद्रीय विश्वविद्यालय के अपराध शास्त्र और न्यायिक विज्ञान विभाग ने डायटम नैनो-फिंगरप्रिंट पाउडर तैयार किया है, जिससे फारेंसिक मामलों की जांच में अंगुलियों के निशान की गुणवत्तापूर्ण तस्वीर ली जा सकेगी। जर्मनी से इसका अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पेटेंट भी ले लिया गया है।

पेटेंट फ्लोरोसेंस डाई युक्त डायटम नैनो-फिंगरप्रिंट पाउडर के संश्लेषण पर मिला है, जो काफी सस्ता, कम हानिकारक, पर्यावरण के अनुकूल और अत्यधिक प्रभावी है। प्रोजेक्ट की प्रमुख अन्वेषक और सहायक प्राध्यापक डा. वंदना विनायक पिछले एक दशक से अधिक समय से शैवाल डायटम के क्षेत्र में अनुसंधान कर रही थीं और अब उन्हें इसमें सफलता मिली है।

डा. वंदना विनायक ने बताया कि फारेंसिक मामलों की जांच में फिंगरप्रिंट महत्वपूर्ण भौतिक साक्ष्य होते हैं।

पाउडर के निर्माण मे विवि के इन शोध विद्यार्थियों का भी सहयोग रहा। ● सौः विवि जनसंपर्क

मौजूदा फिंगरप्रिंट पाउडर ऐसे रासायनिक यौगिकों से मिलकर बने होते हैं, जो मानव के स्वास्थ्य और पर्यावरण के लिए हानिकारक होते हैं। डायटोमाइट पाउडर गैर-विषाक्त, अपेक्षाकृत किफायती है और विभिन्न सतहों पर फिंगरप्रिंट को बिना उनकी विशेषताओं को नुकसान पहुंचाए विकसित करता है। इस पाउडर के विकास में उनके साथ शोध छात्रों अंकेश अहिरवार, वंदना सिरोठिया, प्रियंका खंडेलवाल, गुरप्रीत सिंह और छात्रा उर्वशी सोनी ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। जर्मनी से इसका पेटेंट 26 जनवरी को मिला है, हालांकि विश्वविद्यालय प्रशासन ने इसे सोमवार को जारी किया।

पाउडर की जानकारी देती हुई प्रोजेक्ट की प्रमुख डा. वंदना विनायक। ● सौः विवि जनसंपर्क

उच्च गुणवत्ता की मिलती है तस्वीर

डा. वंदना ने पाउडर के बारे में विस्तार से बताया कि इसमें एक पाली लिंकर के साथ फ्लोरोसेंट डाई और डायटम फ्रस्ट्यूल्स (डायटोमाइट) को क्रिया करके विभाग की डायटम लैब में बनाया गया है। पाउडर भौतिक रूप से सतह पर पसीने में मौजूद पदार्थों के साथ रासायनिक क्रिया करके चिपक जाता है और फिर प्रतिदीप्ति फोटोग्राफी की मदद से विकसित अंगुलियों के निशान की उच्च गुणवत्ता के साथ फोटो खींची जा सकती है। कुलगुरु प्रो. नीलिमा गुप्ता ने डा. वंदना व उनकी टीम को शुभकामनाएं दी हैं।

फॉरेंसिक मामलों की जांच में पाउडर की होगी महत्वपूर्ण भूमिका

डॉ. गौर विश्वविद्यालय की वैज्ञानिक ने लैब में तैयार किया डायटम नैनो-फिंगरप्रिंट पाउडर, जर्मनी से मिला अंतर्राष्ट्रीय पेटेंट

विजय मत, ब्यूरो, सागर

डॉक्टर हरिसिंह गौर केंद्रीय विश्वविद्यालय, सागर के अपराध शास्त्र और न्यायिक विज्ञान विभाग में डायटम रिसर्च यूनिट को उनके इंडो-फ्रेंच प्रोजेक्ट (सेफिप्रा) पर काम करते हुए जर्मनी से एक अंतर्राष्ट्रीय पेटेंट प्रदान किया गया है। यह पेटेंट फ्लोरोसेंस डाई युक्त डायटम नैनो-फिंगरप्रिंट पाउडर के संश्लेषण पर है जो काफी सस्ता, कम हानिकारक, पर्यावरण के अनुकूल और अत्यधिक प्रभावी है। प्रोजेक्ट की प्रमुख अन्वेषक और सहायक प्राध्यापक डॉ. वंदना विनायक, डॉक्टर हरीसिंह गौर केंद्रीय विश्वविद्यालय सागर के अपराध शास्त्र और न्यायिक विज्ञान विभाग में पिछले एक दशक से अधिक समय से शैवाल डायटम के क्षेत्र में अनुसंधान कर रही हैं. उन्होंने बताया कि फोरेंसिक मामलों की जांच में फिंगरप्रिंट महत्वपूर्ण भौतिक साक्ष्य होते हैं लेकिन मौजूदा फिंगरप्रिंट पाउडर ऐसे रासायनिक यौगिकों से मिलकर बने होते हैं जो मानव स्वास्थ्य और पर्यावरण के लिए हानिकारक होते हैं। डायटोमाइट पाउडर गैर-विषाक्त, अपेक्षाकृत किफायती है और विभिन्न सतहों पर फिंगरप्रिंट को बिना उनकी विशेषताओं को नुकसान पहुंचाए हुए विकसित करता है।

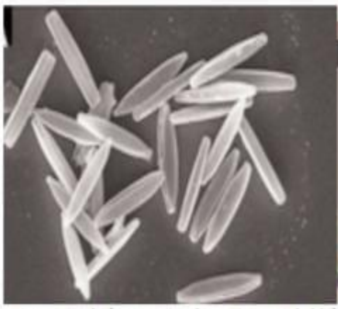

उन्होंने बताया कि इस पाउडर के विकास में उनके साथ शोध छात्रों अंकेश अहिरवार, वंदना सिरोटिया, प्रियंका खंडेलवाल और गुरप्रीत सिंह और छात्रा उर्वशी सोनी ने महत्ववपूर्ण भूमिका निभाई है. इसके अलावा साहित्य समीक्षा पर भी कई विद्यार्थियों ने काम किया है. फ लो रे से सें ट डायटम पाउडर की कार्यप्रणाली के बारे में विस्तार से बताते हुए उन्होंने बताया कि इसमें एक पॉली लिंकर के साथ एक फ्लोरोसेंट डाई और डायटम फस्ट्यूल्स (डायटोमाइट) को क्रिया करके विभाग की डायटम लैब में बनाया गया है। पाउडर भौतिक रूप से सतह पर पसीने में मौजूद पदार्थों के साथ रासायनिक क्रिया करके चिपक जाता है और फिर प्रतिदीप्ति फोटोग्राफी की मदद से विकसित उंगलियों के निशान की उच्च गुणवत्ता के साथ फोटो खींची जा सकती है। पाउडर में उच्च कंट्रास्ट, प्रकृति के लिए गैर-विनाशकारी, अत्यधिक संवेदनशीलता, नवीनता और कई अन्य उन्नत विशेषताएं होने के कारण न्यायिक विज्ञान के क्षेत्र में यह अग्रणी योगदान देने वाला उत्पाद साबित होगा।

इस उपलब्धि पर विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने डॉ. वंदना, उनकी टीम एवं विभाग को बधाई एवं शुभकामनाएं दी हैं. विभाग के शिक्षकों ने इस उपलब्धि पर हर्ष व्यक्त किया है।

उपलब्धि ▶ विवि की शिक्षक का शोध, जर्मनी से मिला अंतराष्ट्रीय पेटेंट

विवि के फॉरेंसिक साइंस विभाग में बनाया गया नैनो फिंगरप्रिंट पाउडर

नवभारत न्यूज

सागर 26 फरवरी. डॉ. हरिसिंह गौर केंद्रीय विश्वविद्यालय के अपराध शास्त्र और न्यायिक विज्ञान विभाग में डायटम रिसर्च यूनिट को उनके इंडो-फ्रेंच प्रोजेक्ट (सेफिप्रा) पर काम करते हुए जर्मनी से एक अंतर्राष्ट्रीय पेटेंट प्रदान किया गया है.

यह पेटेंट फ्लोरोसेंस डाई युक्त डायटम नैनो-फिंगरप्रिंट पाउडर के संश्लेषण पर है जो काफी सस्ता, कम हानिकारक, पर्यावरण के अनुकूल और अत्यधिक प्रभावी है. प्रोजेक्ट की प्रमुख अन्वेषक और सहायक प्राध्यापक डॉ. वंदना विनायक, डॉक्टर हरीसिंह गौर केंद्रीय विश्वविद्यालय के अपराध शास्त्र और न्यायिक विज्ञान विभाग में पिछले एक दशक से अधिक समय से शैवाल डायटम के क्षेत्र में अनुसंधान कर रही हैं. उन्होंने बताया कि फॉरेंसिक मामलों की जांच में फिंगरप्रिंट महत्वपूर्ण भौतिक साक्ष्य होते हैं लेकिन मौजूदा फिंगरप्रिंट पाउडर ऐसे रासायनिक यौगिकों से मिलकर बने होते हैं जो मानव स्वास्थ और पर्यावरण के लिए हानिकारक होते हैं.

डायटोमाइट पाउडर गैर-विषाक्त, अपेक्षाकृत किफायती है और विभिन्न सतहों पर फिंगरप्रिंट को बिना उनकी विशेषताओं को नुकसान पहुंचाए हुए विकसित करता है. उन्होंने बताया कि इस पाउडर के विकास में उनके साथ शोध छात्रों अंकेश अहिरवार, वंदना सिरोटिया, प्रियंका खंडेलवाल और गुरप्रीत सिंह और छात्रा उर्वशी सोनी ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है. इसके अलावा साहित्य समीक्षा पर भी कई विद्यार्थियों ने काम किया है.

इस उपलब्धि पर विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने डॉ. वंदना, उनकी टीम एवं विभाग को बधाई एवं शुभकामनाएं दी हैं. विभाग के शिक्षकों ने इस उपलब्धि पर हर्ष व्यक्त किया गया है.

उच्च गुणवत्ता का है

फ्लोरेसेसेंट डायटम पाउडर की कार्यप्रणाली के बारे में बताया कि इसमें एक पॉली लिंकर के साथ एक फ्लोरोसेंट डाई और डायटम फस्ट्यूल्स (डायटोमाइट) को क्रिया करके विभाग की डायटम लैब में बनाया गया है. पाउडर भौतिक रूप से सतह पर पसीने में मौजूद पदार्थों के साथ रासायनिक क्रिया करके चिपक जाता है और फिर प्रतिदीप्ति फोटोग्राफी की मदद से विकसित उंगलियों के निशान की उच्च गुणवत्ता के साथ फोटो खींची जा सकती है. पाउडर में उच्च कंट्रास्ट, प्रकृति के लिए गैर-विनाशकारी, अत्यधिक संवेदनशीलता, नवीनता है.

स्वभाषा के प्रयोग के लिये कार्यालयों में संपर्क अभियान चलाया

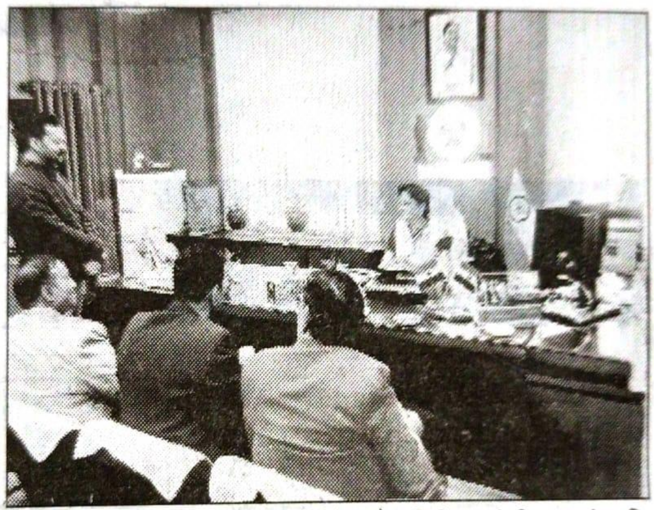

सागर, देशबन्धु। डॉ. हरीसिंह गौर विवि एवं शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास नई दिल्ली के संयुक्त तत्वावधान में अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा सप्ताह के अन्तर्गत चतुर्थ कार्यक्रम के रूप में स्वभाषा में नाम पट्टिका एवं कार्यालयों में हिन्दी एवं मातृभाषा का अधिकाधिक प्रयोग करने हेतु जन जागरूकता अभियान चलाया। इस अभियान की संरक्षिका विवि की कुलगुरू प्रो. नीलिमा गुप्ता एवं कार्यक्रम के नोडल अधिकारी प्रो. अजीत जायसवाल उपस्थित रहे। कुलपति कार्यालय, कुलसचिव कार्यालय, संकाय मामले कार्यालय एवं अन्य कार्यालयों में संपर्क किया। कार्यालयों में विवि के कर्मचारियों द्वारा हिन्दी एवं मातृभाषा के अधिकाधिक प्रयोग हेतु सकारात्मक प्रतिक्रिया दी।

हिंदी विभाग के डॉ. आशुतोष को मिला राष्ट्रीय वनमाली कथा सम्मान

सागर | डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग के डॉ. आशुतोष को 'वनमाली सृजन पीठ' द्वारा राष्ट्रीय वनमाली कथा सम्मान-2024 के अंतर्गत 'युवा कथा सम्मान' दिया गया है। 26 से 28 फरवरी तक भोपाल के रवींद्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय में आयोजित किए जा रहे तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी-समारोह में उन्हें यह पुरस्कार प्रदान किया गया। हिंदी साहित्य में यह एक बहुचर्चित और प्रतिष्ठित राष्ट्रीय सम्मान है। सम्मानस्वरूप उन्हें प्रशस्ति-पत्र और 51 हजार रुपए की राशि प्रदान की गई।

समारोह में भारतीय सांस्कृतिक चिंतन के लिए भारत सरकार द्वारा पद्मश्री से सम्मानित प्रसिद्ध जापानी चिंतक टोमियो मीजो कामी, रवींद्रनाथ टैगोर विवि के कुलाधिपति संतोष चौबे, कुलपति प्रो रजनीकांत, प्रख्यात लेखिका और साहित्यकार ममता कालिया, प्रसिद्ध लेखक मुकेश वर्मा, प्रख्यात हिंदी कथाकार शिवमूर्ति की गरिमामयी उपस्थिति में डॉ. आशुतोष को यह सम्मान प्रदान किया गया। वर्ष 2010 से हिन्दी विभाग में कार्यरत डॉ. आशुतोष की पहली कहानी 'राम बहोरन की अनात्मकथा' 2011 में तद्भव पत्रिका में प्रकाशित हुई थी। कहानियों की पहली पुस्तक 'मरें तो उम्र भर के लिए' भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली से और दूसरी पुस्तक 'उम्र पैंतालीस बतलाई गयी थी' आधार प्रकाशन, चण्डीगढ़ से प्रकाशित हुई है। आशुतोष द्वारा लिखित, संपादित और सहलेखन में लगभग दस पुस्तकें प्रकाशित हैं।

राष्ट्रीय विज्ञान दिवस | शहर के युवा वैज्ञानिक भी नई खोज कर रहे

रमन की राह पर शहर के युवा: गठिया बीमारी का इलाज होगा आसान, मनीष ने तंग गलियों में आग बुझाने के लिए बना फायर फाइटर ड्रोन

पत्रिका डे-स्पेशल टुडेज स्पेशल

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

सन्नी राठी

सागर. विज्ञान का समय तेजी से बदल रहा है। इसके चलते हर दिन नए आविष्कार और बदलाव हो रहे हैं। कभी कंप्यूटर वर्ल्ड में नई क्रांति आती है तो कभी बीमारियों से लड़ने के लिए नए ड्रग्स का आविष्कार सामने आ जाता है।

शहर के युवा वैज्ञानिक भी नई खोज कर रहे हैं। डॉ. हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय के फार्मेसी विभाग के शोधार्थी सन्नी राठी ने इन सीटू हाइड्रोजेल सिस्टम फॉर द मैनेजमेंट ऑफ रूमेटाइड अर्थराइटिस विषय पर रिसर्च की है। सन्नी ने रूमेटाइड गठिया बीमारी के इलाज की नई तकनीक खोजी है। सन्नी ने बताया कि इन-सीटू हाइड्रोजेल प्रणाली विकसित की है। जिससे विभिन्न पॉलिमर की मदद से इन-सीटू हाइड्रोजेल प्रणाली में नैनोस्ट्रक्चर्ड लिपक्विड वाहक को शामिल किया है। ये इन-सीटू हाइड्रो जेल सिस्टम इंट्रा-धमनी गुहा में जाता है और सोल के रूप में (जेल से सोल के रूप में) परिवर्तित हो जाता है। उन्होंने बताया कि इस तनकीक से गठिया रोग का इलाज आसानी से किया जाएगा। इसे पेटेंट कराया जा रहा है। रूमेटाइड गठिया (आरए) एक ऑटोइम्यून स्थिति है जो जोड़ों और शरीर के अन्य हिस्सों में सूजन का कारण बनती है। सन्नी ने बताया कि ग्वालियर में हुए 39वें यंग साइंटिस्ट सम्मेलन में मुझे यंग साइंटिस्ट अवार्ड से भी सम्मानित किया गया। यह शोध अध्ययन विभाग में पीएचडी के दौरान सीनियर प्रोफेसर संजय के जैन और प्रोफेसर उमेश के पाटिल के निर्देशन में किया।

फायर फाइटिंग ड्रोन से बूझेगी तंग गलियों की आग

एक्सीलेंस स्कूल के कक्षा दसवीं के छात्र मनीष चढ़ार ने फायर फाइटिंग ड्रोन बनाया। यह ड्रोन तंग गलियों में आग को बुझाने में मददगार साबित होगा है। मनीष ने बताया कि उन्होंने शिक्षक राजीव तिवारी के निर्देशन में स्कूल में स्थित अटल टिकरिंग लैब में यह मॉडल बनाया। जिसे पेटेंट भी कराया जा रहा है। मनीष ने बताया कि अक्सर सकरी गलियों तक दमकल की गाडियां नहीं पहुंच पाती है, जिससे आग पर काबू पाना नामुमकिन सा हो जाता है। ऐसे में इस ड्रोन की मदद से ऐसी तंग गलियों में आसानी से आग पर काबू पाया जा सकता है। उन्होंने बताया कि इसमें लगाया पाइप पानी के टैंकर से कनेक्ट हो जाता है। साथ में इसमें कैमरा और ग्लास कटर भी लगाया है। यह ग्लास कटर खिड़कियों और दरवाजे के कांच काट देता है।

इसलिए मनाया जाता है विज्ञान दिवस

समाज में जागरूकता लाने और वैज्ञानिक सोच पैदा करने के उद्देश्य से राष्ट्रीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद तथा विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय के द्वारा हर साल 28 फरवरी को भारत में मनाया जाता है। विज्ञान दिवस रमन प्रभाव की खोज के कारण मनाया जाता है। इस खोज की घोषणा भारतीय वैज्ञानिक चंद्रशेखर वेंकटरमन ने 28 फरवरी सन 1928 को की थी। इसी खोज के लिए उन्हें 1930 में नोबल पुरस्कार दिया गया था।

डॉ. हरीसिंह गौर विवि • सीयूईटी के लिए 26 मार्च तक भरे जाएंगे फॉर्म, विद्यार्थी इस बार 10 की जगह 6 विषय ही चुन सकेंगे

स्नातक के 14 कोर्स की 2253 सीटों पर प्रवेश के लिए पंजीयन शुरू

भास्कर संवाददाता | सागर

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय में सत्र 2024-25 के स्नातक के 14 पाठ्यक्रमों की 2253 सीटों पर प्रवेश के लिए प्रक्रिया शुरू हो गई है। कॉमन यूनिवर्सिटी इंट्रेंस टेस्ट यूजी-2024 के तहत देशभर के विश्वविद्यालयों के साथ सागर विवि का चयन भी प्रवेश परीक्षा के लिए कर सकेंगे। नेशनल टेस्टिंग एजेंसी ने कॉमन यूनिवर्सिटी एंट्रेंस टेस्ट रजिस्ट्रेशन की प्रक्रिया शुरू कर दी है। विद्यार्थी वेबसाइट exams.nta.ac.in/CUET UG/ पर ऑनलाइन आवेदन फॉर्म भर सकते हैं। एक विद्यार्थी केवल एक ही आवेदन फॉर्म जमा कर सकता है। एनटीए ने आवेदन फॉर्म के साथ इस वर्ष परीक्षा में महत्वपूर्ण बदलावों की घोषणा भी की है। इसमें कंप्यूटर बेस्ड से हाइब्रिड मोड में स्विच करना शामिल है। सीयूईटी के लिए जहां पहले विद्यार्थी 10 विषयों का चयन कर सकते थे, इस बार घटाकर इसे 6 कर दिया है। सीयूईटी 13 भाषाओं में किया जाएगा। इसमें हिंदी, अंग्रेजी, असमिया, बंगाली, गुजराती, कन्नड़, मलयालम, मराठी, उड़िया, पंजाबी, तमिल, तेलुगु और उर्दू भाषाएं शामिल हैं। विद्यार्थियों को परीक्षा केंद्र के लिए अधिकतम चार शहरों को चुनने का ऑप्शन दिया गया है।

ज्यादा पंजीयन हुए तो ओएमआर फॉर्मेट से परीक्षा

इस साल से एनटीए द्वारा टेस्ट हाइब्रिड मोड में किया जाएगा। सीयूईटी यूजी के लिए आवेदन फॉर्म में अधिक संख्या में पंजीयन वाले विषयों के लिए परीक्षा ऑप्टिकल मार्क रिकग्निशन यानी ओएमआर फॉर्मेट का इस्तेमाल करके पेन और पेपर मोड में की जाएगी। अन्य विषयों के लिए परीक्षा का आयोजन कंप्यूटर बेस्ड किया जाएगा। पंजीयन प्रक्रिया पूरी होने के बाद एनटीए तय करेगा कि कौन-सी परीक्षाएं पेन और पेपर मोड में आयोजित की जाएंगी।

प्रवेश प्रक्रिया से जुड़ी महत्वपूर्ण तारीखें

- आवेदन करने की आखिरी तारीख- 26 मार्च
- आवेदन फॉर्म में सुधार करने की विंडो - 28 से 29 मार्च
- परीक्षा केंद्र की घोषणा 30 अप्रैल से शुरू की जाएगी।
- एडमिट कार्ड जारी होने की तारीख- मई के दूसरे सप्ताह में जारी किए जाएंगे।
- परीक्षा की तारीख - 15 मई से 31 मई के बीच आयोजित की जाएगी।
- रिस्पांस शीट और आंसर की- आधिकारिक वेबसाइट पर अपलोड कर दी जाएंगी।
- रिजल्ट की घोषणा- 30 जून

साथी स्टूडेंट हेल्प डेस्क ने जारी किए मोबाइल नंबर

विवि के साथी स्टूडेंट हेल्प डेस्क के शुभांक चाचोंदिया ने बताया बुंदेलखंड के विद्यार्थियों को किसी भी प्रकार की समस्या न हो। इसके लिए हमने हेल्पलाइन बनाई है। विद्यार्थी किसी भी प्रकार की प्रवेश संबंधी समस्याओं के लिए संपर्क कर सकते हैं। हेल्पलाइन नंबर - 9691591255, 8319005125, 7224866444, 7225914080, 7000916825, 7415039245 हैं।

विवि में ऐसी है यूजी की कोर्सवार स्थिति

• बीए- 806 • बीकॉम - 325 • बीएससी बायो - 321 • बीएससी मैथ्स- 288 • बीसीए- 75 • बीफार्मा- 75 • बीए बीएड- 63 • बैचलर ऑफ होटल मैनेजमेंट - 60 • बीबीए- 60 • बीए एलएलबी ऑनर्स- 53 • बैचलर ऑफ आर्ट (वैदिक आर्ट)- 40 • बीएससी बीएड मैथ्स -31 • बीएससी बीएड बायो -31 • बीएफए- 25 = कुल- 2253

आयोजन | केंद्रीय विश्वविद्यालय में दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का शुभारंभ

मप्र की कला और संस्कृति पर विशेषज्ञों ने किया मंथन

जागरण, सागर। डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय में प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग एवं भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद के संयुक्त तत्वावधान में दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का उद्घाटन सत्र आयोजित किया गया। इसके अंतर्गत मध्यप्रदेश की कला एवं संस्कृति के विभिन्न पक्षों पर शोध पत्र प्रस्तुत किये जा रहे हैं। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता प्रोफेसर पीके कठल ने की। मुख्य वक्ता काशी हिंदू विश्वविद्यालय की प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग की एमिरेट्स प्रो.विभा त्रिपाठी ने अपने वक्तव्य में मध्यप्रदेश के पुरातात्विक व ऐतिहासिक पहलुओं पर विस्तार से प्रकाश डालते हुए बताया कि किस प्रकार मध्य प्रदेश भारतवर्ष की संस्कृति और सभ्यता का प्रतिनिधित्व करता है। जिससे भारत के हृदय स्थल के रूप में इसकी पहचान और प्रभावी हो जाती है। मुख्य अतिथि प्रो.आलोक त्रिपाठी, अतिरिक्त महानिदेशक भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग नई दिल्ली ने कला और संस्कृति के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डालने के साथ औपनिवेशिक मानसिकता से हटकर पुरातात्विक महत्व के पुरास्थलों और प्राप्त सामग्री की स्वतन्त्र व्याख्या करने पर बल दिया। अधिष्ठाता प्रोफेसर डीएस राजपूत ने भी कला और संस्कृति के विषय पर अपनी राय और विचारों को साझा कियां। इस अवसर पर डॉ हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग व बीरबल साहनी पुराविज्ञान संस्थान लखनऊ उप्र के मध्य विभिन्न अकादमिक एवं शोध कार्यों के समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर विश्वविद्यालय के कुलसचिव प्रो.सत्यप्रकाश उपाध्याय व डॉ.नीरज राय निदेशक बीरबल साहनी वानस्पतिक शोध संस्थान लखनऊ द्वारा किया गया। उद्घाटन सत्र के पश्चात दो तकनीकी सत्रों का आयोजन किया गया।

मप्र भारत की संस्कृति व सभ्यता का प्रतिनिधित्व करता है, जिससे इसकी पहचान प्रभावी हो जाती है: प्रो. त्रिपाठी

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय में दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का शुभारंभ

भास्कर संवाददाता | सागर

मध्यप्रदेश भारत वर्ष की संस्कृति और सभ्यता का प्रतिनिधित्व करता है, जिससे भारत के हृदय स्थल के रूप में इसकी पहचान और प्रभावी हो जाती है। मध्यप्रदेश भारतीय सभ्यता और संस्कृति के केंद्र बिंदु में रखे जाने के विभिन्न कारणों को अपने अंदर सहेजे हुए है। यह बात बीएचयू की प्रो. विभा त्रिपाठी ने बतौर मुख्य वक्ता डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय में प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग एवं भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद के संयुक्त तत्वावधान में दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के शुभारंभ पर कही।

मुख्य अतिथि भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग के अतिरिक्त महानिदेशक प्रो. आलोक त्रिपाठी ने कहा प्राप्त अवशेषों का अध्ययन उस समय के मानव और उनके कार्यप्रणाली, उनकी सामाजिक, आर्थिक व्यवस्था को जानने के लिए करने की आवश्यकता है ना कि परंपरागत मानसिकता के अनुसार। उन्होंने शोधार्थियों और पुरातत्व के विद्यार्थियों को नवीन दृष्टिकोण से कार्य करने की सलाह दी। डीन प्रो. दिवाकर सिंह राजपूत ने कहा हमारे जीवन जीने की शैली को संरक्षित करने का कार्य कला और संस्कृति करती है। वर्तमान में आवश्यकता है हमारे अतीत की कला और संस्कृति के विषय में अधिक जानने की और उनके योगदान को समझने की। प्रभारी कुलपति प्रो. पीके कठल ने कहा जब हम किसी गूढ़ विषय को समझने का प्रयत्न करते हैं तो हमें अपनी बुद्धि का उपयोग करना चाहिए। विज्ञान का कार्य चीजों को जटिल तरीके से पेश करना नहीं है बल्कि उसको सरलता के साथ प्रस्तुत करना है। वर्तमान में आवश्यकता है कि जब हम किसी वस्तु को देखें तो उसे एक नए नजरिए से देखने का प्रयास करें न कि विद्यमान ज्ञान के अनुरूप। विभागाध्यक्ष प्रो. नागेश दुबे ने स्वागत भाषण दिया। विवि के प्राचीन भारतीय इतिहास विभाग एवं बीरबल साहनी पुराविज्ञान संस्थान लखनऊ के बीच विभिन्न अकादमिक एवं शोध कार्यों के लिए एमओयू भी हुआ। अकादमिक एवं शोध कार्यों के समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर प्रभारी कुलसचिव डॉ. सत्यप्रकाश उपाध्याय एवं निदेशक डॉ. नीरज राय ने किए। आभार कार्यक्रम के समन्वयक डॉ. सुरेंद्र यादव ने माना। संचालन डॉ. पंकज सिंह ने किया। पहले दिन दो तकनीकी सत्र हुए। विभिन्न शोध पत्र भी प्रस्तुत किए गए।

विवि में मातृभाषा सप्ताह कार्यक्रम का समापन

मातृभाषा प्रेम, स्नेह और समर्पण की भाषा है : डा. अजय तिवारी

मातृभाषा में जीवन और व्यवहार विषय पर साप्ताहिक आयोजन हुआ।● नवदुनिया

सागर (नवदुनिया प्रतिनिधि)। डा हरीसिंह गौर विवि एवं शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास के संयुक्त तत्वावधान में मातृभाषा में जीवन और व्यवहार विषय पर साप्ताहिक आयोजन का समापन कुलसचिव सम्मेलन कक्ष में आयोजित किया गया।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि स्वामी विवेकानंद विश्वविद्यालय सागर के कुलाधिपति डा. अजय तिवारी ने कहा कि मातृभाषा स्नेह, लगाव, प्रेम और समर्पण की भाषा है। मनुष्य पैदा होने के साथ ही मातृभाषा से जुड़ जाता है। इस भाषा में अपनत्व के कारण मनुष्य अपनी मां से जुड़ जाता है। दुनिया की महान रचनाएं मूलतः मातृभाषा में ही लिखी गई हैं। आज इंजीनियरिंग, मेडिकल जैसी पढ़ाई स्थानीय भाषाओं में होने लगी है। सरकारी दस्तावेजों के प्रारूपों एवं काम-काज में भी स्थानीय भाषा का उपयोग बढ़ा है। उन्होंने त्रिभाषा सूत्र की भी चर्चा की। उन्होंने कहा कि कई भारतीय भाषाएं विलुप्त होने के कगार पर हैं। हम सबका कर्तव्य है कि हम अपनी भाषा को बचाएं, संरक्षित करें। यह तभी संभव है जब हम अपनी मातृभाषा का ज्यादा से ज्यादा उपयोग करें। स्वभाषा मनुष्यता की भाषा है, संवेदना की भाषा है। मौलिक सोच एवं विचार मातृभाषा में ही आते हैं। उन्होंने विभिन्न प्रतियोगिताओं में पुरस्कृत विद्यार्थियों को बधाई दी। आयोजन के नोडल अधिकारी एवं संकाय मामले के निदेशक प्रो. अजीत जायसवाल ने कहा कि मातृभाषा से प्रेम नैसर्गिक है। तमाम शिक्षा नीतियों के बावजूद लंबे समय तक मातृभाषा शिक्षा की भाषा नहीं बन पाई। आज राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के माध्यम से यह साकार हो रहा है। मातृभाषा पर गर्व होना चाहिए, क्योंकि यह हमें आत्मविश्वास प्रदान करती है, संवाद का सबसे सशक्त माध्यम है तथा यह हमें दूसरों से जोड़ने में मदद करती है। हमें सांसारिक ज्ञान मातृभाषा में ही मिलता है। आज हम संकल्प लें कि हम ज्यादा से ज्यादा अपनी मातृभाषा का प्रयोग करेंगे, तभी हम इसे जीवंत रख पाएंगे। इस अवसर पर केंद्रीय विद्यालय एवं विश्वविद्यालय छात्रावास में आयोजित मातृभाषा में सृजनात्मक लेखन प्रतियोगिता में प्रथम, द्वितीय और तृतीय स्थान पर रहे विद्यार्थियों को पुरस्कृत भी किया गया। कार्यक्रम का संचालन डा. वंदना राजोरिया ने किया तथा साप्ताहिक आयोजन का प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। इस अवसर विवि मीडिया अधिकारी डा. विवेक जायसवाल, डा. किरण आर्या, स्वामी विवेकानंद विश्वविद्यालय के शिक्षक डा. ममता सिंह, डा. सुखदेव बाजपेयी, डा. उमेश आर्य, केंद्रीय विद्यालय के प्राचार्य आरएस वर्मा, शिवानी खरे तथा कई विद्यार्थी एवं शिक्षक उपस्थित थे।

पुरास्थलों से प्राप्त सामग्री का औपनिवेशिक मानसिकता से हटकर व्याख्या करें : प्रो. त्रिपाठी

डा. हरीसिंह गौर विवि व बीरबल साहनी संस्थान के मध्य ओएमयू हुआ।● नवदुनिया

सागर (नवदुनिया प्रतिनिधि)। डा. हरीसिंह गौर विवि में प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्त्व विभाग एवं भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद के संयुक्त तत्वावधान में बुधवार को दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का शुरू हुई। संगोष्ठी में मध्य प्रदेश की कला एवं संस्कृति के विभिन्न पक्षों पर शोध पत्र प्रस्तुत किये गए। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता प्रोफेसर पीके कठल ने की। उद्घाटन सत्र की शुरुआत विभागाध्यक्ष प्रो. नागेश दुबे के स्वागत उद्बोधन से हुआ। मुख्य वक्ता काशी हिंदू विवि की प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्त्व विभाग की प्रोफेसर विभा त्रिपाठी ने बताया कि किस प्रकार मध्य प्रदेश भारतवर्ष की संस्कृति और सभ्यता का प्रतिनिधित्व करता है, जिससे भारत के हृदय स्थल के रूप में इसकी पहचान और प्रभावी हो जाती है। इस दौरान के विभिन्न पुरास्थल आदमगढ़, कायथा, एरण, खजुराहो, चौसठ योगिनी मंदिर इत्यादि पुरास्थलों और प्राप्त पुरातात्विक महत्व के पुरावशेषों पर विस्तार से प्रकाश डाला और उन्होंने शोधार्थियों से आगे विभिन्न पुरातात्विक महत्व के अनछुए पहलुओं पर स्वतंत्र सोच के साथ कार्य करने की सलाह दी। मुख्य अतिथि प्रो. आलोक त्रिपाठी, अतिरिक्त महानिदेशक, भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण विभाग(नई दिल्ली) ने मप्र की कला और संस्कृति के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डालने के साथ औपनिवेशिक मानसिकता से हटकर पुरातात्विक महत्व के पुरास्थलों और प्राप्त सामग्री की स्वतंत्र व्याख्या करने पर बल दिया। उन्होंने यह अपील की, कि प्राप्त अवशेषों का अध्ययन उस समय के मानव और उनके कार्यप्रणाली उनकी सामाजिक, आर्थिक व्यवस्था को जानने के लिए करने की आवश्यकता है, ना की परंपरागत मानसिकता के अनुसार साथ ही उन्होंने आने वाले शोधार्थियों और पुरातत्व के विद्यार्थियों को नवीन दृष्टिकोण से कार्य करने की सलाह दी। अधिष्ठाता प्रोफेसर डी.एस.राजपूत ने भी कला और संस्कृति के विषय पर अपनी राय और अपने विचारों को साझा किया। कार्यवाहक कुलपति प्रोफेसर पीके कठल ने इसे गौरव का पल बताया और कहा कि जब हम किसी गूढ़ विषय को समझने का प्रयत्न करते हैं, तो हमें अपनी बुद्धि का उपयोग करना चाहिए। विज्ञान का कार्य चीजों को जटिल तरीके से पेश करना नहीं है, अपितु उसको सरलता के साथ प्रस्तुत करना है। वर्तमान में आवश्यकता है, कि जब हम किसी वस्तु को देखें तो उसे एक नए नजरिए से देखने का प्रयास करें, ना कि विद्यमान ज्ञान के अनुरूप। इस अवसर डा. हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय के प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्त्व विभाग व बीरबल साहनी पुराविज्ञान संस्थान लखनऊ के मध्य विभिन्न अकादमिक एवं शोध कार्यों के समझौते पर हस्ताक्षर विश्वविद्यालय के कुलसचिव प्रो सत्यप्रकाश उपाध्याय व डा. नीरज राय, निदेशक बीरबल साहनी वानस्पतिक शोध संस्थान लखनऊ द्वारा किया गया। उद्घाटन सत्र के बाद दो तकनीकी सत्रों का आयोजन किया गया।

स्वभाषा मनुष्यता और संवेदना की भाषा है: डॉ. तिवारी

भास्कर संवाददाता | सागर

सागर। डॉ. अजय तिवारी ने विजेताओं को पुरस्कृत किया।

मातृभाषा स्नेह, लगाव, प्रेम और समर्पण की भाषा है। मनुष्य पैदा होने के साथ ही मातृभाषा से जुड़ जाता है। इस भाषा में अपनत्व के कारण मनुष्य अपनी मां से जुड़ जाता है। दुनिया की महान रचनाएं मूलतः मातृभाषा में ही लिखी गई हैं। आज इंजीनियरिंग, मेडिकल जैसी पढ़ाई स्थानीय भाषाओं में होने लगी है। सरकारी दस्तावेजों के प्रारूपों एवं कामकाज में भी स्थानीय भाषा का उपयोग बढ़ा है।

यह बात स्वामी विवेकानंद विवि के कुलाधिपति डॉ. अजय तिवारी ने बतौर मुख्य अतिथि डॉ. हरीसिंह गौर विवि एवं शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास के संयुक्त तत्वावधान में मातृभाषा में जीवन और व्यवहार विषय पर साप्ताहिक आयोजन के समापन पर कही।

उन्होंने कहा कई भारतीय भाषाएं विलुप्त होने के कगार पर हैं। हम सबका कर्तव्य है कि हम अपनी भाषा को बचाएं, संरक्षित करें। यह तभी संभव है जब हम अपनी मातृभाषा का ज्यादा से ज्यादा उपयोग करें। स्वभाषा मनुष्यता की भाषा है, संवेदना की भाषा है। मौलिक सोच एवं विचार मातृभाषा में ही आते हैं। नोडल अधिकारी प्रो. अजीत जायसवाल ने कहा मातृभाषा से प्रेम नैसर्गिक है। तमाम शिक्षा नीतियों के बावजूद लंबे समय तक मातृभाषा शिक्षा की भाषा नहीं बन पाई। आज राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के माध्यम से यह साकार हो रहा है। मातृभाषा पर गर्व होना चाहिए क्योंकि यह हमें आत्मविश्वास प्रदान करती है, संवाद का सबसे सशक्त माध्यम है तथा यह हमें दूसरों से जोड़ने में मदद करती है। हमें सांसारिक ज्ञान मातृभाषा में ही मिलता है। आज हम संकल्प लें कि हम ज्यादा से ज्यादा अपनी मातृभाषा का प्रयोग करेंगे तभी हम इसे जीवंत रख पाएंगे।

इस दौरान केंद्रीय विद्यालय एवं विश्वविद्यालय छात्रावास में हुई मातृभाषा में सृजनात्मक लेखन प्रतियोगिता में पहले, दूसरे और तीसरे स्थान पर रहे विद्यार्थियों को अतिथियों ने पुरस्कृत किया। संचालन डॉ. वंदना राजोरिया ने किया। इस मौके मीडिया अधिकारी डॉ. विवेक जायसवाल, डॉ. किरण आर्या, डॉ. ममता सिंह, डॉ. सुखदेव बाजपेयी, डॉ. उमेश आर्य, केवी के प्राचार्य आरएस वर्मा, शिवानी खरे आदि मौजूद थे।

स्नातक में प्रवेश के लिए पंजीयन शुरू, 26 मार्च तक ऑनलाइन भर सकेंगे फॉर्म

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

सागर. डॉ. हरिसिंह गौर केंद्रीय विश्वविद्यालय में स्नातक पाठ्यक्रमों प्रवेश के लिए वर्ष-2024 के लिए पंजीयन की शुरूआत हो गई है। विवि के प्रवेश परीक्षा समन्वयक प्रो. दिवाकर सिंह राजपूत ने बताया कि विश्वविद्यालय में प्रवेश राष्ट्रीय परीक्षा एजेंसी (एनटीए) के माध्यम से सीयूईटी (कॉमन यूनिवर्सिटी एंट्रेंस टेस्ट) के माध्यम से होंगे। एनटीए ने ऑनलाइन आवेदन के लिए पंजीयन 27 फरवरी से शुरू कर दिए हैं जो 26 मार्च तक होंगे। विद्यार्थी एनटीए की आधिकारिक वेबसाइट पर ऑनलाइन आवेदन फॉर्म भर सकते हैं। उम्मीदवारों को याद रखना चाहिए कि एक उम्मीदवार को केवल एक ही आवेदन फॉर्म जमा कर सकता है।

जारी आधिकारिक शेड्यूल के अनुसार सीयूईटी स्नातक-2024 की परीक्षाएं 15 से 31 मई के बीच निर्धारित हैं, जिसका परिणाम 30 जून को घोषित किया जाएगा। एनटीए ने आवेदन फॉर्म के साथ इस वर्ष परीक्षा में महत्वपूर्ण बदलावों की घोषणा भी की है, जिसमें कंप्यूटर बेस्ड से हाइब्रिड मोड में स्विच करना शामिल है। परीक्षा समन्वयक ने बताया कि जो छात्र इस परीक्षा के लिए फॉर्म भरने जा रहे हैं, उन्हें सलाह दी जाती है, वह पहले परीक्षा से जुड़ी जरूरी जानकारियों के बारे में जान लें।

विश्वविद्यालयः सरस्वती कन्या छात्रावास को किया 'राष्ट्र को समर्पित'

श्रेष्ठ शैक्षिक परिवेश ज्ञानार्जन को सहज और मानवीय बनाता है : डॉ. वीरेंद्र कुमार

जन चिंगारी- गजेंद्र ठाकुर

सागर। डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर में सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय, भारत सरकार के सौजन्य से अन्य पिछड़े वर्ग की छात्राओं के लिए नव-निर्मित सरस्वती कन्या छात्रावास का लोकार्पण एवं 'राष्ट्र को समर्पण' कार्यक्रम विश्वविद्यालय के अभिमंच सभागार में आनलाइन माध्यम से आयोजित किया गया।

कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुए सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्री डॉ. वीरेंद्र कुमार ने कहा कि देश के अनुसूचित एवं अन्य पिछड़ा वर्ग के विद्यार्थियों के उत्थान एवं उनको शिक्षा एवं समाज की मुख्य धारा से जोड़ने के लिए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता अनेक पहल कर रहा है इसी कड़ी में आज पूरे देश के विभिन्न क्षेत्रों के कुल 10 ओबीसी छात्रावासों को राष्ट्र के नाम समर्पित किया गया है. जिसमें लगभग 1400 छात्रों के रहने की व्यवस्था हो सकेगी. यह भी अत्यंत महत्वपूर्ण है कि इनमें चार छात्रावास सिर्फ छात्राओं के लिए आरक्षित है. मंत्रालय द्वारा सिर्फ छात्रावास के भवनों का ही नहीं अपितु इन छात्रावासों के सम्पूर्ण संसाधनो का भी विकास किया गया है जिससे इस संवर्ग के विद्यार्थियों को शिक्षा हेतु बेहतर सुविधा मिल सके।

हमारा मानना है कि एक श्रेष्ठ शैक्षिक परिवेश ज्ञान के संधान को सहज और मानवीय बनाने में सहयोगी बनता है. कार्यक्रम को सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय के राज्य मंत्री माननीय डॉ. रामदास अठावले, राज्य मंत्री ए. नारायण स्वामी, राज्य मंत्री सुश्री प्रतिमा भौमिक ने भी संबोधित किया। विश्वविद्यालय में अभिमंच सभागार में कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रभारी कुलपति प्रो. पी के कठल ने किया इस अवसर पर प्रभारी कुलसचिव डॉ एस पी उपाध्याय, प्रो चंदा बेन, प्रो आनंद कुमार त्रिपाठी सहित अनेक गणमान्य शिक्षक, अधिकारी, कर्मचारी एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन एवं आभार ज्ञापन डॉ शशि कुमार सिंह ने किया।

उत्कृष्टता-अतिरिक्तता व्यक्तित्व की सफलता का मूल मंत्र : गर्ग

जागरण, सागर। डॉ.हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के वाणिज्य विभाग में चंडीगढ़ से पधारे चार्टर्ड अकाउंटेंट प्रेम गर्ग का विशेष व्याख्यान आयोजित किया गया। सीए गर्ग ने कहा कि लक्ष्य चाहे कितना भी जटिल क्यों ना हो ईमानदारी एवं सत्यनिष्ठ पूर्ण कार्यशैली से प्राप्त किया जा सकता है। इसके लिए आपने व्यक्तित्व में निखार एवं सफलता के लिए उत्कृष्टता सिद्धांत की चर्चा की जिसमें आपने बताया कि किसी भी कार्य को हमें अपना सर्वश्रेष्ठ देना चाहिए तथा प्रयास में तुलनात्मक रूप से थोड़ा अधिक देने की कोशिश करना चाहिए। उनके द्वारा प्रस्तुत तथ्यों पर शोधार्थियों एवं छात्रों ने प्रश्न पूछे। वाणिज्यिक विभाग अध्यक्ष प्रो.जेके जैन द्वारा गर्ग का स्वागत किया गया तथा उनके सामाजिक तथा पेशेगत व्यक्तित्व के बारे में बताया। कार्यक्रम का आरंभ एवं समापन मां सरस्वती व डॉ.गौर को नमन करके किया गया।

विश्वविद्यालय व सरस्वती कन्या छात्रावास राष्ट्र को किया समर्पित

विश्वविद्यालय के अभिमंच सभागार में वर्चुअली हुआ कार्यक्रम का आयोजन

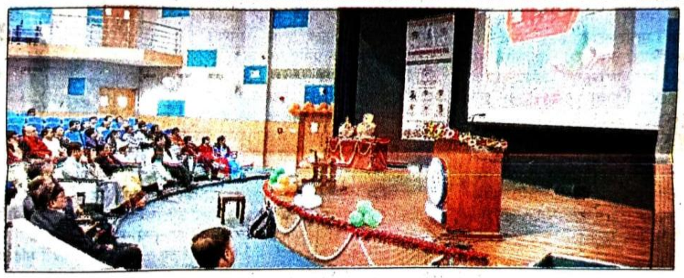

सागर। डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर में सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय, भारत सरकार के सौजन्य से अन्य पिछड़े वर्ग की छात्राओं के लिए नव.निर्मित सरस्वती कन्या छात्रावास का लोकार्पण एवं राष्ट्र को समर्पण कार्यक्रम विश्वविद्यालय के अभिमंच सभागार में आनलाइन माध्यम से आयोजित किया गया।

कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुए सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्री डॉ. वीरेंद्र कुमार ने कहा कि देश के अनुसूचित एवं अन्य पिछड़ा वर्ग के विद्यार्थियों के उत्थान एवं उनको शिक्षा एवं समाज की मुख्य धारा से जोड़ने के लिए माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता अनेक पहल कर रहा है इसी कड़ी में आज पूरे देश के विभिन्न क्षेत्रों के कुल 10 ओबीसी छात्रावासों को राष्ट्र के नाम समर्पित किया गया है। जिसमें लगभग 1400 छात्रों के रहने की व्यवस्था हो सकेगी। यह भी अत्यंत महत्वपूर्ण है कि इनमें चार छात्रावास सिर्फ छात्राओं के लिए आरक्षित है। मंत्रालय द्वारा सिर्फछात्रावास के भवनों का ही नहीं अपितु इन छात्रावासों के सम्पूर्ण संसाधनों का भी विकास किया गया है जिससे इस संवर्ग के विद्यार्थियों को शिक्षा हेतु बेहतर सुविधा मिल सके। हमारा मानना है कि एक श्रेष्ठ शैक्षिक परिवेश ज्ञान के संधान को सहज और मानवीय बनाने में सहयोगी बनता है।

कार्यक्रम को सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय के राज्य मंत्री डॉ, रामदास अठावले, राज्य मंत्री ए नारायण स्वामी, राज्यमंत्री प्रतिमा भौमिक ने भी संबोधित किया। विश्वविद्यालय में अभिमंच सभागार में कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रभारी कुलपति प्रो. पीके कठल ने किया । इस अवसर पर प्रभारी कुलसचिव डॉ एसपी उपाध्याय प्रो चंदा बेन, प्रो आनंद कुमार त्रिपाठी सहित अनेक गणमान्य शिक्षक, अधिकारी, कर्मचारी एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन एवं आभार ज्ञापन डॉ शशि कुमार सिंह ने किया।

डॉ. हरीसिंह गौर विवि एवं हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विवि के मध्य हुआ अकादमिक अनुबंध

सागर, देशबन्धु। डॉ. हरीसिंह गौर विवि एवं हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विवि धर्मशाला के मध्य शैक्षिक अनुसंधान, कौशल विकास, गुणवत्ता उन्नयन, सामाजिक सरोकार से संबंधित विभिन्न विषयों को लेकर एक पूर्ण कालिक समझौता ज्ञापन हस्ताक्षर किया गया। इस अवसर पर हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विवि की ओर से कुलपति प्रो. सत प्रकाश बंसल, कुलसचिव प्रो. सुमन शर्मा, अधिष्ठाता विद्यार्थी कल्याण प्रो. सुनील एवं हरीसिंह गौर विवि की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता उपस्थित रहे। इस समझौता ज्ञापन के अनुसार दोनों विवि में विभिन्न शैक्षणिक विषयों में अनुसंधान, शिक्षा एवं नवाचारी परियोजनाओं को एक दूसरे के समन्वय से पूर्ण करने की बात कही गई। इसके साथ ही साथ दोनों विवि अपनी भौगोलिक एवं क्षेत्रीय विविधता के आधार विभिन्न कौशल विकास कार्यक्रम जैसे मधुमक्खी पालन, मत्स्य पालन, रेशम कीट पालन, मशरूम की खेती, पर्यटन और ट्राइबल से संबंधित पाठ्यक्रमों को शुरू करने एक दूसरे का सहयोग करेंगे। इस अवसर पर डॉ. हरीसिंह गौर विवि की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने कहा कि दोनों विवि ज्ञान, संस्कृति, सामाजिक सरोकार और संसाधनों के पारस्परिक विनिमय के माध्यम से प्रभावी पाठ्यक्रमों को निर्मित करने का प्रयास करेंगे।

छतरपुर, शनिवार 02 मार्च 2024

डॉक्टर हरीसिंह गौर, विश्वविद्यालय, सागर एवं हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय के मध्य हुआ अकादमिक अनुबंध

ज्ञान और संसाधनों का पारस्परिक विनिमय भविष्य कि मांग है - प्रो. नीलिमा गुप्ता

परिहार गर्जना न्यूज। सागर. डॉक्टर हरीसिंह गौर, विश्वविद्यालय, सागर एवं हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला के मध्य शैक्षिक अनुसंधान,कौशल विकास, गुणवत्ता उन्नयन, सामाजिक सरोकार से संबंधित विभिन्न विषयों को लेकर एक पूर्ण कालिक समझौता ज्ञापन

हस्ताक्षर किया गया इस अवसर पर हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय की ओर से कुलपति प्रो. सत प्रकाश बंसल, कुलसचिव प्रो. सुमन शर्मा, अधिष्ठाता विद्यार्थी कल्याण प्रो. सुनील एवं एवं हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर की कुलपति प्रोफेसर नीलिमा गुप्ता उपस्थित रहे. इस समझौता ज्ञापन के अनुसार दोनों विश्वविद्यालयो में विभिन्न शैक्षणिक विषयों में अनुसंधान,शिक्षा एवं नवाचारी परियोजनाओं को एक दूसरे के समन्वय से पूर्ण करने की बात कही गई. इसके साथ ही साथ दोनों विश्वविद्यालय अपनी भौगोलिक एवं क्षेत्रीय विविधता के आधार विभिन्न कौशल विकास कार्यक्रम जैसे मधुमक्खी पालन, मत्स्य पालन,रेशम कीट पालन, मशरूम की खेती,पर्यटन और ट्राइबल से संबंधित पाठ्यक्रमों को शुरू करने एक दूसरे का सहयोग करेंगे. इस अवसर पर डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर की कुलपति प्रोफेसर नीलिमा गुप्ता ने कहा कि दोनों विश्वविद्यालय ज्ञान, संस्कृति , सामाजिक सरोकार और संसाधनों के पारस्परिक विनिमय के माध्यम से प्रभावी पाठ्यक्रमों को निर्मित करने का प्रयास करेंगे जिससे दोनों विश्वविद्यालय के विद्यार्थी एवं हितधारक इसका भरपूर लाभ ले सकें. इसके अलावा मूल्य शिक्षा से संबंधित पाठ्यक्रम, आउटरेज कार्यक्रम,दूरस्थ शिक्षा पाठ्यक्रम आदि से संबंधित नए डिप्लोमा प्रमाण पत्र, पीजी डिप्लोमा, अल्पकालिक पाठ्यक्रम आदि विकसित किए जाएंगे. समझौता ज्ञापन की समय अवधि के दौरान शोध के परिणामों को संयुक्त रूप से पेटेंट कराया जाएगा और पेटेंट से प्राप्त परिणामों का लाभ एक- दूसरे से साझा किया जाएगा. आंतरिक, राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय एजेंसियों द्वारा वित्त पोषण के लिए विभिन्न अनुसंधान कार्यक्रमों को विकसित करने पर जोर देने की बात भी कही गई.

ज्ञान और संसाधनों का पारस्परिक विनिमय भविष्य की मांग है : प्रो. गुप्ता

डा. हरीसिंह गौर व हिमाचल प्रदेश के केंद्रीय विवि के बीच हुआ अकादमिक अनुबंध

सागर(नवदुनिया प्रतिनिधि)। डाक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर एवं हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय धर्मशाला के मध्य शैक्षिक अनुसंधान कौशल विकास, गुणवत्ता उन्नयन, सामाजिक सरोकार से संबंधित विभिन्न विषयों को लेकर एक पूर्ण कालिक समझौता ज्ञापन हस्ताक्षर किया गया।

इस समझौता ज्ञापन के अनुसार दोनों विश्वविद्यालयों में विभिन्न शैक्षणिक विषयों में अनुसंधान, शिक्षा एवं नवाचारी परियोजनाओं को एक दूसरे के समन्वय से पूर्ण करने की बात कही गई।

इसके साथ ही साथ दोनों विश्वविद्यालय अपनी भौगोलिक एवं क्षेत्रीय विविधता के आधार विभिन्न कौशल विकास कार्यक्रम जैसे मधुमक्खी पालन, मत्स्य पालन, रेशम कीट पालन, मशरूम की खेती, पर्यटन और ट्राइबल से संबंधित पाठ्यक्रमों को शुरू करने एक दूसरे का सहयोग करेंगे।

इस अवसर पर हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय की ओर से कुलपति प्रो. सत प्रकाश बंसल, कुलसचिव प्रो. सुमन शर्मा, अधिष्ठाता विद्यार्थी कल्याण प्रो. सुनील एवं एवं हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर की कुलपति प्रोफेसर नीलिमा गुप्ता उपस्थित रहे।

डाक्टर हरीसिंह गौर विवि एवं हिमाचल प्रदेश के केंद्रीय विश्वविद्यालय के मध्य अकादमिक अनुबंध करते हुए कुलपति। • नवदुनिया

प्रभावी पाठ्यक्रमों को निर्मित करने का प्रयास करेंगे

इस अवसर पर कुलपति प्रोफेसर नीलिमा गुप्ता ने कहा कि दोनों विवि ज्ञान, संस्कृति, सामाजिक सरोकार और संसाधनों के पारस्परिक विनिमय के माध्यम से प्रभावी पाठ्यक्रमों को निर्मित करने का प्रयास करेंगे।

जिससे दोनों विश्वविद्यालय के विद्यार्थी एवं हितधारक इसका भरपूर लाभ ले सकें। इसके अलावा मूल्य शिक्षा से संबंधित पाठ्यक्रम, आउटरेज कार्यक्रम दूरस्थ शिक्षा पाठ्यक्रम आदि से संबंधित नए डिप्लोमा प्रमाण पत्र, पीजी डिप्लोमा, अल्पकालिक पाठ्यक्रम आदि विकसित किए जाएंगे। समझौता ज्ञापन की समय अवधि के दौरान शोध के परिणामों को संयुक्त रूप से पेटेंट कराया जाएगा और पेटेंट से प्राप्त परिणामों का लाभ एक-दूसरे से साझा किया जाएगा।

आंतरिक, राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय एजेंसियों द्वारा वित्त पोषण के लिए विभिन्न अनुसंधान कार्यक्रमों को विकसित करने पर जोर देने की बात भी कही गई।

SagarUniversity DoctorGour Doctor Harisingh Gour Vishwavidyalaya,Sagar

संकलन, चयन एवं संपादन

कार्यालय, जनसंपर्क अधिकारी

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)

Email- mediaofficer@dhsgsu.edu.in Website- www.dhsgsu.edu.in